# *Dialogue with Divinity*

## *Ram Naam Chitta Sadhana-3*

## *राम नाम चित साधना-3*

***Inspirations from Teachings of Swamiji Satyanandji Maharaj (1868-1960)***

***स्वामीजी सत्यानन्दजी महाराज***

***की शिक्षाओं पर आधारित***

***(1868-1960)***

***Dr.Gautam Chatterjee***

***Series Editor: Sunita Ganjoo***

***Translation: Anupama Mahajan***

***DEDICATED TO***

***Param Guru Ram***
***Sat Guru Swamiji Satyanandji Maharaj Shree***
***Param Pujya Premji Maharaj Shree***
***Maharishi Swami Dr Vishwa Mitterji Maharaj Shree***

***समर्पित***

***परम गुरू राम***
***सद्गुरू स्वामी सत्यानन्दजी महाराजश्री***
***परम पूज्य प्रेमजी महाराजश्री***
***महर्षि स्वामी डॉ विश्वामित्र जी महाराजश्री***

## *SHREE ARADHYA RAAM*

*Let our mind smear in Ram Naam*
*Ram is our Aradhanana*
*Ram is our Sadhana*
*RAM is our Aradhya*
*RAM is our Siddhi.*
*Ram is Netarine flow*
*Which emits out of Jaap Sadhana.*
*Raam with its eternal shakti*
*resides in naam dharan*
*which is sublime emotions*
*felt as juice in the atman bodh*
*And realized through jeevatman*
*As nectarine Raam acts upon us*
*And we manifest in Ram Sadhana*
*As auto elevation*
*Such is bliss and blessings*
*Of Aradhya Raam and resultant of*
*SHREE NAAM JAAP.*
*O my Raaaaaaaaaaaaaaaauuum.*

## *श्री आराध्य राम*

*कृपया हमारा मन राम नाम*

*से ओत प्रोत हो*

*राम हमारी आराधना है*

*राम हमारी साधना है*

*राम हमारे आराध्य हैं*

*राम हमारी सिद्धी ।*

*राम मधुरमयी बहाव है*

*जो जाप साधना से विस्तृत होता है ।*

*राम अपनी दिव्य शक्ति के संग*

*राम धारणा में विराजमान हैं*

*जो आत्म बोध में उदात्त भावनाओं*

*के रस के रूप में महसूस होते हैं*

*और जीवात्मा द्वारा अनुभव किए*

*जाते है*

*जैसे मधुमय राम हम पर कार्य करते हैं*

*और हममें राम साधना की अभिव्यक्ति*

*स्वयमेव उत्थान से होती है*

*ऐसा आनन्द व आशीर्वाद*

*आराध्य राम व श्री राम नाम जाप*

*फलस्वरूप प्राप्त होता है ।*

*ओ मेरे राम!*

*****

## *Glory of Ram Naam*

*Shree Shree Swamiji Satyanandji Maharaj ji Shree gave us maha mantra Ram Naam, taught us its divine attributes. At beneath thy feet, we your children of Ram Naam Sadhana, try to relearn Mahima gatha of Ram Naam. HEY PARAM Guru, Hey Guruvareshu please come and allow the enlightenment THROUGH Ram Naam Avataran for blissful understanding anew and afresh---GLORY OF RAM NAAM RAAAAAUUUM.*

## राम नाम की महीमा

श्री श्री स्वामी जी सत्यानंद जी महाराज श्री ने हमें राम नाम का महामंत्र दिया, और उनके दिव्य गुण सिखाए ।आपश्री के श्री चरणों में बैठ कर , हम राम नाम साधना के बच्चे , फिर से राम नाम की महिमा की गाथा सीखने का प्रयत्न करेंगे ।हे परम गुरू, हे गुरूवारेशु, कृपया आइए और राम नाम अवतरण द्वारा प्रबुद्धता प्रदान कीजिए ताकि हम नए ढंग से व फिर से राम नाम की महिमा समझ सकें ।

***

### *NIRAKAR ANAM (NAMELESS)*

*Nirakar Anaam*
*Has sublime name Raaaaaauuuum.*
*This Name Mangalik Mantrik Shakti*
*At uppermost crust of Eternity*
*This Sacred Name Resides.*
*Raam Naam houses most pious attributes*
*Of eternal sacredness*
*That governs all that benefic*
*For brahmand or Cosomos of multigalaxy*
*Raam Naam is maha shakti*
*For all immortal who acts on*
*Divine chord of Naad Brahman.*
*That manifests into Raam Dhaam*
*At the mortal level Ram Raam*
*Which crosses the mind of Naam Sadhak*
*As simran and jaap begets mukti*
*From mayamaye Bhavsagar*
*We human dwell.*
*Such is the Glory of Naad Shree Raam*
*WhoSE appearance in our mind*
*Make us disillusuioned*
*And we all float unto your lotus feet*
*O my Raaaaaaaaaaaaaauuuuum.*

# *निकराकार अनाम*

*निकराकार अनाम*

*का दिव्य नाम राम है।*

*यह पावन नाम , माँगलिक मांत्रिक शक्ति है*

*जो शाश्वत्ता के सबसे ऊपरी तह*

*पर विराजमान होते हैं ।*

*राम नाम सभी शाश्वत दिव्य*

*पावन गुणों की खान हैं*

*जो सभी लाभकारी सता की सरकार है।*

*राम नाम सर्व ब्रह्माण्ड के अनश्वरता की महाशक्ति हैं*

*जो नाद ब्रह्म की तार पर कार्य करते हैं ।*

*यह सब राम धाम के रूप में प्रत्यक्ष होते हैं।*

*नश्वर स्तर पर ,नाम साधक के मन से*

*जब सिमरन व जाप के रूप में राम राम गुज़रता है*

*तो वह मायामयी भवसागर जहाँ हम मानव बसते हैं*

*उससे से मुक्ति प्राप्त करता है ।*

*ऐसी महिमा है*

*नाद श्री राम की जो*

*हमारे मन में दर्शन देते हैं*

*हमारा मोहभंग करके*

*हम आपके श्री चरणकमलों में आनंद*

*विभोर हो जाते हैं ।*

*ओ मेरे राम*

*****

*Aatmiya Pranam Hey Maha Guru Guru Nanank Devji Param Maharaj Shree for lighting up eternal enlightment of Glory of Naam and provinding Naam Sadhna through Jaapji Sahib. GURU NANAKDEVJI YOU ALWAYS REMAIN AN ETERNAL LIGHT FOR MAKING LIFE PIOUS AND REALIZING ONE ESHTA..EK OMKAR AS ROUTE FOR SURE AND PIOUS SALVATION. KOTI KOTI PRANAM HEY MAHA GURU GURU NANANK DEV JI MAHARAJ JI. AAPKE CHARNO MEY RAKHNA HAMEY HEY PRABHU.*

हे महा गुरू, गुरू नानक देवजी परम महाराज श्री, आपका राम नाम की महिमा व नाम साधना जपुजी साहिब द्वारा शाश्वत प्रबुद्धता का प्रकाश प्रदान करने लिए ,आत्मीय प्रणाम। *गुरू नानक देवजी जीवन को पावन बनाने के लिए व एक इष्ठ .... एक ओंकार की अनुभूति प्रदान करने के लिए... तथा पवित्र मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करने के लिए आपजी सदा ही एक दिव्य प्रकाश रहेंगे ... कोटि कोटि प्रणाम हे महागुरू, गुरू नानक देव जी महाराज जी । आपने श्री चरणों में रखना हे प्रभु*

*****

## *Empower my Bhav O My Raaaaum.*

*Hey Ram*
*You are Bhava Samudra*
*O Raam*
*You are Naad Samudra*
*At your feet we do*
*Charanbandana O my Raaum.*
*Give us Naad Bhaava Pavitrata*

*Hey Shree Naad, Shree Raam.*
*Give us ultimate Nishtha, Nischay*
*O my Raam*
*Give us focussed confidence*
*Dhyan, dharana and Vishwas*
*In your purest Naaam... Hey Raaaum.*
*Naam Aaradhnaa*
*Swamiji Maharaj Shree gave us*
*To purify the self....body, mind and soul.*
*O Raam My Loving Raam*
*Give your Raam Bhava in all*
*So that we Pray to all for all*
*With your mangalik Naam hey Prabhu.*
*Hey Naad shree purify us*
*So thst we imbibe your bhava*
*And heal and pray for all.*
*You are mangalik mantra*
*O my Param Eahta Raaaauuuuuuum.*

## ***ओ राम मेरे भाव को सशक्त कीजिए***

*हे राम आप भाव समुद्र हैं*

*ओ राम आप नाद समुद्र हैं*

*आपके श्री चरणों में हम*

*चरणवंदना करते हैं ओ राम ।*

*हमें नाद भाव की पवित्रता दीजिए*

*हे श्री नाद , श्री राम ।*

*हमें उच्चतम निष्ठा, निश्चय दीजिए*

*ओ मेरे राम*

*हमें केंद्रित आत्मविश्वास अपने पवित्र नाम*

*में ध्यान, धारणा और विश्वास दीजिए ।... हे राम*

*स्वामी जी महाराज श्री ने नाम आराधना हमें दी*

*ताकि हम स्वयं के.... शरीर, मन व आत्मा*

*को पवित्र कर सकें ।*

*ओ राम मेरे प्यारे राम*

*अपना राम भाव सबको दीजिए*

*ताकि आपश्री के माँगलिक नाम से हे प्रभु*

*हम सबको व सब के लिए प्रार्थना कर सकें ।*

*हे नाद श्री हमें पवित्र कीजिए*

*ताकि हम आपके भाव को अपनाएँ*

*और सबको नीरोग्य बनाएँ व सबके लिए प्रार्थना करें ।*

*आप माँगलिक मंत्र हैं*

*ओ मेरे परम इष्ट*

*राम*

*****

## *Enlighten me O my Raaum*

*O Lord of all Lords*
*O my param loving Raam*
*Open our eternal eyes*
*So that we read your divine dictates*
*O my Raaum.*
*Beyond Maya, beyond Lila*
*you only can transport us*

*O Raaaum.*
*Show us the paath of aradhana*
*Where self becomes innocent*
*And we do Naam aradhana*
*With pure mind, body and spirit.*
*You are the ultimate purifier*
*O my loving Raaum.*
*Fill me with Daya Bhava*
*And make me most compassionate*
*Because you are param dayalu*
*O my Raam*
*Do give Bhava sannidhya O my Raam*
*Give me your bhava so that*
*We love all O my Raaaum.*
*You are Mangalik Shakti O my Raam*
*You are doer of all good and*
*Salvage all who take refuge in you*
*O Raaaum.*
*Give us Subuddhi, Subhava, Su samskar,*
*So that we do Ram Naam Aradhana*
*As sadhana extreme*
*As your loving bhava is our Siddhi*
*Which we promise to distribute to all*
*As becoming you*
*As I , me, Mine are nothing now*
*It is Raaaam in me and Ram in Thine.*
*O my Ram give us sadhaya*
*Or capacity to embrace your prem bhava*
*O my Raaaaaaaaaaauuuuuuum.*

## ***ओ मेरे राम मुझे प्रबुद्धता प्रदान करें***

*हे परमपुरुष परमेश्वर*

*ओ मेरे परम सुहृद राम*

*हमारे दिव्य नेत्र खोल दीजिए*

*ताकि हम आपके दिव्य आदेश पढ़ सकें*

*ओ मेरे राम ।*

*आप ही माया व लीला के पार*

*हमें लेकर जा सकते हैं*

*ओ राम ।*

*हमें आराधना का मार्ग दिखाइए*

*जहाँ हम सरल बन जाते हैं*

*और हम नाम आराधना*

*पवित्र मन, शरीर व आत्मा से करें ।*

*आप ही उच्चतम शोधक हैं*

*ओ मेरे प्यारे राम।*

*मुझ में कृपया दया भाव भर दीजिए*

*मुझे अति करूणावान बना दीजिए*

*क्योंकि आप तो परम दयालु हैं*

*ओ मेरे राम*

*मुझे कृपया भाव सानिद्धय दीजिए*

*ताकि हम सब आपसे प्रेम कर सकें।*

*आप माँगलिक शक्ति हो मेरे राम*

*आप ही सब अच्छे कार्य के कर्ता हैं*

*और आप उनकी रक्षा करते हैं जो*

*आपकी शरण लेता है ओ राम*

*हमें सुबुद्धि , सुभाव , सुसंस्कार दीजिए*

*ताकि हम राम नाम आराधना*

*गहन साधना के रूप में कर सकें*

*क्योंकि आप श्री का प्रेम भाव ही हमारी सिद्धी है*

*जो हम सबसे बाँटने की प्रतिज्ञा करते हैं*

*क्योंकि आप बन जाने से*

*मैं, मुझे और मेरा अब कुछ भी नहीं है*

*अब केवल राम ही मुझ में है और राम ही तुझमें ।*

*हे राम कृपया हमें साध्य दीजिए*

*कि हम आपश्री के प्रेम भाव*

*को आलिंगन कर सकें।*

*ओ मेरे राम*

***

## *My Prayer O My Raaaaum*

*Hey Nirakar Jyoti Swarup*
*Brahma Naad Shree Ram*
*I bow to you billion times*
*We all Ram Naam Sadhak*
*Do Charan vandana O my Raaum.*
*At your feet*
*With your charanamrit of*

*Naad*
*We become pious*
*Though we know we are adham or worst*
*O my Raam.*
*At your feet we get purified*
*O my loving Raaaaum.*
*Accept my Charan vandana*
*Hey Maha Prabhu Raam.*
*Your Naam is Tarak Mantra*
*And the eternal purifier Naad.*
*O my Loving Raaaum.*
*You are Param Purush*
*Most potent and eternally most powerful*
*Yet you are ocean of mercy*
*Hey Param Dayalu Raam*
*Accept our prayer*
*And allow us your*
*Param Raaam Naam Aradhana*
*O my loving Raaaaaaauuuum*
*Swekaro Naad pushpanjali*
*Hey Param Guru Raaaaaaauuuuuum.*

## ***मेरी प्रार्थना ओ मेरे राम***

*हे निराकार ज्योति स्वरूप*

*ब्रह्म नाद श्री राम*

*मैं आपको ख़रबों बार नमन करता हूँ*

*हम सब राम नाम साधक*

*चरणवंदना करते हैं ओ मेरे राम।*

*आपश्री के चरणकमलों में*

*आपश्री के नाद के चरणामृत से*

*हम पवित्र बनते हैं*

*जबकि हमें पता है कि हम अधम व गिरे हुए हैं*

*ओ मेरे राम।*

*मेरी चरणवंदना कृपया स्वीकार कीजिएगा*

*हे महाप्रभु राम ।*

*आपश्री का नाम तारक मंत्र है*

*और दिव्य शोधक नाद !ओ मेरे प्यारे राम।*

*आप परम पुरूष हैं*

*सबसे प्रबल व सर्वशक्तिमान हैं*

*फिर भी आप दया के सागर हैं*

*हे परम दयालु राम*

*कृपया हमारी प्रार्थना स्वीकार कीजिए*

*और हमें परम राम नाम आराधना*

*करने की अनुमति दीजिए*

*ओ मेरे प्यारे राम*

*कृपया नाद पुष्पांजलि स्वीकारिये*

*हे परम गुरू*

*****

## *MAA MY ATMANAJALI*

*Hey Maa you are the creator*
*Of all the creations*
*You are Immortal Jananni O maa*
*You are Jananni of all Devata*
*Devlokok and devpal.*
*And all that is immortal and divine*
*You mothered them.*
*Your Matri maya and Matrichaya*
*For all that is ongoing*
*You create and uncreate*
*But you are ati dayalu Maa*
*O My Maa.*
*Your tears make me repent*
*Your smile is paramananda for me.*
*Your anger makes me shiver*
*But am your Son*
*U love to scold me*
*O Maa Janani.*
*You are all knowledge of all universal wisdom.*
*You are siddhi of all sadhana Hey Maa.*
*You are pran shakti of this body*
*You spin all the atman*
*Through many births and life.*
*You are eternal justice Hey Maa.*
*Pardon me Hey maa*
*For all my abberations and folly*
*Elevate my sadhya, sadhana and siddhi*
*With your suddhikarn mantra*
*Hey maa.*
*At your feet*
*I do atman pushpanjali Hey Maa.*
*I seek blessing of subuddhi*
*Suacharan for atman sudhhi*
*O maa.*
*I am going to invoke Raam Hey Maa*

*Give me power to feel the*
*Sarvashaktiman Shree Raaaum*
*In my body entity*
*O my Maa*
*I wish nothing but pure aradhana*
*O maa.*
*I wish to pray for your creations*
*O my Maa*
*Make me Ramamaye*
*For becoming His Puspanjali O my Maa*
*Placing my atman at your feet O Maa*
*You are my aradhya, aradhana, param eshta Janani O Maa.*

## *माँ मेरी आत्मांजली*

*हे माँ आप सभी रचनाओं की*

*रचियता हैं*

*आप अनश्वर जननी हैं माँ*

*आप सभी देवताओं , देवलोक व देवपाल*

*की जननी हैं*

*जो भी अनश्वर है व दिव्य है*

*आपका मातृत्व उनपर छलकता है ।*

*आपकी मैत्रेय माया और मैत्रेयछाया*

*जो कुछ भी चल रहा है , उसकी*

*आप रचना करती हैं व ध्वसं करती हैं*

*पर आप अति दयालु हैं माँ*

*ओ मेरी माँ*

*आपश्री के अश्रु मुझे पश्चाताप कराते हैं*

*आपश्री की मुस्कान मेरे लिए परमानन्द है*

*आपश्री का क्रोध मुझे कँपा देता है*

*पर मैं तुम्हारा पुत्र हूं*

*आप मुझे डाँटना पसंद करती हैं।*

*आप सार्वभौमिक ज्ञान की ज्ञाता हैं*

*आप सर्व साधना की सिद्धी हैं*

*आप इस शरीर की प्राण शक्ति हैं*

*आप ही सभी आत्माओं को*

*जन्म मरण के चक्कर में ले जाती हैं*

*आप ही अनंत न्याय हैं ओ माँ*

*मुझे मेरी सभी ग़लतियों व अपराधों के लिए*

*क्षमा कीजिए हे माँ*

*अपने शुद्धीकरण मंत्र से*

*मेरे साध्य, साधना व सिद्धी का कृपया उत्थान कीजिए*

*हे माँ*

*मैं आत्मिक पुष्पांजलि अर्पण करता हूँ*

*मैं आपसे सुबुद्धी व सुआचरण*

*की कृपा याचना करता हूँ*

*ओ माँ*

*हे माँ मैं राम का आह्वान करने लगा हूँ*

*मुझे शक्ति दीजिए कि मैं*

*सर्वशक्तिमान श्री राम को अपने*

*शरीर तत्व में महसूस कर सकूँ*

*ओ माँ*

*मैं पावन आराधना के इलावा कुछ नहीं चाहता*

*ओ माँ*

*मैं केवल आपकी रचनाओं के लिए प्रार्थना करना चाहता हूँ*

*ओ माँ*

*कृपया मुझे राममय बना दीजिए*

*ताकि परमेश्वर की पुष्पांजलि बन सकूँ*

*ओ मेरी माँ*

*मैं अपना आत्मा आपश्री के श्री चरणों में रखता हूँ ओ माँ*

*आप मेरी आराध्य, आराधना , परम इष्ट जननी हैं ओ माँ*

*****

*Bhakti Maga is all about Trust, Shraddha and Vishwas about Eshta or Lord. JIANA OR GYANA marga is all about Trust, Shraddha and Vishwas about Supreme Knowledge. SO both Margas meet at KARMA MARGA as here TRUST, SHRADDHA AND VISHWAS are practiced and*

*implemented. RAM Naam Sadhana is three in one. Such loving is our Ram. Beget Him any way you wish.*

भक्ति मार्ग परमेश्वर के प्रति भरोसा,श्रद्धा, और विश्वास को कहते हैं । ज्ञान मार्ग परम ज्ञान के प्रति भरोसा,श्रद्धा, और विश्वास के बारे में है। दोनों मार्ग कर्म मार्ग में समागम करते हैं क्योंकि यहाँ भरोसा,श्रद्धा, और विश्वास का अभ्यास व इन्हें अपनाया जाता है । राम नाम साधना तीन में एक है । ऐसे प्यारे हैं हमारे राम । किसी भी तरह उन्हें पाओ ।

***

*Discover a THINKER in YOU. Proximity with God can be measured then.*

अपने भीतर के विचारक को खोजिए । परमेश्वर के साथ समीपता फिर मापिएगा ...!

***

*Life is LESS about LEARNING and MORE about UNLEARNING. Because so much wrong we know as truth; so much incorrect is our logic systems and PERCEPTIONS; so redundant is our mind sets, better it would be IF we erase our biases--- be it gender bias or racial concepts or castist mindsets, ego of affluence or forcefully becoming judgemental about others. SO YOU SEE SO MUCH IS THERE TO BE UNLEARNED!*

ज़िंदगी सीखने के लिए कम अपितु त्यागने के लिए अधिक है । हम कितना कुछ असत्य को सत्य मानते हैं ; हमारे तर्क प्रणाली व अनुभूति में कितना ही ग़लत है; हमारी मानस सोच इतनी निर्रथक है , अच्छा हो यदि हम अपने पक्षपात मिटा सकें - चाहे वे लिंग सम्बंधित / राम समंबंधित या जाति सम्बंधित पक्षपात हों , समृद्धि के अहंकार या दूसरों के प्रति ज़बरदस्ती के अनुमान लगाते हों । इसलिए आप देखिए कि आपको कितना सीखा हुआ त्यागना है ।

***

*Jo seekha agar jeevan mey na utara to kya kiya. Listen to all divine stories not for temporal satisfactions or khushi. The moral of the story be part of our life and living otherwise its a SPIRITUAL WASTE.*

जो सीखा अगर जीवन में न उतारा तो क्या किया । सभी दिव्य कहानियों को ऊपरी संतुष्टि व ख़ुशी के लिए केवल नहीं सुनिए । कहानी की सीख यह होनी चाहिए कि वह कहानी हमारे जीवन में उतरनी चाहिए नहीं तो वह आध्यात्मिक व्यय है ।

***

## *What is Guru Kripa?*

*Guru is Anubhut or Realized soul who have had eternal Shakshatkar with Param Guru Raaum. He is 'ansha' of Param Guru.Through intense Taapasya they have done or achieved Siddhi and through that divine empowerment they clean Sadhaks inner space and enliven atman bodh. He takes away paap and wrong doings. He punishes us at times to mend. We are able to do Ram Naam Upasana and devote a pious life and live to pray and serve others. This is Guru Kripa.*

*Next time you see scripted "Guru Kripa" behind a car. Just smile! Keep proximity with Guru no matter it is rainy day or days of tears, pain and sufferings. Because it is Guru Kripa that will surely rescue you. Gurutattwa and Guru Kripa are around you subtly all the time. This is GURU KRIPA!*

## गुरू कृपा क्या है ?

गुरू एक प्रबुद्ध आत्मा हैं जिनका परम गुरू श्री राम से दिव्य साक्षात्कार हो चुका होता है ।वे परम गुरू के अंश होते हैं ।गहन तपस्या करके व सिद्धियों को पाकर वे दिव्यता से सशक्त होकर साधक के अंतःकरण का शुद्धीकरण करके आत्मबोध को जागृत करते हैं । वे साधक के पाप व कुकृत्य लेलेते हैं ।वे कई बार प्रताड़ते भी हैं ताकि हम सुधर सकें ।हम राम नाम उपासना करते हैं, पावन जीवन जीते हैं और दूसरों की प्रार्थना व सेवा में अपना जीवन लगाते हैं..... यही गुरू कृपा है ।

अगली बार किसी गाड़ी के पीछे "गुरू कृपा" लिखा हुआ देखो तो मुस्कुराइएगा ! गुरू के सदा संग रहिए चाहे कष्टकारक दिन हैं या अश्रु भरे व संकटों से परिपूर्ण दिन । क्योंकि गुरूकृपा आपकी सदा सहायक होगी व रक्षा करेगी ।गुरूतत्व व गुरूकृपा सूक्ष्म रूप से सदा आपके अंग संग होते हैं। यही है गुरू कृपा

***

## *What is RAM KRIPA?*

*GURU'S BLESSINGS leads to a realization that Raam "Anga Sanga" or He is around in whatever be our endeavour!*

*Never mistake that when some goodie happens then its Ram Kripa otherwise its not!*

*Ram in our thought, action, deed and vac are the state of Ram Kripa!*

## राम कृपा क्या है?

गुरू की कृपा से यह अनुभव होता है कि राम अंग संग हैं या वे सदा संग हैं चाहे हम कैसे भी प्रयास करें।
ग़लती से कभी यह नहीं सोचना कि कुछ अच्छा घटित हुआ है तो वह राम कृपा है , अन्यथा नहीं !

राम हमारे विचारों में, कर्मों में , कृत्यों व वचनों में जब हों तो वही राम कृपा है !

*****

## *My Raaaum is Hope as Dawn*

*Within the depth of night*
*Hungry bird awaits for the dawn*
*Viraha looms large as loneliness*
*Smear the mind.*
*Tamas haunts*
*As ram bhakta hates it by now!*
*Break of dawn*
*The Brahma mhurtam*
*The light of sattvik sublimity*
*Light up the world*
*As petals of flower opens up with grace*
*Bees and butterflies hovers over*
*Birds spread wings*
*To search the food to feed*
*Ram bhakta searches for food*
*Atman needs its appetizer*

*Raaam dhun veil upon viraha*
*As enlightened self encounters Raam*
*The dynamic Raaam*
*Flowing beneath the surface*
*Of light and shades*
*In Naad shrot and sound waves of*
*Raaaaaaaaaaaaaaauuuuuum.*

## मेरे राम भोर की आशा हैं

*रात्रि की गहराइयों में*

*एक भूखा पक्षी भोर होने का इंतज़ार करता है*

*मन में अकेलेपन के कारण*

*गहन विरह छाया हुआ ।*

*तमस मँडराता है*

*जिसे राम भक्त घृणा करता है!*

*भोर के आगमन पर*

*ब्रह्ममहूर्त में*

*सात्विक दिव्यता का प्रकाश*

*संसार को प्रकाशित करता है*

*फूलों की पंखुड़ियाँ लावण्य भाव से खुलती हैं*

*उनपर भँवरे और तितलियाँ मँडराते हैं*

*पंछी अपने पंख फैलाकर*

*निकल पड़ते हैं भोजन की खोज में*

*राम भक्त भी भोजन ढूँढता है*

*अपनी आत्मा की भूख मिटाने के लिए*

*राम धुन विरह पर आवरण चढ़ा देती है*

*जैसे ही प्रबुद्ध आत्मा का राम से सामना होता है*

*राम की गतिशीलता*

*नाद के प्रकाश व विभिन्न रंगों के नीचे*

*बहती है।*

*****

### *Prakriti is My Raaaaaaum*

*O my Raaaaaaaum*
*You are creation and you are creator.*
*He is Tranquility of nature*
*He is the icon of eternal peace*
*He mirrors in Sky, Stream and bhumi.*
*He is colur of natures' harmony*
*Even fury where Shree Naad refracts.*
*He is the beauty of forest*
*He is the flower and foliage*
*Raaum is sublime nature.*

## *मेरे राम प्रकृति हैं*

*ओ मेरे राम*

*आप रचना हैं और रचयिता भी*

*आप प्रकृति की शांति हैं*

*आप श्री दिव्य शांति की मूर्ति हैं*

*जो आकाश, झरनों व भूमि में प्रतिबिम्बित होते हैं*

*वे प्रकृति के सौंदर्य के विभिन्न रंग हैं*

*रोष भी जहाँ श्री नाद अपना रुख़ बदल*

*लेते हैं*

*वे जंगलात का भी सौंदर्य हैं*

*वे फूल व पतियां हैं*

*राम ही दिव्य प्रकृति हैं।*

***

### *Divinity of Raaaaum.*

*Divinity is fathomed*
*In five elements*
*Your eyes are eternal*
*Now look at the beauty of world*
*And find Raam there everywhere.*
*Make your eyes inward looking or*
*Anarmukhi mode*
*Then I look all creations*
*As if Creator supreme is*
*Viewing the eternal beauty.*
*In the most beautiful creation*
*Find Shree Raam is placed*
*Then lobh or lure will turn into love for bhakti*
*O my Raaaaaauuuum.*
*The world is mesmerised*

*In colour, form and beauty*
*And "bhog bilash" splash across*
*And people become its prey.*
*But when our eyes look at all*
*With Raama bhava*
*Then psychical distance is formed*
*The enjoyment then turned from*
*Devil to divinely aesthetic*
*Searching all creation*
*From His perspective*
*Is finding the creator, the artists in Art*
*And aesthetics.*
*Eyes then follow the minutest creation*
*Of divine.*
*This is the sublime elevation*
*Of Raam Bhava Drishtikon.*
*The beauty of the nature*
*Swinging river and its banks*
*The sublime water*
*Becomes waves of divinity when*
*Air or breathe of Ram acts upon it.*
*The jyoti of light*
*Kisses the sky*
*As if nature is playing Raas Lila*
*Flower adds to divine enbrace*
*Within this inter play of nature*
*Mind merges with Ram Bhava*
*As He is Shristi He is Drashta*
*HE Sees and He enacts lila*
*In this Nature Raam Bhava is realized*
*As the whole creation is Raaaaam*
*Anubhav, anubhuti*
*All are realization of*
*Rama consciousness*
*Dwelling in the beauty of nature*
*Raaam is loving unification of Purusha and Prakriti*
*O my Raaaaaaaaaaaaaaaaaauuum.*
*The spiritual vision of beauty*
*Is sadhana itself.*
*Naam sadhana Bhav Sadhana*
*Is appreciating and internalizing*
*Supreme creator Raaaaaaaaaam.*

## *राम की दिव्यता*

*दिव्यता की गहराई*

*पाँच तत्वों में मापी जा सकती है*

*आपके नेत्र दिव्य हैं*

*अब देखिए संसार की सुंदरता*

*और राम को ही हर जगह पाइए।*

*अपने नेत्रों को अंतरमुखी कीजिए*

*तब मैं ब्रह्माण्ड की रचनाओं को ऐसे देखता हूँ*

*जैसे कि पूर्ण पुरूष रचियता दिव्य सौंदर्य*

*को देख रहे हों*

*सृष्टि की सबसे सुंदर रचना में*

*ढूँढिए जहाँ राम विराजमान हैं*

*तब लोभ व लालसाएँ भक्ति प्रेम में*

*रूपान्तरित हो जाएँगी*

*ओ मेरे राम*

*ये सृष्टि मंत्रमुग्ध है*

*रंग, रूप और सौंदर्य में*

*भोग विलास छलकते हैं*

*और लोग उसके शिकार बन जाते हैं।*

*पर जब हमारे नेत्र सब को*

*राम भाव से देखते हैं*

*तब एक मानसिक मार्ग प्रशस्त होता है*

*और भोग तब आसुरी से दिव्य*

*सौंदर्यात्मक बन जाता है*

*परमेश्वर की दृष्टि से सर्व रचना*

*को खोजना*

*रचियता को खोजने के समान है*

*जैसे चित्रकार को चित्र में और सौंदर्य में खोजते हैं ।*

*आँखें फिर सूक्ष्मतर परमेश्वर की रचनाओं को देखती हैं*

*यह राम भाव दृष्टिकोण का*

*दिव्य उत्थान होता है।*

*सृष्टि का सौंदर्य*

*नदि का लहलहाके बहना*

*और जब राम के स्वाँस उस पर पड़ते है*

*तब उसके किनारों पर दिव्य जल,*

*दिव्यता की लहरें बन जाती है ।*

*प्रकाश की ज्योति*

*आकाश को चुम्बन देती हुई*

*जैसे कि सृष्टि रास लीला खेल रही हो*

*फूल दिव्य आलिंगन करते हुए*

*सृष्टि के आपस में क्रीड़ा करने के बीच*

*मन राम भाव में विलीन हो जाता है*

*क्योंकि परमेश्वर ही सृष्टि हैं और वे ही द्रष्टा*

*वे ही देखते हैं और लीला रचते हैं*

*इस सृष्टि में राम भाव का अनुभव होता है*

*क्योंकि सम्पूर्ण रचना ही राम हैं*

*अनुभव, अनुभूति*

*सब राम चेतना की प्रबुद्धता हैं*

*जो सृष्टि के सौंदर्य में ओत प्रोत हैं*

*राम पुरूष व प्रकृति के प्रेममय ऐक्य हैं।*

*ओ मेरे राम*

*सौंदर्य की अध्यात्मिक दृष्टि ही स्वयं साधना है।*

*नाम साधना, भाव साधना परम रचियता राम*

*के गुण गान करना व आंतरिक जाना ही है।*

***

## *Eternal Truth is Raaaaum*

*Ram Naam is absolute truth*
*That Guru Tattwa utters*
*As naam vachan is cosmic commandments*
*That is nectarine reality*
*Which echoes around.*
*In the supreme prem bhava*
*Shree Ram Resides as bhakti*
*He keeps His proximity with you*
*In his innovence and truthful vac*
*As in truth only in truth*
*My loving Raam resides.*
*Find your divya innocence within*
*Discover your loving Sakha in you only*
*Ram vac is staya vachan*
*Where Ram rides and resides.*
*Raaaaaaauuuum*

## *शाश्वत सत्य राम ही हैं*

*राम नाम परम सत्य है*

*जो गुरूतत्व उच्चारते हैं*

*नाम वचन ब्रह्माण्डीय उपदेश हैं*

*यही मधुमेह वास्तविकता है*

*जो हर तरफ़ गूँजती है ।*

*पूर्ण प्रेम भाव में श्री राम*

*भक्ति के रूप में विराजमान होते हैं*

*अपने सरल व सत्य वचनों में*

*वे आपके समीप होते हैं*

*क्योंकि सत्य व केवल सत्य में ही*

*मेरे प्यारे राम रहते हैं ।*

*अपनी दिव्य सरलता को*

*भीतर खोजिए*

*अपने प्यारे सखा को अपने में ही पाइए*

*राम वचन ही सत्य वचन हैं*

*यहीं राम चलते व विराजमान रहते हैं*

*राम*

*****

## *Lotus Feet of Shree Raaaaum*

*Lotus Feet of Shree Raam*
*The pious most entity of Shree bhava*
*That pious people follow....*

*Shree Swamiji Maharaj Shree told us*

*In Shree Ram Durbar*
*One should choose an obscure corner*
*Though amidst all the sadhaks*
*Keeping Raaam inside*
*Having controlled mind*
*And with Maun bhava within*
*It spells out silence.*
*Touch of Shree Raam*
*Comes from drishti*

*Looking at*
*Shree Shree Adhistanji*
*Then Ram dhun cleanses*
*the body and mind*
*Which brings oneness and Unification*
*With Raaaaauuum.*

## ***श्री राम के चरण कमल***

*श्री भाव की सबसे पावन सत्ता*

*जो पवित्र लोग अनुसरण करते हैं*

*आपश्री के चरणकमल*

*फूलों का गुलदस्ता है*

*जिसकी दिव्य महक है*

*आपश्री की चरणों की धूलि तो चंदन समान है*

*जो हमें स्मरण कराते हैं कि यह कोई*

*साधारण चरणकमल नहीं*

*अपितु दिव्य चरण मेरे राम के हैं*

*जो कि ब्रह्माण्ड में*

*ऐसा वातावरण बुनते हैं*

*कि मेरे सन्दिग्ध स्नेहाशीश राम से*

*अति पावन भाव निकलते हैं*

*श्री स्वामी जी महाराज श्री ने हमें बताया कि*

*राम दरबार में*

*एक अव्यक्त कोना ले लें*

*सभी साधकों के बीच*

*राम को अंदर स्थापित किए हुए*

*मन पर नियंत्रण किए हुए*

*अंतर में मौन भाव रखे*

*वह शांति प्रदान करता है ।*

*श्री राम का स्पर्श*

*श्री अधिष्ठान जी को निहारने से होता है*

*और राम धुन मन व शरीर को पावन कर देती है*

*जो कि राम के साथ*

*एक्य व मेल ले कर आता है ।*

****

*Ram Naam Consciousness as I understand is not to become Encycopeadic dictionary of whole cosmos but being able to CONNECT the UNIVERSAL WISDOM whenever required. It's possible with RAM NAAM SADHANA.*

राम नाम चेतना जिस तरह मुझे समझ आती है,पूर्ण ब्रह्माण्ड की एक विश्वकोश का शब्दकोष बनना नहीं है अपितु जब भी ज़रूरत हो उस सार्वभौमिक ज्ञान से जुड़ जाना है। यह राम नाम साधना से समंभव है।

*****

*Nothing is MINE*
*Even not ME!*

*I am no pessimist*
*I am trying to win over my EGO!*
*Because I am HIS*
*What I do for HIM.*
*I will be one handful of ash*
*But forever HE will be.*
*All is Thy and Thine*
*Nothing is Mine!*
*MY RAAAAAAAAUUUM*
*Is absolute truth.*

*मेरा कुछ भी नहीं है*

*मैं भी नहीं*

*मेरी नकारात्मक सोच नहीं है*

*मैं केवल अपने अहं पर विजय*

*प्राप्त करना चाह रहा हूँ*

*क्योंकि मैं उसका हूँ*

*जो भी करता हूँ केवल*

*उसके लिए करता हूँ ।*

*मैं एक दिन मुट्ठी भर राख*

*बन जाऊँगा*

*पर वे तो सदा रहेंगे*

*सर्वस्व आप हैं और आपका है*

*मेरा कुछ नहीं।*

*मेरे राम*

*ही सम्पूर्ण सत्य हैं ।*

***

*I am not aware about it. Suddenly landed.*

*Ram naam mantra se antarmukhi hokey antarkaran sey jab hum atmanbodh pey pahonchtey hain tab ek adbhut prakash maye antariksh dikhta hai jo shayed anhad sey ageyki yatra ho.... Raaaam tu hi janey. Ye to mera bhi soch nai Hey mere Raaum.*

मैं इससे अवगत नहीं हूँ । अचानक जागरुक हुआ ।

राम नाम मंत्र से अंतर्मुखी होकर अंतःकरण से जब हम आत्मबोध तक पहुँचते हैं तब तक एक अद्भुत प्राकाशमय अंतरिक्ष दिखता है जो शायद अनहद से आगे की यात्रा हो .... राम तू ही जाने । यह तो मेरी भी सोच नहीं है .. हे मेरे राममम

***

*Why we can't see God do you know? We do not know How to see Him and where to see Him!*

*He is everywhere, in every thought and action. He is in all that is Innocent. He is in all the pain and sufferings so in the healer and healings. He is in the prayer. He is in love. He is in respect and care.*

*Are you stll searching My Raaaaum?*

क्या आप जानते हैं कि हम परमेश्वर को क्यों नहीं देख सकते ? हम नहीं जानते कि उसे कैसे देखा जाए और कहाँ देखा जाए ! वे सर्वव्यापक हैं , हर विचार व कृत्य में । वे हर उसमें हैं जो सरल है । वे हर पीड़ा व वेदना में हैं तथा वैद्य व औषधि में । वे प्रार्थना में हैं तथा प्रेम में । वे आदर व सम्मान में हैं।

क्या आप अभी भी मेरे राम को खोज रहे हैं ?

***

*Divine relations are not proven through DNA tests. EVERY PERSON HAS THE MOST MODERN LAB CALLED SPIRITUAL SELF which always proves that Divinity is inseparable like our shadow. But*

*how much time we allot to this PERMANENT RELATION! We have time for everything and everyone but only a quick namaskar or a mala or two for our Loving Eshta. So we have been living for impermanent relations for so long thus we suffer. Thousands of people we befriended and nothing substantial we remember. This is impermanance of relations. In an awakened 16 hrs in a day we spend 2 to 30 min for Divine. Calculate from the age of 10 till now what is the total time you lived and out of that how much for divine sakha or loving God. Do this small exercise. This may change your lifescape.*

*Why people get hurt you know? We decline to accept changes and deny the whole world is constantly evolving and manifesting.*

*Impermenance and perishable are the only two Constants in the world of Maya.*

*An eternal mind knows one relation will never change that is with God any name you give it! For me Raam I will be His no matter I love him, I fight with Him or anything. HE HOLDS MY HAND FOR SURE.*

दिव्य सम्बंध DNA के प्रशिक्षण द्वारा प्रमाणित नहीं किए जाते ।हर व्यक्ति के पास सबसे आधुनिक प्रयोगशाला है आध्यात्मिक आत्मा जो सदा यही प्रमाण देती है कि दिव्यता हमारी छाया की भाँति हमसे पृथक नहीं हो सकती ! पर हम कितना समय इस स्थायी सम्बंध को देते हैं ! हमारे पास हर चीज़ व हर एक के लिए समय है पर केवल एक जल्दी से किया हुआ नमस्कार या माला हमारे प्यारे ईष्ट के लिए । हम कितना समय अस्थाई सम्बंधों के लिए बिताते हैं तभी तो पीड़ा सहते हैं ।हज़ारों लोगों से मित्रता की किन्तु कुछ भी स्मरण नहीं रहता । यही है अस्थाईता इन सम्बंधों की । जागृत १६ घण्टों में से केवल २-३० मिनट तक परमेश्वर के लिए व्यतीत करते हैं । अपनी दस वर्ष की आयु से गिनती कीजिए कि कितना समय आपने अपने दिव्य सखा या परम प्यारे परमेश्वर को दिया है । कीजिएगा यह छोटी सा प्रयोग । हो सकता है यह आपके जीने का नज़रिया ही बदल दे !

क्या आप जानते हैं कि लोग क्यों आहत होते हैं ? हम परिवर्तन को अपनाने की स्वीकृति नहीं देते और यह मानने से अस्वीकार कर देते हैं कि संसार हर पल हर क्षण विकसित व अभिव्यक्त हो रहा है ।

अस्थाई व नश्वरता ही इस मायावी जगत के दो स्थिरांक हैं ।

एक दिव्य मानस जानता है कि एक सम्बंध कभी नहीं बदलेगा और वह है परमात्मा का संग ! कोई भी नाम आप दे दें! मेरे लिए राम ! मैं उन्हीं का हूँ चाहे मैं उनसे प्यार करूँ , लड़ूँ या कुछ भी । वे मेरा हाथ पकड़े हुए हैं इसका मुझे पूर्ण विश्वास है ।

***

*O My Eshta Nirakar Adwaita Raaaaum.*

*I since detached from you*
*floating in whrilpool*
*Cosmos sucked me within.*
*High and low of births*
*Deeds of dynamics*
*Shown me unknown*
*Told me in whisper*
*That unreal maya is Lila.*
*Dwelled in mystrey*
*Some time in vedic chanting*
*Sometime religion of*
*Rituals and sound*
*Somewhere anotomy*
*And skull*
*Sometime Shakti, Shakta and Bhakti*
*Sometime a fallen life*
*Of lower wish*
*Sometime unethical leader*
*Somewhere luxury of mine*
*Some time with all comforts*
*Yet tears of losses after loses*
*Of mortal dears*
*In the bygone past*
*Sometime nature pinched my end*
*Sometime I became anti nature*
*In dommed life*
*moral values got flouted*
*Sometime died for purity and piousness*
*I remain detached entity*
*Dwelled in Ignorance.*
*Searched wisdom*
*Discovered sublime Naaam.*
*I am no more me*
*I hv lost my joy and pain*
*I know not what I know*
*Or get to know.*
*Intensed trance*
*Insane logics*
*Thesis beyond life*
*Anti thesis is in life.*
*Mysteries are unravelled*

*Decoded codes got new codes*
*I continue to encounter*
*The enigma*
*And engage myself*
*For negotiations*
*Amidst challenges*
*And all these are fine*
*And welcome*
*Till I cease to think*
*And empty my memory bank*
*Of this and all other births*
*Then I will be no more of any possession*
*None would possess me*
*I will befriended in unknowness*
*I will be nameless*
*Till the Time Ram Himself embraces me*
*And give His own name*
*And hide me from the world.*
*As he loves my anonymous*
*Of anomoly.*
*But His love is solace*
*And in Him*
*Anamika is Bliss!*

*ओ मेरे ईष्ट निराकार अद्वैत राम*

*जब से मैं आप से पृथक हुआ*

*भँवर में तैरता हुआ*

*ब्रह्माण्ड ने मुझे अपने अंदर खींच लिया ।*

*जन्मों के उताव चढ़ाव*

*कृत्यों की गतिशीलता*

*अज्ञात का दिखना*

*धीमे से मुझे बताना*

*कि माया सत्य नहीं है ।*

*रहस्य में रहते*

*कभी वेदों का उच्चारण*

*कभी ध्वनि व अनुष्ठानों के धर्म*

*कभी शरीर रचना*

*व खोपड़ी*

*कभी शक्ति, शक्ता और भक्ति*

*कभी गिरा हुआ जीवन*

*निम्न स्तरों का*

*कभी भ्रष्ट नेता*

*कभी विलास में रमा*

*सभी सुखों के साथ*

*पर आँसु हर हानि व*

*संसारी प्रियजनों के*

*बिछड़ने पर*

*बीते हुए कल में कभी*

*प्रकृति ने मुझे चुभन दी*

*कभी मैं प्रकृति विरोधी हुआ*

*अपराधी जन्म में नैतिक मूल्यों*

*का उल्लंघन हुआ*

*कभी मैं पवित्रता व धार्मिकता*

*के लिए मरा*

*मैं एक निर्लेप सत्ता हूँ*

*अज्ञानता से घिरा हुआ ।*

*ज्ञान की खोज की*

*और उदात्त नाम पाया ।*

*मैं अब मैं नहीं रहा*

*मुझसे ख़ुशी व ग़म गुम हो गए हैं*

*मुझे नहीं ज्ञात कि मुझे क्या पता है*

*या क्या जानना है ।*

*गहरी समाधि*

*उन्मत तर्क*

*जीवन के पार के निबंध*

*पर इस जीवन के विरोधी निबंध।*

*रहस्य के भेद खुले*

*संकेतावली समझे गए तथा नए कोड मिले*

*रहस्यों से सामना होता गया*

*और अपने आप को बातचीत में मग्न रखकर*

*चुनौतियों के मध्य में*

*यह सब ठीक है और इनका अभिनंदन भी है*

*तब तक जब तक मैं अपनी स्मृति इन सबसे*

*व पिछले जन्मों से ख़ाली नहीं कर लेता*

*तब मेरे पास कुछ नहीं होगा*

*मुझ पर भी किसी का स्वामीगत*

*भाव नहीं होगा*

*मेरी अज्ञात से मित्रता होगी*

*मैं बदनाम हूँगा*

*जब तक राम मुझे स्वयं नहीं गले लगा लेते*

*और मुझे अपना नाम नहीं दे देते*

*और संसार से मुझे छिपा नहीं लेते ।*

*क्योंकि वे मेरी गुमनाम असंगति*

*बहुत पसंद करते हैं ।*

*पर उनका प्रेम शांति देता है*

*और उनमें अनामिका आनन्दमयी है ।*

*****

*Ram Naam is benefic eternal power.*
*Imbibing Ram Naam attributes*
*Is the way of life for Ram Naam Upasak.*
*Pure selfless love for all*
*And wishing good and praying for others*

*Are attributes of Raaaaam*
*As he HE is paramdayalu.*
*To beget ram Bhav*
*Our Dharma and karma*
*be as servant to all*
*As "paropakar mey Raaaum hai."*
*Share your might*
*Share your bhava*
*Share your time and*
*give company to lonely abandoned souls*
*Share your wisdom*
*Even share your wealth*
*And serve all*
*as all Are RAAAM*
*And your karma is of Raaaam only.*
*Bhava Sewa is Raam Seva*
*Be in Raaaaaamanand state of Bliss.*
*Raaaaaaaaaaaaaaaauuuum*

*Ram is Mangalik supreme*
*He is the essence of Spiritual Wisdom*
*He is the holder of utimate truth.*
*Raam is the summing up*
*Of Bhakti yog*
*He once smears a Ram Naam Sadhsk*
*The body itself becomes Ramansha*
*Ram Remains Dev and divine light aswell*
*He is filled with love and truth*
*Such is my Raaaaaauuuum.*

*राम नाम दिव्य कृपामय शक्ति है ।*

*राम नाम के गुणों को अपनाना*

*राम नाम उपासक का जीवन होना चाहिए ।*

*सभी के लिए पवित्र निरपेक्ष प्रेम होना*

*और सभी के लिए सद्भावना तथा प्रार्थना करना*

*राम के गुण हैं*

*क्योंकि वे परम दयालु हैं ।*

*राम भाव प्राप्त करने के लिए*

*हमारा धर्म व कर्म दूसरों के दास होना है*

*क्योंकि " परोपकार में राम हैं "*

*अपनी शक्ति बाँटिए*

*अपने भाव बाँटिए*

*अपना समय बाँटिए*

*अपना साथ अकेलेपन तिरस्करित आत्माओं*

*के साथ बाँटिए*

*अपना ज्ञान बाँटिए*

*अपना धन भी बाँटिए*

*और सभी की सेवा कीजिए*

*क्योंकि सभी राम हैं*

*और आपके कर्म केवल राम के लिए ही हैं ।*

*भाव सेवा राम सेवा है*

*रामानन्द स्तर के आनन्द में रहिए ।*

*राममममममम*

*राम परम माँगलिक है*

*वे ही आध्यात्मिक ज्ञान के मूलतत्व हैं*

*वे ही परम सत्य हैं ।*

*राम भक्ति योग के समन्वय हैं*

*जब वे स्वयं राम नाम साधक*

*को ओत प्रोत करते हैं*

*तो देह स्वयं रामांश बन जाती है*

*राम देव हैं व दिव्य प्रकाश भी*

*वह प्रेम व सत्य से परिपूर्ण हो जाता है*

*ऐसे मेरे राम हैं ।*

*****

*Raam Bhava is epitome love*
*It is sumadhur Shrishti*
*It is sublime spiritual journey*
*And with humbleness one begets it.*
*Like guruvachan the pious words*
*Uttered by Ram Naam sant*
*Be noted minutely.*
*Ram Naam Bhav sadhana*
*Allows you to listen to divine*
*Whispers in dhyan.*
*Those are eternal wisdom must be noted*
*For upgrading Naam sadhana.*
*Even with humbleness*
*Sub zero ego state*
*One has sangati of Raam Bhakt*
*Then Raam bhakti envelopes you too*
*Such is loving Naam sadhana and*
*Raaaaaaaaaaaauuuum.*

*राम भाव प्रेम के प्रतीक हैं*

*वह सुमधुर सृष्टि है*

*वह उदात्त आध्यात्मिक यात्रा है*

*और विनम्रता से हमें यह प्राप्त होता है ।*

*जिस तरह गुरू वचन*

*जो पावन शब्द हैं*

*राम नाम संत द्वारा उच्चारण*

*किए गए*

*सूक्ष्म रूप से मनन करने चाहिए ।*

*राम नाम भाव साधना*

*दिव्यता के धीमे सुरों को ध्यान में*

*सुनने की अनुमति देता है ।*

*अपनी नाम साधना का उत्थान करने के लिए ।*

*वह दिव्य ज्ञान ध्यान में रखना चाहिए*

*विनम्रता के संग*

*शून्य से भी नीचे स्तर पर*

*यदि राम भक्त की संगति मिले*

*तो राम भक्ति आपको भी ओत प्रोत कर लेती है*

*ऐसी प्यारी है राम साधना व राममममममम।*

***

## *Raam Taatwa and Gurutattwas*
## *Smears few sadhak*

*As Raam Dharana, Dhyaan, Drishti , Dhara prabha of Raam Naam jaap*
*Gives Raam Siddhi to some sadhak.*
*Sannidhya or being with them*
*Itself is Bliss Satchitananda.*
*Like the Guru sthan and Asan*
*Raaamatattwa rests for ever.*
*These places are full of Tirtha Gunna*
*Or the space is filled with divine attributes*
*Of Siddha peetha snd sacred land*
*Such divine sumiran is*
*RAAAM NAAM SADHANA AND SIDDHI.*

## *राम तत्व और गुरूतत्व कुछ एक साधकों को लिप्त करते हैं*

*राम नाम जाप की राम धारणा, ध्यान, दृष्टि, धारा प्रवाह*

*कुछ साधकों को राम सिद्धी प्रदान करती है ।*

*उनका सानिद्धय ही आनन्द सच्चिदानंद है ।*

*गुरू स्थान व आसन की तरह*

*राम तत्व सदा स्थिर रहते हैं ।*

*ये स्थान तीर्थ गुणों से परिपूर्ण होते हैं*

*या क्षेत्र सिद्ध पीठ व धार्मिक क्षेत्र*

*दिव्य गुणों से भर जाता है*

*ऐसा दिव्य सुमिरन है*

*राम नाम साधना और सिद्धि ।*

*Naam sadhak whose life is*
*Coated with Raam Naam*
*Inner aakash or vaccum of body is*
*Filled with Raam Naam*
*Becomes Raaaum Himself*
*Meeting such soul is bliss*
*And celebration of Ram Naam Siddhi.*
*Even glimpses of them provide us*
*Ananada or eternal bliss*
*Such is glory of Raaaaaaaaaaaaaaaum*

*नाम साधक जिसका जीवन*

*राम नाम से लिप्त है*

*देह के भीतर का आकाश*

*राम नाम से परिपूर्ण हो जाता है*

*वह स्वयं राम बन जाता है*

*ऐसी आत्मा से अवगत होना आनन्द है*

*तथा राम नाम सिद्धी का उत्सव मनाना है*

*ऐसों की केवल झाँकी ही हमें*

*आनन्द या दिव्य आनन्द से भर देती हैं*

*ऐसी है राममममम नाम की महिमा*

*Ram Naam Sadhak*
*Becomes pure and sattwik*
*As Ram Naam Siddhi blesses them*
*And pure bhava they beam.*
*If such becomes Ram Naam Sadhak*

*Then bow before them*
*Accept them as divine friend*
*And treat all Naam Upasak as Ram*
*Each Sadhak as intangible Mandir*
*And there flows eternal self less love*
*Such is the glorious*
*Ram Naam Aradhana.*
*Be judgemental to self how much*
*Closer we became to*
*Sacred Ramabhava!*

*जब राम नाम सिद्धि आशीर्वाद देती है*

*तब राम नाम साधक*

*पावन व पवित्र बन जाता है*

*और पवित्र भाव विस्तृत होता है ।*

*यदि साधक ऐसा बन जाता है*

*तो उनके समक्ष नतमस्तक होकर*

*दिव्य सखा स्वीकार कीजिए*

*और उस राम उपासक को राम ही मानिए*

*हर साधक को अमूर्त मंदिर ही मानिए*

*और वहाँ दिव्य निस्वार्थ प्रेम बहता है*

*ऐसी श्रेष्ठ है राम नाम आराधना ।*

*स्वयं का अनुमान लगाते जाइए*

*कि हम कितने निकट पावन रामभाव*

*के आ गए हैं ।*

*****

*O my Raaaum*
*You are pure Nectar*
*That assures immortality*
*Your name works beyond time and space*
*Thy name cultivates Ram Naam harvest*
*As fields meaning Sadhak*
*Get watered well as Ram Beej*
*Sprout to excellence with Guru kripa*
*The Mangalik Ram ensures*
*Mangalik Deed of naam sadhak*
*As eternal Divine RAAAAAUM is*
*Worshipped with every divya chintan,*
*Naam jaap and Pavan Karma*
*Such pure is my Bhava Eshta*
*Raaaaaaaaaaaauuum.*

*ओ मेरे राम*

*आप पावन मधु स्वरूप हैं*

*जो मुक्ति का आश्वासन देते हैं*

*आपश्री का नाम समय व क्षेत्र के पार*

*कार्य करता है*

*आपश्री का नाम राम नाम की*

*फ़सल विकसित करता है*

*जैसे की साधक रूपी खेत को*

*पानी मिलता है*

*तो राम बीज गुरू कृपा से*

*उत्कृष्टता को*

*अंकुरित होता है*

*माँगलिक नाम, नाम साधक*

*से माँगलिक कृत्य करवाते हैं*

*क्योंकि दिव्य राममममम की आराधना हर*

*दिव्य चिंतन, नाम जाप और पावन कर्मों से होती है*

*ऐसे पावन हैं मेरे भाव ईष्ट रामममममम।*

*****

*Raam Naam contemplation*
*Begins with pious utterance*
*Lips do naam jaap in ananant bhava*
*Raam Raaaaaum travels*
*from inner to inner most*
*As it purifies the antarkarn*
*The Sanctum Sabtorium of*
*Ramalaye the very body of*
*Ram Naam sadhak*
*As bhava of body becomes*
*Purified with Naad Shree Raaam.*
*Such is my loving*
*Raaaaaaaaaaaaaaaaaaauuuum.*

*राम नाम का चिंतन*

*पावन उच्चारण से आरम्भ होता है*

*अधर नाम जाप अनन्त भाव में करते हैं*

*राम नाम भीतर गहराई में जाता है*

*जैसे वह अंतःकर्ण को शुद्ध करता है*

*रामालय का  पावन स्थान*

*जो नाम साधक की देह है*

*नाद श्री राम से*

*देह के भाव पवित्र हो जाते हैं ।*

*ऐसे हैं मेरे प्यारे राममममममम ।*

***

*O my Raaaaaaauum you are Shree Naad*
*Your melodious sound, your sacred name*
*Resound and rebound in my ears*
*As in in my pran utsa or in heart*
*Thy name revolves as nectarine name*
*O my sublime shabda Brahmanda*
*My Raauuuuum.*

*ओ मेरे राम आप श्री नाद हैं*

*आपकी मधुरमय ध्वनि , आपश्री का पावन नाम*

*गूँजता है और प्रतिबिंबित करता है*

*जैसे मेरे प्राण उत्सा में या हृदय में*

*ओ मेरे उदात्त शब्द ब्रह्माण्ड*

*मेरे रामममममममममम*

***

*O my Raaum you are jyoti swarup*
*Light of cosmos be it Sun or Moon*
*You remain the spiritual shine*
*In your light Hey Prakriti*
*I find you O my Raaum*
*And that lights up my brilliance*
*Of atmik perception*
*To internalize your Tej rup Shakti*
*O my Raaaaaaaauuuum.*

***

*ओ मेरे राम आप ज्योति स्वरूप हैं*

*ब्रह्माण्ड का प्रकाश चाहे सूर्य हो या चंद्र*

*आप आध्यात्मिक प्रभा रहते हैं*

*आपश्री के प्रकाश में हे प्रकृति*

*मैं आपश्री को प्राप्त करता हूँ*

*ओ मेरे राम*

*और जो मेरे आत्मिक अनुभव*

*की प्रतिभा को प्रकाशित कर के*

*आपकी तेजस्वरूप शक्ति को अंतरमुखी करती है*

*ओ मेरे राममममम*

***

## *GLORY OF RAAM NAAM.*

*SHREE SHREE SWAMIJI MAHARAJ SHREE declared for Ram Naam sadhak*

*Our body be Shivalaya*
*Icon is Ram Naam*
*Anhad naad be aarti dhwani*
*Which goes on for ever!*

*Today we will be consciously thinking on these and work towards mid way corrections. HEY RAAAAAAAUUUUM Avatarit hoiye aap aur samjhayey ye adhyatmik lila as I am ignorant of all.*

## *श्री श्री स्वामीजी महाराजश्री ने राम नाम साधक के लिए कहा*

*हमारी देह बने शिवालय*

*राम नाम मूर्ति*

*अनहद नाद हो आरति ध्वनि*

*जो सदा सदा चलती जाए!*

*आज हम चेतन भाव में इन पर चिंतन कर अपने आप को सुधारेंगे। हे राम अवतरित होइये आप और समझाइए यह अध्यात्मिक लीला क्योंकि मैं तो सबसे अज्ञानी हूँ।*

***

## *DREAM : PARALLEL VAIKUNTHA*

*Ram Ram. I got up in the morning with a thought PARALLEL VAIKUNTHA. I jostled for an hour and am just sharing it in my time lime. Treat it just as dream.*

*There exsists a parallel Vaikuntha. Its a space of white, yellow, and red like sindur which are colour symbol of that Vaikuntha. Here worst or rude persons become sublime. All are in mannan state like simran. Unfarmful non intetfering existance. Minimum vak is used. Sublime bhava all*

*around. No estacy no ananda and no sorrow even no remorse of pain. As if its divine void away from mortal concept of sorrow and happiness. No one laughs here but all faces are sublime, the light temperature is medium where people are interacting in silence.There is no icon, no mandir, no ritual, no text. This is Parallel Baikuntha, I was told, may be some light years away. It's pure bhava that is the atmosphere of this Parallel Vaikuntha. It is light, thin, pure, soundless, sublime, divine, reflective mood.*

*Well what a wonderful dream. Parallel Baikuntha of Bhakti! Does it exist? Ram Ram.*

## स्वप्न: समानांतर वैकुण्ठ

राम राम । मैं समानांतर वैकुण्ठ विचार के साथ आज सुबह उठा । मैंने एक घण्टे तक धक्का खाया और अब आप के साथ बाँट रहा हूँ । कृपया स्वप्न ही समझिए ।

एक सामांतर वैकुण्ठ है। वह श्वेत, पीला और सिंधूर की भाँति लाल क्षेत्र के समान, जो वैकुण्ठ के रंगों के चिन्ह हैं । यहाँ सबसे गिरे हुए व क्रूर इंसान भी उदात्त बन जाते हैं । सभी यहाँ सिमरन जैसी मनन की स्थिति में हैं । सुरक्षित व बिना किसी हस्तक्षेप का अस्तित्व । कम से कम वाक् का उपयोग होना । चारों तरफ़ उदात्त भाव । कोई उत्तेजना नहीं, न खुशी न ग़म । कोई हँसता नहीं है पर सभी के चेहरे उदात्त हैं , प्रकाश का ताप भी मध्यम है और लोग आपस में मौन में ही परस्पर मिल रहे हैं । यहाँ कोई विशेष चिन्ह नहीं है, न मंदिर, न धार्मिक गतिविधियाँ , न ही टेक्स्ट । यह सामांतर वैकुण्ठ है , मुझे बताया गया कुछ ही प्रकाश वर्ष का दूरी पर । सामांतर वैकुण्ठ का वातावरण पवित्र भाव का है । वह हल्का, पतला, पावन, बिना ध्वनि के, उदात्त, दिव्य, चिन्तनशील भाव ।

कितना सुंदर स्वप्न । भक्ति का सामांतर वैकुण्ठ ! क्या सच में इसका अस्तित्व है ?

राम राम.

***

## *RAM ---THE ULTIMATE REFUGE*
## *Understanding SHARANAGATA*

*Shree Shree Swamiji Satyanand Maharaj Shree taught us that SHREE RAAM is most merciful or Param Dayalu. This is Universal truth. Maharishi elaborated the eternal wisdom of Swamiji Maharaj Shree that complete surrender to RAM can erase all our negations and Paap. But our ego does not allow that. I am not talking about mortal and materialistic ego even the most spritualistic person or sadhak suffers from this cancerous Ego or Pride and do dictate as if they are all knower and whatever be their perception or knowledge they have are absolute. Here Maharishi intervened and said that complete surrender means what to talk about knowledge, even the Bhakti is HIS. Such should be the state not just a thought perspective. Maharishi taught us that Shree Ram Pardons all who has done complete surrender or became SHARANAGATA.*

*I pray to Sadguru and Gurujan to make me realize the word so that Bhakti of ours becomes absolute. Pranam Atmik Pranam Bhiksha do Maharishi and make us understand SHARANAGATA .*

*Shree Raaam is Nirakar absolute Supreme.*

*HE is cause and effect of Cosmos.HE is in you*

*All pride and ego becomes dust with His kripa*

*Resonance of Shree Naad is the All doer.*

*Awakened self HE gives when we destroy our Aham or Ego or hamara MEY*

*Not even the" thinking" you are doing is yours. This is Para Bhakti.*

*Altar called RAM NAAM where "I" is sacrificed.*

*GIvens are nothing But HIS. Be that is good or bad. But to crossover Ram Bhakti of extreme nature are the pre requisites.*

*Abosolute TRUST with no question from Human mind can make us SHARANAGATA.*

*Tear off that canvas where you drew yourself bigger than life size to say "I AM THE ENTITY" Ram Bhakta even does not create fuss about my guru thine guru or who said what.Nothing but Shree Ram exists. Such absolute realization that I AM HIS and HE IN ME and then live life would make us realize how to be in the Sharanagat state.*

*Am not even bhakta without His Ashray be in that bhava for absolute refuge in Ram.
I am in Him. He is in Me are reality.
But when I say "I am HE" then problem starts. Selflessness is para bhakti.
Constant rememberance or Ram Naam Simran can inch us towards this "I am in HIM" and nothing is mine not even my possession,my relations, not my body not even my buddhi nothing is mine. This is the stage of Sharanagata. But whether destroying self is achieved or not! This*

*will be told by SHREE RAM himself to you as this is very personal divine inner journey. Raaaaaaaaauuuum.*

## राम --- परम शरणागति

## शरणागत को समझें

श्री श्री स्वामीजी सत्यानंद जी महाराज श्री ने हमें सिखाया है कि श्री राम परम दयालु हैं ।यह एक सार्वभौमिक सत्य है ।महर्षि ने विस्तृत कर के समझाया कि स्वामी जी महाराज श्री का अनंत ज्ञान बताता है कि राम पर सम्पूर्ण शरणागति सभी नकारात्मकताओं व पापों को धो डाल सकता है । पर हमारा अहंकार इसकी स्वीकृति नहीं देता ।मैं नश्वर या भौतिक अहंकार की बात नहीं कर रहा, एक बहुत अध्यात्मिक साधक भी इस कैंसर रूपी अहंकार के वशीभूत हो सकता है, और वे इस तरह बात करते हैं जैसे कि वे ही सर्वज्ञाता हैं और जो उनके देखने का नज़रिया है वही सर्वोच्चय है ।यहाँ महर्षि समझाते हैं कि सम्पूर्ण समर्पण का मतलब कि ज्ञान की ही क्या बात करनी , भक्ति भी परमेश्वर की है ।ऐसा स्तर होना चाहिए ना कि एक विचारधारा । महर्षि ने समझाया कि श्री राम सब को क्षमा कर देते हैं जिन्होंने सम्पूर्ण समर्पण कर दिया है या वे शरणागत हो गए हैं ।

मेरी सदगुरू व गुरुजनों से प्रार्थना है कि वे मुझे शरणागत शब्द का मतलब समझाएँ ताकि हमारी भक्ति परिपूर्ण हो सके ।

प्रणाम आत्मिक प्रणाम ..भिक्षा दीजिए महर्षि और हमें शरणागत समझाइए ।

श्री राम परम पुरूष निराकार हैं ।

वे ही ब्रह्माण्ड के कारण और प्रभाव हैं । वे आप में हैं ।

उनकी कृपा से अहंकार व मद सब धूलि बन जाते हैं ।

श्री नाद की गूँज ही सर्व कर्ता है ।

जागृत मैं का वे दान देते हैं जब हमारे अहम् या हमारी मैं का नाश हो जाता है ।

हमारी सोच भी हमारी नहीं रहती । यह पराभक्ति है ।

राम नाम वह वेदि है जहाँ मैं का त्याग होता है ।

सब कुछ उन्हीं का ही दिया हुआ है । चाहे वह अच्छा है या बुरा है । पर राम भक्ति की चरम सीमा ही इसकी पूर्व अपेक्षित सामग्री हैं ।

सम्पूर्ण विश्वास व कोई भी प्रश्न मानव मन का शेष न रहने पर वह हमें शरणागत बना सकता है।

फाड़ कर फेंक दीजिए वह कैन्वस जहाँ आपने अपना जीवन से भी बड़ा चित्र बना रखा है जो कहता है "मैं ही सत्ता हूँ "

राम भक्त तो इसका भी नहीं बतंगड़ बनाता कि मेरा गुरू या तेरा गुरू या किसने क्या कहा । और कुछ नहीं केवल राम ही सत्य हैं । ऐसी सम्पूर्ण अनुभूति कि मैं उसका हूँ और वे मुझ में हैं .. ऐसा जीवन जीना हमें यह अनुभव करवा देगा कि शरणागत की स्तिथी क्या है ।

मैं तो भक्त भी नहीं हूँ उनके आश्रय के बिना, इस भाव में रहना ही राम में सम्पूर्ण शरणागति है ।

मैं उन में हूँ व वे मुझँ में हैं यही वास्तविकता है ।

पर जब हम यह कहते हैं कि मैं परमेश्वर हूँ , तभी सब गड़बड़ का आरम्भ हो जाता है । निस्स्वार्थता ही पराभक्ति है ।

राम नाम का सतत सिमरन हमें इस भाव की तरफ़ ले जा सकता है कि " मैं राम में हूँ " मेरा कुछ भी नहीं , कोंई अधिकार नहीं ,मेरे सम्बंध , मेरा शरीर और न ही मेरी बुद्धी , कुछ नहीं मेरा ।यह शरणागत का स्तर है ।पर आपके अहम् का नाश हो गया है कि नहीं यह केवल श्री राम ही आपको बताएँगे क्योंकि यह एक बहुत ही व्यक्तिगत दिव्य अंतर यात्रा है ।

*राम*

*****

## *Maun pey Manan aur Guru key Margdarshan*

## *CONTEMPLATING ON MAUN -GURU GUIDES*

*Sadhak: Maharajshree Pranam*

*Guru: Kaisey ho vatsa?*

*Sadhak: Theek hi hun magar jeevan mey bahot shor haiy.*

*Guru: Ram Naam ka jaap kar raheh ho?*

*Sadhak: Jitna ho pa raha hai kar raha hun baki jeevan key utar chado ney maan ko chaos bana diya hai.Samaj, parivarjan, vebsayey,kam kaaj,echayen, sab kuch neye mujhey divide kar diya hai kuch samajh nai ata Majharaj Shree.*

*Guru: Jeevan to lila hai beta. Swamiji Maharajji ney sabko seekhaya hai apney kartavya jarur kareny. Jab maan ghabraey, aapada aaye, ya maan bishananntaa ya dukhmaye ho jaye, tab etna naam ley Raamji key ki Aap Shree khud aajayengey aapke saath es jeevan key ladai mey.*

*Sadhak: Lekin Guruji Maan to etna vichalit ho jata hai ki sadhna nai ho paati; jaap kartey kartey maan bhatak ta hai mano charo aur sey, sab apney apney demand kar rahen hain, aur mey apney aap mey ek besura baja bun chuka hun.*

*Guru: Jo tumharey saath ho raha hai wah hamesha har jug mey har sadhak ko pratardit karney key liye hota hai. Lekin apney aap or aap sey Ram ji key natey ko to bhul na nahi hai. RAM naam key dhun aapkey maanko aur jeevan ko surkar banata hai ye maat bhulo. Tum Ramji key liye vishesh ho, ye kabhi nai bhulna. Mahamantra Raam sey jab koi jud jaye to apna kuch aur koi bhi nai rehta.*

*Acha Gautam tumharey liye sari duniya impt hai, sabko priority detey rahe ho, aur apney ko meetatey rahe ho. Lekin ye sab kiskey liye aur kyoun? Yey sab duty maan key kartehe ho na? Mere baat ko sweekar kar key sab cheej ko face karetey ho; bhagtey nai ho kisi situation sey. Ye hi to ram naambhav upasana hai. Gautam jis din tumhey Ramji leney ayengey wintin minutes sab tumhara naam bhulkey tum shab ya lassh bolkey sambodit karengey antasti key dauran. Aur Siraf Ram ji apney hi Naam sey susajjit karenge tumhey. So realize this Maya, Moha and introspect now.*

*Sadhak: Maharaj Shree,dukh, kashta, avhelana to kabhi koi mainey nai rakha apna banakey these are passing phases I know thst..Simran key anant bhav hi hai to mera sahara. Ab chup rehney ka dil karta hai Maharaj Shree.*

*Guru: Chup matlab expression maat dena ya withdrawal mood mey rehna is it not? Lekin es chup ko Maun Sadhana mey badalna hai.*

*Sadhak: waha kaisey maharajshree?*

*Guru: When mind undergoes internal thought riots then one feels fragmanted. This is not challenge but an opportunity for Maun Sadhana. Swamiji Maharaj Shree in Sadhna Satsang allocated Maun Samay as longest hour of pause. It was not just for non-speaking or non utterance but silencing your thought.*

*Sadhak intervens: Is it the sate of non thinking?*

*Guru: Maun ek manasik sadhana hai. Chinta ya soch, hamarey andar kut kut key bhara hai, aur uskey 2 percent bhi hum kaam pey nahi la pattey hain. siraf soch soch key pareshan hotey hain , aur mano hamesha hum har cheej ka haal dhundtey hain. Lekin hamey solution milta hai kya ? aur ham ek cheej pey focussed hokey sochtey hain kiya.? Do minute chup hokey baitho kam sey kam 50 different topics mind mey surface karti hai aur hamey koi nishkarsh nai milti aur hamara chinta chaotic hotey jata hai, star, prati star.*

*Sadhak : Fir Maun kaisey karey.!*

*Guru: Remember Maun is Sadhana and it is higher Tapasya. This Maun is your secret Sadhana. Mortal Thoughts or vebharik chinta ko haata key eshwarik chinat ko lana hai jo aspko Raam Chaitanya ka bhaav dikhayega.*

*Forget about you and your deeds for a moment. Forget about your ego, your status, your ahankar, your achivement, even your siddhi.Forget about your pious deeds and take off your mind from all the sins you may recall.*

*Ram Chintan Raam bhava becomes your eternal thread or rope that takes you to innerself. RAMAMAYE BHAVA LAYERS OUR MORTAL WORLD AND THOUGHTS AND EVEN WORRIES IN OUR PROCESS OF MAUN SADHANA. Try to withdraw from chinta and chintan convert them with Ramamaye bhava. Raam Manan is passing through the tunnel within that has huge shor or noise of thoughts emitting in sillence and in systematic layering them with Ram Naam introspective contemplation, you realize a state within, where sound of silence become thinner and whisper of Ram becomes laudably audible. Here onword Ram Himself will guide you to higher frontiers of Maun Tapasya which has many unknownness and surprises. This eternal experience comes to the fore when we realize Guru is my mode and eternsl guide and Ramtattwa is eternal destiny. Your Atmik relation with Ram is the only love which is constant eternal and permenant rest are chinta, chintan, maya and Lila. Ram and you, the eternal relation if you celebrate together nothing can fragment my friend.*

*Sadhak: Aatmik pranam Maharaj Shree I know I was talking to my Ram.*

*Guru gave a sublime smile in deepest silence. Uttered: Raaaaaaaaaaaaauuum*

## मौन पर मनन और गुरू के मार्गदर्शन

साधक : महाराजश्री प्रणाम

गुरू : कैसे हो वत्स?

साधक : ठीक ही हूँ मगर जीवन में बहुत शोर है ।

गुरू : राम नाम का जाप कर रहे हो ?

साधक : जितना हो पा रहा है कर रहा हूँ बाकि जीवन के उतार चढ़ाव ने मन को उत्थल पुथल कर दिया है । समाज परिवार जन, व्यवसाय , काम काज, इच्छाएँ, सब कुछ ने मुझे विभाजित कर दिया है। कुछ समझ नहीं आता महाराजश्री ।

गुरू: जीवन तो लीला है बेटा ।स्वामीजी महाराजश्री ने सबको सिखाया है अपने कर्त्वय ज़रूर करने हैं । जब मन घबराए, आपदा आए, या मन विशन्नता या दुखमय हो जाए, तब इतना नाम ले आप कि राम जी ख़ुद आएँगे आपके साथ इस जीवन की लड़ाई में ।

साधक : लेकिन गुरूजी मन तो इतना विचलित हो जाता है कि साधना नहीं हो पाती ; जाप करते करते मन भटकता है मानों चारों ओर से सबकी अपनी अपनी फरमाएशें कर रहे हैं और मैं अपने आप में एक बेसुरा बाजा बन चुका हूँ ।

गुरू : जो तुम्हारे साथ हो रहा है वह हमेशा हर युग में हर साधक को प्रताड़ित करता है ।लेकिन अपने आप और आप से राम जी के नाते को तो भूलना नहीं है। राम नाम की धुन आपके मन को और जीवन को सुखकर बनाती है यह मत भूलों ।तुम राम जी के लिए विशेष हो यह कभी नहीं भूलना । महामंत्र राम से जब कोई जुड़ जाए तो अपना कुछ और कोई भी नहीं रहता ।

अच्छा गौतम तुम्हारे लिए सारी दुनिया ज़रूरी है, सबको प्रार्थमिकता देते हो , और अपने को मिटाते रहते हो ।लेकिन ये सब किसके लिए और क्यों ? ये सब कर्तव्य समझ कर करते हो न? मेरी बात को स्वीकार कर के सब चीज़ों का सामना करते हो ; भागते नहीं परिस्तिथी से ।यह ही तो राम नाम भाव उपासना है । गौतम जिस दिन तुम्हें राम जी लेने आएँगे, कुछ ही क्षणों में सब तुम्हारा नाम भूलकर सभी अनतेश्टी की दौरान “यह लाश “बोलकर सम्बोधित करेंगे ।और सिर्फ़ रामजी तुम्हें अपने ही नाम से सुसज्जित करेंगे ।इस माया, मोह को अनुभव करो और अब मनन करो ।

साधक : महाराजश्री , दुख, कष्ट , अवहेलना को कभी कोई मैंने नहीं रखा । सिमरन के अनंत भाव ही है तो मेरा सहारा । अब चुप रहने का दिल करता है महाराजश्री ।

गुरू : चुप मतलब अभिव्यक्ति को मात देना या नकारात्मक मनोभाव में रहना नहीं होता ।लेकिन इस चुप को मौन साधना में बदलना है ।

साधक : वह कैसे महाराजश्री ?

गुरू : जब मन के भीतर विचारों का कोलाहल मचता है तो ऐसा लगता है कि हम बटे हुए हैं । यह एक चुनौती नहीं है पर एक अवसर है मौन साधना के लिए ।स्वामी जी महाराजश्री ने साधना सत्संग में मौन समय को सबसे लम्बी बैठक बनाया ।वह सिर्फ़ न बोलने के लिए ही नहीं पर विचारों को शांत करना है ।

साधक : क्या यह न सोचने का स्तर है ?

गुरू : मौन एक मानसिक साधना है ।चिंता या सोच हमारे अंदर कूट कूट के भरी है और उसके २% भी हम काम पर नहीं ला पाते ।सिर्फ़ सोच सोच के ही परेशान होते हैं और मानों हर चीज़ का हल ढूँढते हैं ।लेकिन क्या हमें हल मिलता है और क्या हम एक चीज़ पर केंद्रित होकर सोचते हैं क्या ? दो मिनट चुप होकर बैठो कम से कम ५० अलग विष्य मन में उभरते हैं और हम किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुँचते और हमारी चिंता में स्तर प्रति स्तर और कोलाहल मच जाता है ।

साधक : फिर मौन कैसे करें?

गुरू : स्मरण रहे, मौन साधना है और वह ऊँची तपस्या है ।यह मौन तुम्हारी गुप्त साधना है । नश्वर विचार या व्यवहारिक चिंता को हटा के ईश्वरिक चिंतन को लाना है जो आपको राम चैतन्य का भाव दिखाएगा । भूल जाओ अपने आप को और अपने कृत्यों को थोड़ी देर के लिए । भूल जाइए अपना अहंकार , आपना सामाजिक स्तर , अपनी सफलताएँ , यहाँ तक अपनी सिद्धी भी । भूल जाइए अपने पावन कर्म और बुरे कर्मों को भी जो याद आएँ ।

राम चिंतन राम भाव आपका अनंत धागा बन जाता है जो आपको अंतरमुखी ले जाता है । राममय भाव हमारी नश्वर ज़िंदगी व विचारों तथा चिंताओं को मौन साधना के दौरान लपेट देता है ।चिंताओं से पीछे हटो और राममय भाव चिंता को चिंतन में बदल देता है ।

राम मनन ऐसा होता है जैसे कि हम अंतःकरण में ऐसी सुरंग से निकलते हैं जहाँ विचारों का बहुत शोर आ रहा होता है मौन के मंध्य में और एक व्यवस्थित राम नाम के मनन की परतें चढ़ती हैं और आप भीतर अनुभव करते हैं जहाँ मौन की ध्वनि और कम हो जाती है और राम का धीरे से बोलना ऊँचा हो जाता है ।यहाँ से राम ही आपका मार्गदर्शन करते हैं, मौन तपस्या की ऊँचाइयों तक ले जाते हैं जहाँ बहुत अज्ञात व अचरज चीज़ें मिलती हैं । यह शाश्वत अनुभव तभी अनुभव होता है जब हम यह मानें कि गुरू ही मेरे अनंत के माध्यम हैं और रामतत्व शाश्वत लक्ष्य । आपका राम के साथ आत्मिक संबंध ही ऐसा प्रेम है जो शाश्वत सतत व स्थाई है और बाक़ी सब चिंता, चिंतन , माया व लीला है ।राम और आपका यह शाश्वत संबंध यदि आप इसका इकट्ठे उत्सव मनाएँ तो कुछ भी खण्डित नहीं हो सकता मेरे मित्र !

साधक: आत्मिक प्रणाम महाराजश्री। मैं जानता हूँ मैं अपने राम से ही वार्तालाप कर रहा था।

गुरू ने गहरे मौन में एक दिव्य मुस्कान दी।

और बोले: राम

***

*Ananant Bhava. Ananant Gati. Ananant Naad sey Anhad Naad. Raaaaaaaum hi Raaaaaaaaaauuuuuuuuuuuuuuuuuuuuuuum.*
*Ananant Viraha, Ananant Chitta Chaitanya Raaaaaaaaaaaaaaauuuuuuuuuuuuuuuum.*
*ANANANT DHYAAN, DHARMA, DHAYRYA, DHARANA VA DHAYEE SHREE SHREE RAAAAAAAAAAAAAAAAAAUUMM.*

अनंत भाव। अनंत गति। अनंत नाद से अनहद नाद। राममममममममम ही राममममममम।

अनंत विरह, अनंत चित चैतन्य राममममममममममममममममम।

अनंत ध्यान , धर्म, धैर्य, धारणा व ध्येय श्री श्री राममममममममममममममममम।

***

## *BABA TEACHES*

*Once a very old man visited a house where a pious lady lived.*

*Old man knocked the door and a lady appeared.*

*"Kya chahiye baba" the lady (now onword will be referred as Sadhika) asked.*
*" Mey bahot thaka hua hun aur bhukha bhi hun" old man said.*

*The lady made him comfortable and gave water with Gur.*

*"Mey khana bana deti hun aap birajiye" sadhika said.*
*But old man told her that I don't eat anywhere without doing any labour.*
*Sadhika smiled and said "es umar mey kya kaam karogey aap".*

*Old man said that "ata to ghud sakta hun. Waisey ye baba(showing on the wall the photograph of Swamiji Satyanandji Maharajshree) bhi to ye hi kartey thee. Kabhi bina parishram annya nai grahan kartey thee".*

*Sadhika became very happy asked "Aap hamarey baba key barey mey jantey hain!" Old man said "Suna hain unkey bareymey" and smiled.*

*Sadhika said he was great saint and was given Ram Naam Diksha by Swayam Raamji. Old man smiled with sublimity.*

*"Beti what have you learnt from your Baba" old man asked.*

*"Baba was our Guru. I was given diksha by Maharajji he told us to do lot of jaap and constant simran" Sadhika submitted.*

*Old man asked "Do you lot of ram naam jaap. It's great." She became very happy. Old man asked "do you discuss how much jaap you do and how close you were to Maharajji"."I do. We almost compete and we sometime boast about celestial commandments". Sadhika said.*

*Old man said " Ram naam lena bahot sundar baat hai magar jatana ya ye kehna ki maharaji ney ye adesh diya, aur wah diya, galat hai ahankar hota hai."*

*"Baba sey aur kya seekha?" Old man asked.*

*"Karam karna aur ram naam letey rehna. Aur tyag karna" sadhika said.*

*"Bahot sundar aur unchi cheej hai ye. Acha batao kya kya tyag kiya tumney" old man asked.*

*"Sach bolun merey wah badey Engineer hai aue upar key paisey latey thee lekin ab mainey sab tyag diya aur unko mana kar di" sadhika said.*

*"acchi baat hai kala paisa kalank bhi hai aur paap bhi. Lekin tumhey tyag to lobh, echa aur hamesha badti huee mango ka karna chaiye. Eccha key diya mey aur tel maat dalo beta". Old man said.*

*"Aur kya seekha apney baba sey aur maharaj sey beta" asked old man. "Maharajji kehtey hain eshwar ki prakriti prem hai esiliye mey sabko pyar key nazar sey, ya samman key nazar sey dekhta hun. Dekho aap anjan ho fir bhi aapko baithney diya aur khana de rahi hun"*

*"Theek prem kartey ho jatatey bhi ho? Acha beta bolo prarthana kartey ho?" Old man asked."Ji prarthana to ram naam dharm ka karma hai"."Aaj kya manga". Old man asked. "Mere waha thoda bus mey rahey meney ye manga" sadhika bolkey hans padi.*

*"Hmmm. Beta Tumharey Baba ney seekhaya tha dusro key liye prarthana karna aur wah bhi usko gupt rakhna. Tum to apney liye mang raheho beta ye galat hai" old man said. "TUM MEREY SEY JADA MERE BABA KO JANTEY HO" she replied in anger.*

*"Acha baba ka kehna ki krodh ya vac pey kabu rakhna chaiye. Tumhey to ye ata nai.".provoked the old man.*

*"AAcha chod ye baat. Batao ParmGuru Kaun aur SadGuru Kaun hai Tumhara beta".*

*"Tum kaun ho puchney waley sab kuch baba hai". Sharply sadhika replied.*

*"Param Guru Ram hain jo nirakar aur jyoti swarup hain. Tumhare Baba Sad Guru Hain Aur Sab Raam hain mey Bhi Raam hun I know more than your Baba"smiled and said the old man.*

*"Aap mere sey jada jantey ho..." sadhika said.And started crying. OLD MAN SAID " ahankar ko tyago. Sabsey bada tyag ye hai aur mey hi tumhara baba hun aur tumhey gussa dilakey ye samjhaney aya hun ki AHANKAR KO TYAGO RAM KO PAO" and disappeared.*
*Sadhika became egoless and lived in bliss and she lives to pray and pray only for others.*

## बाबा सिखाते हैं

एक बार एक वृद्ध एक धार्मिक महिला के घर जाते हैं ।

वृद्ध ने दरवाज़ा खटखटाया और महिला आईं.....

' क्या चाहिए बाबा"साधिका ने पूछा

'मैं बहुत थका हुआ हूं और भूखा भी हूं ' वृद्ध बोले ।

साधिका ने उन्हें आराम से बिठाया और पानी के साथ गुड़ दिया ।

'मैं खाना बना देती हूं आप विराजिए ' साधिका बोली ।

पर वृद्ध बोले कि मैं मज़दूरी के बिना कहीं कुछ खाता नहीं हूं ।

साधिका मुस्कुराई और बोली' इस उम्र में आप क्या काम करोगे'

वृद्ध बोले ' आटा तो गूंथ सकता हूं . वैसे ये बाबा [ दीवार पर लगी स्वामी जी सत्यानंद जी महाराज श्री की तस्वीर की ओर पूछते हुए ] भी तो यही करते थे ।कभी बिना परिश्रम के अन्य का अन्न नहीं खाते थे '

साधिका बहुत खुश हुई और पूछा ' आप हमारे बाबा के बारे में जानते हैं '

वृद्ध बोले ' सुना है उनके बारे में ' और मुस्कुराए

साधिका बोली वे बहुत महान संत थे और उन्हें राम नाम की दीक्षा स्वयं राम जी ने दी थी ।

वृद्ध दिव्यता से मुस्कुराए ।

' बेटी तुमने बाबा से क्या सीखा है ' वृद्ध ने पूछा।

' बाबा हमारे गुरू थे । मुझे दीक्षा महाराज जी ने दी थी.. उन्होंने कहा था कि खूब जाप कीजिए सतत सिमरन के साथ ' साधिका बोली

वृद्ध बोले ' तुम बहुत राम नाम जाप करती हो । बहुत अच्छा है ।'

वह बहुत खुश हुई ।

वृद्ध ने पूछा' क्या तुम आपस में चर्चा करते हो कि कितना जाप किया और महाराज जी के कितने करीब हो'

' जी.. हमतो प्रतिस्पर्धा भी करते हैं और कई बार तो हम दिव्य आदेशों की भी डींग मारते हैं ।

वृद्ध बोले ' राम नाम लेना बहुत सुंदर बात है पर जताना और यह कहना कि महाराज जी ने यह आदेश दिया और वह दिया, गलत है , अहंकार होता है '

‘बाबा से और क्या सीखा ' वृद्ध ने पूछा

' कर्म करना और राम नाम लेते रहना .. और त्याग करना ' साधिका बोलीं ।

बहुत सुंदर और ऊंची चीज़ है यह । अच्छा बताओ क्या क्या त्याग किया तुमने ' वृद्ध ने पूछा ।

' सच बोलूं मेरे वह बड़े इंजिनियर हुए हैं और ऊपर के पैसे लेते थे लेकिन अब यह सब त्याग दिया और उनको मना कर दिया ' साधिका बोली

' अच्छी बात है काला पैसा कलंक भी है और पाप भी । लेकिन तुम्हें त्याग तो लोभ , इच्छा और हमेशा बढ़ती हुई मांगों का करना चाहिए । इच्छा के दीपक में और तेल मत डालो बेटा ' वृद्ध बोले ।

' और क्या सीखा अपने बाबा से और महाराज से बेटा'

महाराज जी कहते हैं ईश्वर की प्रकृति प्रेम है इसलिए मैं सबको प्यार के नज़र से , या सम्मान से देखती हूँ । देखो आप अंजान हो पर फिर भी आपको बैठने दिया और खाना दे रही हूँ ।'

" ठीक है.. प्रेम करते हो जताते भी हो ? अच्छा बेटा बोलो प्रार्थना करते हो ? वृद्ध ने पूछा ।

" जी प्रार्थना तो राम नाम धर्म का कर्म है "

" आज क्या माँगा " वृद्ध ने पूछा ।

" मेरे वह थोड़े मेरे बस में रहें मैंने यह माँगा " यह बोलकर साधिका हंस पड़ीं ।

" हममम ..बेटा तुम्हारे बाबा ने सिखाया था कि दूसरों के लिए प्रार्थना करना और वह भी उसको गुप्त रखना । तुम तो अपने लिए माँग रहे हो बेटा यह ग़लत है " वृद्ध ने कहा ।

" तुम मेरे से ज़्यादा मेरे बाबा को जानते हो " वह क्रुद्ध हो कर बोली ।

" अच्छा बाबा का कहना है कि क्रोध या वाक पर क़ाबू रखना चाहिए । तुम्हें तो यह आता नहीं " वृद्ध ने उकसाया

" अच्छा छोड़ यह बात । बताओ परम गुरू कौन है और सदगुरू कौन है तुम्हारा बेटा "

"तुम कौन हो पूछने वाले! सब कुछ बाबा हैं " चीख़कर साधिका बोली

" परम गुरू राम हैं जो निराकार और ज्योति स्वरूप हैं । तुम्हारे बाबा सदगुरू हैं और सब राम हैं , मैं भी राम हूँ । मैं तुम्हारे बाबा से ज़्यादा जानता हूँ " बाबा मुस्कुराए ।

" आप मेरे से ज़्यादा जानते हो ... " साधिका बोली

और वह रोने लगी ।

वृद्ध बोले " अहंकार को त्यागो । सबसे बड़ा त्याग यह है और मैं ही तुम्हारा बाबा हूँ और तुम्हें गुस्सा दिलाकर यह समझाने आया हूँ कि अहंकार को त्यागो और राम को पाओ " और वे अंतरध्यान हो गए ।

साधिका अहंकार रहित हो गई और परमानन्द में रही और दूसरों के लिए प्रार्थना के लिए ही जीवन व्यतीत किया व प्रार्थना के लिए ही जीं।

***

## *FRAGRANCE OF RAAAM*

*I woke up with fragrance*
*of divine kind*
*With sublime essence*
*As if telling me*
*My Ram knows only to love*
*But we tend to*
*Give this fact a miss*
*Due to our ego and buddhi*
*As argumentative self*
*Ego of logics that we know*
*Make us suffer.*
*He is vishal*
*Like several thousand oceans*
*And every drop of ether*
*Of those cosmic occeans*
*Are filled with eternal love*
*Chaitanya prem lila*
*Which manifests shristi.*
*Just stop questioning*
*Just learn loving HIM*
*Cosmos is filled with divine*
*Fragrance of*
*Ramamaye bhava.*
*Raaaaaaaaaaaaaaauuuuuuum*
*Atmik pranam*
*To your nirakar Sugandha Rupa.*

## *राम की सुगंध*

*मैं आज दिव्य सी सुगंध के साथ उठा*

*जिसका अस्तित्व उदात्त था*

*जैसे कि मुझे बता रहे हों*

*कि केवल मेरे राम को ही*

*प्रेम करना आता है*

*पर हम इस तथ्य को समझने में चूक*

*जाते हैं*

*अपने अहम् व बुद्धि के कारण*

*अहम् के तर्कजन्य अंग के कारण*

*ही हमें कष्ट भुगतते हैं ।*

*वे विशाल हैं*

*कितने हज़ारों महासागर की तरह*

*जो अनंत प्रेम से चैतन्य प्रेम लीला*

*से भरपूर होकर सृष्टि की अभिव्यक्ति करते हैं ।*

*उनपर प्रश्न चिन्ह लगाना बंद कीजिए*

*उनसे प्यार करना सीखिए*

*ब्रह्माण्ड दिव्य राममय भाव से परिपूर्ण है ।*

*राममममममम*

*आपके निराकार सुगंध रूप*

*को आत्मिक प्रणाम*

***

## *A TRAIN TO RAM DHAM*

*He was blessed by Maharishi who gave him Ram Naam Diksha and as if asked him to Travel in Train to reach Ram Dham. SADHANA should be the journey. All the stations will be relating to his past, present and future so he was asked to contemplate on those stations and warned him that if he deboard the train he would miss the train forever! This waa caution and He was given Shree Amritvani and Photo of Shree Shree Swamiji Satyanandji Maharaj Shree which will help him eternally the journey to RAM DHAM.*

*The sadhak boarded the Train Ram Echha. The first Station was AASHA. Well dream, hope and expectations he realized in the station. He also thought of Asha allows success and failures. He also thought what happens with too much of Expectations. Then also realized Asha can be a sublime wish of Meeting Raaum and if alternate is chosen then Asha becomes a craving and leads to fall. The train moved as he sat and thought of Asha he have had or he has now onward. Well option will be his that was a realization at the ASHA station.*

*ERSHA was a small station where Ram Echa stood for him. What are the pitfalls of ersha He was realizing and realized that for this unimportant station people spend their life. ERSHA is worthless for Ram Naam Sadhak.*

*LOBH was next station and halt was big. Well life is all about desire, cravaing, want and lure. From a bad man to saint all suffer from this. This can make a person and break a person. He realized Lobh and Lalasa limit the mind and even diminish the Karma. ENGINE was shunted here so there was alternate of Lobh concept. If he dedicates his lobh for Ram Ram only then he can reduce his mortal craving he thought.*

*KAMA was main station. Everyone faces this. It romances the heart but brings to the basic animal instincts he told to himself. Beauty, lure and craving eats away all sattvik guna he realized during its halt. A lure appeared before the window but Shree Amritvani rescued him as paramshaktiman Shree Ram helped him and blessed him with Sattwik vichar and Bhavna. Procreative element as Shrishti Dharma is fine rest it is a lust that falls for all that is his and more for who are not his. Its a whrilpool event saint become victim. Anachar, bevichar, Akarshan, lobh all these are friends of Kama. SATTVIK Ram naam helps one to fight this evil he realized and trained moved.*

*KRODH was next station with a bigger halt. Karma allows krodh and ego allows its blast. Angry person is dissatified being who vent out frustration through anger of words gesticulation or action. Anger takes the positivism to take back seat. Anger kills soberity and invites conflicts that engage life as a whole Rajaswik guna of anger is hotiness. It kills the tranquiluty of self and others. Anger makes one nearer to animal or pashu bhava. Anger leads to pratardna. Anger*

*gives birth to hate and enemity. Sadhana and Krodh cant go together he realized as the train moved in high speed and he continued to fathom the seed mantra Ram in Shree Amritvani.*

*Next station was junction. It was AHANKAR. well ahankar of self, look, talent, wealth, connection, power, kul or family, spiritual feat and even Sadhana Ahankar have its ill effect was realized. Ahankar or Ego is cause of all mortal success and also the cause of fall are well known. Diminishing Ahankar is the moto of life as everyone looked at him as if he is nothing but insect. This exercise of looking down made him realize that Ahakar is the corest of core of all enemies the self has. I am nothing all is His. I see Raam in all.. he was feeling as the train moved.*

*Next statin was MAYA . Everything is impermenant and Maya. No one relation other tha Ram is yours was proved life after life. MAYA make us victim of false pride and maya is the cause of all our sufferings. There was a snag in train the halt continued for some time. Maya or illusion is asatya was realized. Maya is half truth came to the fore. Maya is fought divinly through Ram Naam jaap was realized by him.*

*It was announced next station is REBIRTH or Punarjanma. So when the station came nearer the train slowed down. He was about to get down. Then a saint appeared before the sadhak and " you have forgotten that your Maharishi told if you get down you will never be able to board this train" Sadhak then said "yes I remember I am saved I would have got down here then I was to take rebirth Dhanyabad Santji" He said. On query Sant explained "you are in RAM ECHAA train it will surely take you to Ram Dham. ENGINE will change now. DO RAM NAAM SIMRAN AND AKJAND JAAP when You get up from RamNaam Sadhana you will merge with me O My Raam" Saint became nirakar as now his Ram Sadhana starts with no station to come now. RAAUUUUM eternally Chugging......*

## राम धाम ले जाने वाली रेल गाड़ी

उसको महर्षि का आशीर्वाद प्राप्त था, जिन्होंने उसे राम नाम दीक्षा दी और राम धाम जाने वाली रेल गाडी में सफर करने को कहा.यात्रा साधना होनी चाहिए। सभी स्टेशन उसका भूत , वर्तमान व् भविष्य दर्शाएंगे , सो उससे कहा गया की उन स्टेशन पर मनन करना और चेतावनी दी गयी की यदि वह रेल गाड़ी से उतरा तो वह रेल गाड़ी सदा के लिए छूट जाएगी। इस चेतावनी के साथ उसे श्री अमृतवाणी व् श्री स्वामीजी महाराज श्री की तस्वीर दी गयी जो उसे राम धाम की अनत की यात्रा में सहायक होंगी।

साधक राम इच्छा नामक रेल गाड़ी पर सवार हो गया।

पहला स्टेशन था : आशा। उसने सपने,आशाएं व् अपेक्षाएं अनुभव की उस स्टेशन पर। उसने सोचा की आशा ही सफलता व् असफलता का कारण हैं। उसने वह भी सोचा कि ज़्यादा अपेक्षाओं से क्या होता है। पर तब उसने यह विचार की आशा एक दिव्य इच्छा भी हो सकती है राम से मिलने के लिए पर अगर नश्वरता का

चयन करें तो वह कामनाएं बन कर पतन का मार्ग ही अवगत करती हैं। रेल गाड़ी चल पड़ी और उसने आशा के बारे में सोचा की कौन सी उसके पास थीं और कौन सी अब है। उसने सोचा की चयन तो अब उसे ही करना है। यह अनुभूति थी आशा स्टेशन की।

ईर्ष्या एक छोटा सा स्टेशन था जहाँ राम इच्छा अब रुकी उसके लिए। ईर्ष्या के नुक्सान देखें।

उसने अनुभव किया की इस महत्वहीन स्टेशन पर लोग सारा जीवन ही बिता देते हैं।राम नाम साधक के लिए ईर्ष्या तो पूर्ण बेकार है ।

लोभ अगला स्टेशन था और यहाँ इंतज़ार ज़्यादा लम्बा था। जीवन इच्छाओं,तृष्णाओं ,कामनाओं व लालसाओं से भरपूर है। एक बुरे इंसान से लेकर संत तक सभी इससे प्रताड़ित होते हैं। उसने अनुभव किया कि लोभ और लालसा मन को सीमित कर देते हैं और कर्मों को भी कम कर देते हैं।

इंजन यहाँ घुमाया गया, सो यहाँ लोभ का दूसरा पहलू भी मिला। यदि वह अपना लोभ व् लालसा राम राम के लिए ही अर्पित कर दे तभी वह नश्वर लालसाओं को कम कर सकेगा।

काम एक मुख्य स्टेशन आया। सभी का इससे सामना होता है। यह हृदय को तो प्रणय करता है किन्तु पशु वृतियों को भी सामने लाता है, उसने अपने को कहा। सौंदर्य ,लालसा,कामना खा जाते हैं सभी सात्विक गुण , उसने यह उस पड़ाव पर अनुभव किया। खिड़की में से एक प्रलोभन आया उसके आगे पर श्री अमृतवाणी जी ने उसकी रक्षा की , और परमशक्तिमान श्री राम ने उसकी मदद की और सात्विक विचारों व भावनाओं की कृपा बरसायी।

सृष्टि धर्म ठीक है किन्तु बाकी सब कामवासना है जो पतन लाती हैं। यह एक भँवर है जिसमें संत भी शिकार को जाते हैं। अनाचार, बेविचार, आकर्षण , लोभ , यह सभी काम के मित्र हैं। सात्विक राम नाम शक्ति देते हैं इस बुराई से लड़ने के लिए, उसने यह अनुभव किया और रेल गाडी आगे बड़ी।

क्रोध अगला स्टेशन था,और बड़े पड़ाव के साथ।

कर्म क्रोध ले आते हैं और अहंकार उसका विस्फोट। क्रोधी मनुष्य एक असंतुष्ट व्यक्ति होता है जो अपनी निराशा क्रोध के द्वारा शब्दों व कृत्यों से बाहर करता है। क्रोध सकारात्मकता को पीछे को धकेल देता है। क्रोध संयम को मार देता है और क्लेश को निमंत्रण देकर जीवन को क्रोध के राजसिक गुना में रूपांतरित कर देता है। वह अपनी व दूसरों की शान्ति को भांग कर देता है। क्रोध पशु भाव के समीप ले जाता है। क्रोध प्रताड़ना एक ले जाता है। वह घृणा व दुश्मनी को जन्म देता है। साधना व क्रोध इकट्ठे नहीं जा सकते, यह

उसने अनुभव किया , जैसे ही रेल गाडी तेज़ी से आगे बड़ी और वह बीज मंत्र राम की गहराई श्री अमृतवाणी में मापने लगा।

अगला स्टेशन जंक्शन था। वह था अहंकार। स्वयं का, चेहरे का ,प्रतिभाओं का ,पैसे का,शक्ति का,कुल का , आध्यात्मिक उन्नत्ति का और साधना के भी अहंकार के दुष्परिणाम उसने अनुभव किये। अहंकार ही नश्वर प्रगति का कारण है और वहां से गिरने का भी। अहंकार को कम करना ही जीवन का लक्ष्य है क्योंकि सब उसे ऐसे देखते जैसे की वह और कुछ नहीं केवल एक कीड़ा हो। दूसरों के इस भाव से उसने यह अनुभव किया कि आत्मा का सबसे मूल से मूल शत्रु अहंकार ही है। मैं कुछ नहीं हूँ , सर्वस्व उसका है। मैं सब में राम देखता हूँ.. उसको ऐसा महसूस हुआ जब गाडी आगे बड़ी।

अगला स्टेशन था माया। सबकुछ नश्वर है और माया है। कोई भी सम्बन्ध आपका नहीं ,केवल राम ही आपके हैं , यह हर जीवन में आपको दिखता है। माया हमें झूठे अभिमान का शिकार बना देती है, और वह ही हमारे दुखों का कारण है। यह पड़ाव पर थोड़ा और रुका गया. माया असत्य है , इसका अनुभव हुआ। माया आध सत्य है , यह सामने आया। माया को राम नाम की दिव्यता से लड़ा जा सकता है , यह उसने अनुभव किया।

घोषणा हुई की अगला स्टेशन है पुनर्जन्म। जब स्टेशन और पास आया और गाडी धीमी हुई , वह उतरने लगा था। एक संत आये और साधक को बोले "तुम भूल गए कि महर्षि ने कहा था कि अगर तुम नीचे उतरे तो तुम वापिस इस गाड़ी में नहीं चढ़ पाओगे। साधक बोला " जी मुझे स्मरण है , मुझे आपने बचा लिया , मैं यहाँ पुनर्जन्म लेने लगा था , धन्यवाद संतजी। पूछने पर संत बोले " तुम राम इच्छा की गाडी में हो , यह तुमहें ज़रूर राम धाम तक ले जाएगी। इंजन अब बदलेगा। राम नाम सिमरन करिये और अखंड जाप , जब तुम राम नाम साधना से उठोगे , तुम मेरे साथ ,ओ मेरे राम, विलीन हो जाओगे। " संत निराकार बन गए क्योंकि अब उसकी राम साधना आरम्भ हुई, अब कोई स्टेशन आगे नहीं।

राम दिव्यता से छुक छुक करता हुआ

***

## *SAINT EXPLAINING RAM NAAM JAAP*

*A Sadhak went to his Guru after a long time to do Guru Vandana.*

*Guru asked "how are you Sarthak?".Sadhak got amazed and with folded hand he asked "how is that you remember me, my name as I am meeting you after a decade or so".*

*Guru smiled "I wished that you kept pride of your name Sarthak!"*

*Sadhak said "from nothing I have become something with your grace...i got these..... ye zindagi sarthak hua Guruji".*

*"Aur Ramji ka Naam sarthak hua! I mean what is the quantum of Jaap you do. DO YOU TAKE RAM NAAM!." Asked the Sant.*

*"As you used to say one can Take Ram Naam when He allows so I take his name and do jaap when He allows. AND ITS UPTO RAM TO COUNT THE JAAP" Sarthak replied with little arrogance.*

*Guru smiled and "yes I said so. Ok just tell me kitna mala jaap letey ho roz". "Sometime 40 mala some time fifty like that" Sadhak replied."bahot acha! ok tell me yesterday how many mala you counted Sarthak" Guru asked.*

*SARTHAK tried hard to recollect and said "Maharaj I got a huge order so just five mala I did in the morning and evening there was a party so I could not do jaap."*

*"That's' fine. Tell me how many minutes or hour you do Ram Naam Simran".enquired the Sant.*

*"May be half an hour or so but in bad days I do simran for two three hours " sarthak candidly quipped.*

*Guru Said "i will not meet you again when you return to this city so I am going to tell you something for whole of life... so let's begin*

*When we say Ram Echa that how many times we are able to do jaap. Well its True Raam Naam is Maha Karma. RAM naam Chintan Simran mano Raamji sey shaksatkar.*

*But when we dont do jaap then we must not misuse our arguments that He is not allowing. Eshwar key darbar mey hamari budhi aur dhoka dadi nai chalti. There cant be a pretext that He is not allowing .Look at yourself you did only 5 mala as you got some huge order and you skipped evg jaap as you were to go to party. So Ram can't be responsible for not doing jaap rather it was your decision and option. So don't take shelter of HIS wish. If you have uncondutional shraddha and submission to Ram then you can't escape His name. Waha to apkey andar ott prot hain.*

*Coming to simran it can't be measured by time. If you do simran,its constant rememberance not ON or OFF. And remembering RAM in GOOD time is more important as He will never leave you in your bad times.*

*Again coming to the point its Ram who should count not me is a wrong notion. Say you took sankalpa of 13 crore jaap and after that you stop counting and you continue the jaap then surely HE would be counting because that is the state of Ajapa Jaap which HE augments and controls. SO DO REACH 13 CRORE RAM NAAM JAAP in as many years you want*

*and thenafter you continue same spirit of Jaap then surely He will count. As each Ram Bhava will be HIS BLESSINGS."*

*"Sarthak ab Ram Naam logey naa, beta bhulogeto nai naa, hamesha mujhey yad rakna Raam ka mandir banalo apney sharir ko, sarthak hoga ye jeevan Ram Kripa Ram kripa".*

## संत ने समझाया राम नाम जाप

एक साधक काफी दिनों के पश्चात अपने गुरू के पास गुरूवंदना के लिए गया।

गुरू ने कहा ' कैसे हो सार्थक'

साधक हैरान रह गया और हाथ जोड़ कर बोला ' आप जानते हैं कि मैं कौन हूं व मेरे नाम भी पता है, मैं तो आपसे एक दशक बाद लगभग मिल रहा हूं '

गुरू मुस्कुराए ' काश तुमने अपने नाम सार्थक की लाज रखी होती '

सार्थक बोला ' मैं कुछ भी नहीं था और आपकी कृपा से अब कुछ बन गया हूं ... देखिए ... यह जिंदगी सार्थक हुई गुरूजी '

और रामजी का नाम सार्थक हुआ ... कितना जाप करते हो तुम... राम नाम जपते हो ' संत ने पूछा

" जैसे आपने कहा था कि हम राम नाम तभी ले सकते हैं जब वे चाहें , तो, जब प्रभु चाहते हैं मैं तब राम नाम ले लेता हूँ । और यह राम के ऊपर है कि वे जाप गिनें " सार्थक ने घमण्ड से उत्तर दिया ।

गुरू मुस्कुराए "हाँ मैंने कहा था । ठीक है बोलो कितना जाप कर लेते हो रोज "

सार्थक बोला " कई बार ४० कई बार ५० माला "

" बहुत अच्छा ! बताओ कल कितनी माला तुमने की सार्थक ?" गुरू ने पूछा ।

सार्थक सोच में पड़ गया और बोला " महाराज कल बहुत बड़ा आर्डर मिला था तो केवल पाँच माला सुबह की और सायं पार्टी  थी तो जाप नहीं कर सका "

संत बोले " ठीक है , कितने मिनट या घण्टे तुम राम नाम सिमरन करते हो ?"

" शायद आधा घण्टा , पर बुरे दिनों में मैं दो तीन घण्टों तक सिमरन कर लेता हूँ " सार्थक ने सीधे भाव से उत्तर दिया।

गुरु बोले " मैं तुम्हें इस शहर में फिर से नहीं मिलूंगा जब तुम यहाँ फिर लौटोगे। मैं तुम्हें सारी ज़िन्दगी के लिए कुछ कहूँगा। .... तो चलो शुरू करें

जब हम राम इच्छा कहते हैं की कितनी बार हम जाप करते हैं। यह सत्य है कि राम नाम महा कर्म है । राम नाम चिंतन सिमरन मानों राम जी से साक्षात्कार ।

पर जब हम जाप नहीं करते तब हमें अपने तर्कों का ग़लत उपयोग नहीं करना चाहिए कि वे नहीं करवा रहे ।ईश्वर के दरबार में हमारी बुद्धी व धोखा धड़ी नहीं चलती ।यह कोई बहाना नहीं हो सकता कि वे अनुमति ही नहीं दे रहे हैं । स्वयं को देखो कि तुमने केवल ५ माला की क्योंकि तुम्हें इतना बड़ा आर्डर मिला और शाम का जाप भी रह गया क्योंकि पार्टी में जाना था। तो राम इसके उत्तरदाईत्व नहीं हो सकते कि तुमने जाप नहीं किया क्योंकि वह तुम्हारा निर्णय था और तुम्हारा चुनाव।

सो परमेश्वर की इच्छा की शरण मत लो। अगर तुममें सम्पूर्ण श्रद्धा व् समर्पण है राम तो तुम उसका नाम लिए बिना नहीं रह सकते। वे तो आपके अंदर ओत प्रोत हैं।

सिमरन को समय से नहीं नापा जा सकता। अगर आप सिमरन करते हैं तो वह सत्तत याद है यह नहीं की कभी है और कभी नहीं। राम को अच्छे दिनों में याद करना जादा ज़रूरी है क्योंकि वे बुरे दिनों में कभी साथ नहीं छोड़ेंगे।

और यह कहना की राम को जाप की गिनती करनी चाहिए मुझे नहीं , गलत धारणा है।

कहो कि तुमने १३ करोड़ का संकल्प लिया और उसके बाद तुमने गिनना छोड़ दिया और फिर जाप करते रहते हो तब तो निश्चय ही राम गिनती करेंगे क्योंकि वह अजपा जाप अवस्था होगी जहाँ वह सब कुछ नियंत्रण करते हैं। इसलिए १३ करोड़ राम नाम जाप तक जितने मर्ज़ी वर्षों में पहुँचो और उसके बाद उसी भावना से जाप जारी रखो तो वे निश्चित ही जाप की गिनती करेंगे । क्योंकि तब हर भाव ही उनकी कृपा होगी ।"

" सार्थक अब राम नाम लोगे न , बेटा भूलोगे तो नहीं न, हमेशा मुझे याद रखना , राम का मंदिर बना लो अपने शरीर को , सार्थक होगा यह जीवन । राम कृपा राम कृपा

***

## *RAM NAAM - an UNDERSTANDING*

*Shree Shree Swamiji Satayand Maharaj Shree ko shat shat pranam jenhoney hamey uddhar kiya, hamey Raam Daan diya, aur jeevan ko nai disha di. Ye lakho janmo kar purashkar hai ki ye sab hua anubhut aur siddha guru janokey chatra chaya mey. Lekin hum insan hain hamari budhi choti hai aur yaddast aur bhi kam. Aaj apney sey kuch baat karta huun is Naam sadhana ke barey mey. Mujhey sakriya rakhna hai apney ko es sadhana mey esiliye apney aap ko fir sey samjha raha hun. Hey Gurujans, Hey Param Guru Avatarit hoyey aur samjhaye mujhey. Naman atmik naman.*

## राम नाम एक मेधा

श्री श्री स्वामीजी सत्यानंद महाराज श्री को शत् शत् प्रणाम जिन्होंने हमारा उद्धार किया, हमें राम दान दिया, और जीवन को नई दिशा दी । यह लाखों जन्मों का पुरस्कार है कि यह सब अनुभूत और सिद्ध गुरुजनों की छत्र छाया में हुआ ।लेकिन हम इंसान हैं हमारी बुद्धी छोटी है और स्मरणशक्ति और भी कम ।आज अपने से कुछ बात करता हूँ इस नाम साधना के बारे में ।मुझे सक्रीय रखना है अपने आप को इस साधना में इसलिए अपने आप को फिर से समझा रहा हूँ ।हे गुरुजन , हे परम गुरू अवतरित होइए और मुझे समझाइए ।नमन आत्मिक नमन।

***

*O Bhakti O Gyan O karma*
*Sabhi Nirakar Hai*
*Sabhi Raam Hai. Sabhi Jyoti hain.*

*O my loving Param Guru*
*You are most subtle Raaam.*
*You are form of all the formless*
*But you are boundary less*
*Anant Raam.*
*You have no figurative Contours*
*So you are within us*
*As icon of eternal light.*
*Beej Mantra Ram*

*SHREE SWAMIJI MAHARAJ SHREE always said is eternal context.*
*You are Divine Supreme*
*yet your entitiy is Ram Naam*
*which is para Shakti*
*And eternal energy that*
*allows all manifestation of Cosmos*
*yet you love your own Name*
*O my Raam.*
*Your naam is path and destiny as well*
*and energy of sadhana too.*
*You are seed of all the seeds*
*that sprouts with your wish*
*we take your name when you wish*
*you allow the sadhana*
*such possesive you are about your naam.*

*You are most loving BHAKTI*
*Again you are Bhakta of your own Naam*
*Such engima you remain*
*Raam the eternal name remains*
*Terms of reference for*
*Universal knowledge.*
*Again your Naam is gati*
*at cosmic level*
*Karma for us.*
*Raam Naam allows our*
*Karma, chintan and brings*
*Chaitnya bhava with begetting Gyan.*
*Ram Naam is key of*
*All that is eternal*
*All that is universal*
*such is the divine grace hidden*
*in this beej mantra Raam.*

*Naam Sadhana allows*
*the blissful sprouting.*
*I the ego is first sacrificed*
*and Ram and Ram in me and all be*
*the concept of our living.*
*Ultimate Shraddha for Gurujans*
*Permanent astha in Raam*
*And constant Rememberance of Him*
*As Ram Naam Simran*
*Can take us to realize self*

*As HIS TEMPLE*
*Where Nirakar Ram Jyoti Swarup*
*Entity of Ramamayeness is realized.*

*Ram Bhava Jaapa maye life*
*Is the prescription for Ram Naam Sadhak.*
*Absolute trust and eternal submission*
*Bring us closure to Ram Tattwa.*

*Hey Gurujans*
*Mend our behaviour*
*Correct our thinking*
*Make us slave of your Name*
*Hey Param Guru Raaam.*
*Give us Bhakti Maa*
*Give us Shakti Maa*
*Give us Sadhana Maa*
*Give us Siddhi of prarthana Maa*
*You are my loving Maa*
*My eternal Raaaaaaauuuum*
*Hey gurujans keep me always beneath*
*Your feet and bhavamaye web of*
*Raaaaaaaaaaauuuum.*

*ओ भक्ति ओ ज्ञान ओ कर्म*

*सभी निराकार हैं*

*सभी राम हैं । सभी ज्योति हैं ।ओ मेरे प्यारे परम गुरू*

*आप सबसे सूक्ष्म राम हैं ।*

*आप सभी निराकार के स्वरूप हैं*

*पर आप सीमा रहित हैं अनंत राम ।*

*आपके कोई भी अलंकृत आकृति नहीं है*

*आप हममें एक दिव्य प्रकाश की मूर्ति के रूप में समाए हैं ।*

*बाह्य प्रसंग में श्री स्वामीजी महाराज श्री ने राम को सदा बीज मंत्र कहा।*

*आप दिव्य परमेश्वर हो*

*पर फिर भी आपका अस्तित्व राम नाम है*

*जो पराशक्ति है*

*एक दिव्य शक्ति जो*

*ब्रह्माण्ड को प्रत्यक्ष होने की अनुमति देती है*

*पर फिर भी आप अपने नाम से बहुत प्रेम करते हो।*

*आपका नाम मार्ग है व लक्ष्य भी है*

*और साधना की शक्ति भी।*

*आप हर बीज के बीज हो*

*जो आपश्री की इच्छा से अंकुरित होते हैं*

*जब आपश्री की इच्छा हो तभी हम आपश्री का नाम ले सकते हैं*

*साधना की अनुमति भी आप ही देते हैं*

*ऐसे स्वामीगत हैं आप अपने नाम के लिए।*

*आप ही सबसे प्रेममयी भक्ति हैं*

*और आप ही भक्त हैं अपने नाम के*

*ऐसी पहेली हैं आप*

*शाश्वत राम नाम*

*सार्वभौमिक ज्ञान के लिए*

*सदा विचारार्थ विष्य रहता है ।*

*आपश्री का नाम ब्रह्माण्डिय*

*स्तर पर गति है*

*और हमारे लिए कर्म ।*

*राम नाम कर्म, चिंतन की अनुमति देते हैं*

*व ज्ञान को पाने के लिए चैतन्य भाव देते हैं ।*

*राम नाम कुंजी है*

*सर्व शाश्वत्ता की*

*सार्वभौमिकता की*

*इस बीज मंत्र राम में*

*ऐसी दिव्य कृपा छिपी है ।*

*नाम साधना आनंद को अंकुरित करती है ।*

*मैं, अहंकार का सबसे पहले त्याग होता है*

*और राम नाम मुझ में व सभी में हैं*

*यह हमारे जीवन का आधार बनता है ।*

*गुरुजनों के लिए सम्पूर्ण श्रद्धा*

*राम में स्थायी आस्था*

*और उनका सतत सिमरन*

*क्योंकि राम नाम सिमरन*

*हमें स्वयं से अवगत करवा सकता है*

*कि यह राम का मंदिर है*

*जहाँ ज्योति स्वरूप निराकार राम*

*राममय भाव के आधार का अनुभव होता है ।*

*राम नाम साधक के लिए*

*राम भाव जापमय जीवन ही औषधि है ।*

*सम्पूर्ण विंश्वास और अनंत समर्पण*

*हमें राम तत्व के समीप ले आता है ।*

*हे गुरुजन*

*हमारे व्यवहार को सुधारिए*

*हमारी सोच को ठीक कीजिए*

*हमें अपने नाम का दास बना लीजिए*

*हे परम गुरू राम ।*

*माँ कृपया हमें भक्ति दीजिए*

*माँ कृपया हमें शक्ति दीजिए*

*माँ कृपया हमें साधना दीजिए*

*माँ कृपया हमें प्रार्थना की सिद्धी दीजिए*

*आप मेरी प्यारी माँ हैं*

*मेरे अनंत राम*

*हे गुरुजन कृपया मुझे सदा अपने श्री चरणों में*

*तथा राम के भावमय जाल में रखिएगा ।*

*****

*Ram Naam has most beautiful vibration of cosmos. Hear it's Shree Naad with atmik ears that can perceive anahad naad. Sublimity is being part of that naad and not just perceiver or enjoyer of Raam Naad.*

*राम नाम के पास ब्रह्माण्ड की बहुत सुंदर तरंगें हैं । उन्हें सुनिए, वह श्री नाद है, आत्मिक कर्णों से श्रवण करें जो अनहद नाद महसूस कर सकतें हैं । दिव्यता नाद का अंग बनने में है न कि केवल राम नाद को महसूस करने में या उसका आनंद उठाने में ।*

*****

## *Eternal Entity Raaum*

*Ram my nirakar eshta*
*You are eternal supreme*
*You are sublime Jyot*
*From you Ram prem flows*
*So sublime swarup your are*
*O my param priya*
*Prem swarup Raaauuum.*

## *दिव्य सत्ता राम*

*राम मेरे निराकार ईष्ट*

*आप परम शाश्वत हैं*

*आप उदात्त ज्योत हैं*

*आपसे ही राम प्रेम बहता है*

*आपश्री इतने उदात्त स्वरूप हैं*

*ओ मेरे परम प्रिय*

*प्रेम स्वरूप राममममम*

*****

## *PRAYER UNTO THOU O MY RAAAAAUM*

*I bow to thee*
*Million times*
*I worship you O my lord*
*You are most merciful supreme*
*O my Raauum.*

*You are potent cosmic energy*
*You are all pervading and all powerful.*
*I dont worship you for your power*
*But ur power to create, care and heal*
*As you teach all who has power*
*To use them for care, love and mercy.*
*This I learn from you O my Raaum.*
*You are sarvashaktimatey..*

*In this pious sandhya I bow to you*
*Million and million times*
*as your mercy*
*Has taught*
*that every breath is for you*
*And must be spend for your creations*
*Your mission for sadhaks*
*Your charted path for their salvation.*
*Such is the eternal love*
*you teach O my Maa.*
*Your mamata makes me cry*
*As my lips quiver*
*And heart reaches out to those*
*As eternal cosmic whisper of prayer*
*For all entities and souls....*
*Suffering in hospital or alone*
*In heart, body or mind*
*Pain spreads...*
*Pardon them all O my Maa*
*You are most karunamayi.*

*My Raam is so powerful*
*That all Ram Naam Sadhak*
*Are powerful Shakta*
*As Maa Shakti Resides in them*
*So they help and held the hand of feeble*
*Give power who are feeling they are weak*
*But in reality they are not*
*As they are children of divine.*
*Raam resides in all girls and women*
*They are Maa shakti they are*
*Sarvashakti mayi*
*Yet Raaaaaum in them.*
*Rever them teir words of prayer*
*Do wonder in this world.*
*Respect those souls*
*Who are upto Ram naam sewa*
*And toil silently*
*Yet spread solace and bliss*
*Of Raaaaaaauuum*

*Such be the bliss O my Raam*
*This sandhaya gives power to all*
*Eternal strength vibrates*
*And solace as light reaches*
*to even Unknown shaded areas.*
*Raam Naam sadhaka are asadharan*
*Have complete Trust in HIM*
*in this sandhya*
*As star glitters*
*Gurujans are blessings*
*Look up*
*they are smiling*
*Wipe your tears*
*Bring smile back*
*Be in Ram Naam bhava*
*The world transforms*
*As your prayers are heard*
*Your taap is cared and valued*
*Your aradhana is received*
*Ram merges in your Simran*
*Such is Ramamay Grace*
*Such is your prayer*
*Such is your Sadhana*

*O my dear Ram Naami Sadhaks*
*Shree Swamiji Maharajji is smiling*
*Param Guru Raam*
*Graces all cosmic satcitananda*
*Such loving is My Raam*
*My raaaaaaaaaaaaaauuuum.*

## *मेरे राम आपके लिए प्रार्थना*

*मैं नतमस्तक हूँ*

*करोड़ों बार*

*मैं आपकी आराधना करता हूँ मेरे प्रभु*

*आप सबसे परम क्षमावान हैं ओ मेरे रामम ।*

*आप प्रबल दिव्य शक्ति हैं*

*सर्वव्यापक व सर्वशक्तिमान हैं ।*

*मैं आपकी उपासना आपकी शक्ति के लिए नहीं करता*

*अपितु आपकी शक्ति रचना, देखभाल व आरोग्यता के लिए*

*उपयोग करूँ*

*क्योंकि आप ने सिखाया है कि*

*जिनके पास शक्ति है उन्हें वह दूसरों*

*की देखभाल , प्रेम व क्षमा के लिए ही*

*उपयोग करने के लिए है ।*

*यह मैंने आपसे सीखा है ओ मेरे राम ।*

*आप सर्वशक्तिमते है ....*

*इस पावन संध्या पर मैं करोड़ों व करोड़ों बार*

*आपको नतमस्तक होता हूँ*

*आपकी कृपा ने सिखाया है कि हर*

*स्वाँस आपके लिए ही है*

*और आपकी ही रचनाओं के लिए ख़र्च*

*करनी है*

*आपकी विशेष कार्य साधकों के लिए*

*आपके द्वारा उनकी मुक्ति का नियुक्त किया गया पथ ।*

*ऐसा दिव्य प्रेम आप सिखाती हैं ओ मेरी माँ*

*आपकी ममता मुझे रुला देती है*

*मेरे अधर काँपते हैं*

*और हृदय उन सब आत्माओं के द्रवित होता है*

*जो हस्पतालों में या अकेले यातनाएँ सहन कर रहे हैं*

*हृदय, देह या मन में पीड़ा फैलती है ...*

*उन सब को क्षमा कर दीजिए ओ मेरी माँ*

*आप सबसे करुणामयी हो*

*मेरे राम सर्वशक्तिमान हैं*

*कि सभी राम नाम साधक*

*शक्तिशाली शक्ता हैं*

*क्योंकि माँ शक्ति उन में विराजमान है*

*वे सेवा करते हैं और कमज़ोर का हाथ पकड़ते हैं*

*और उनको शक्ति देते हैं*

*जो स्वयं को कमज़ोर समझते हैं*

*पर यथार्थ में वे कमज़ोर नहीं हैं*

*वे परमेश्वर की संतान हैं ।*

*राम सभी कन्याओं व स्त्रियों में*

*विराजमान हैं*

*वे माँ शक्ति स्वरूप हैं*

*वे सर्वशक्तिमान हैं*

*पर राम हैं उनमें ।*

*आदर करिए उनका*

*उनकी प्रार्थनाएँ बहुत अचम्बित कर देती हैं ।*

*जो आत्माएँ राम सेवा में कार्यरत हैं*

*और चुप चाप मेहनत कर रही होती हैं*

*पर फिर भी राममममम का*

*शांति और आनन्द विस्तृत*

*करती हैं उनका भी आदर कीजिए*

*यह संध्या सब को शक्ति देती है*

*दिव्य शक्ति की कंपन होती है*

*और शांति मिलती है जैसे प्राकाशमय*

*अज्ञात अंधकार के क्षेत्रों में पहुँचता है ।*

*राम नाम साधक असाधारण है।*

*पूर्ण रूप से उसमें इस संध्या में विश्वास करिए*

*जैसे तारे चमकते हैं*

*गुरूजन कृपा बरसा रहे हैं*

*देखिए ऊपर*

*वे मुस्कुरा रहे हैं*

*आँखें पोंछिए*

*और अपनी मुस्कुराहट वापिस लाइए*

*राम नाम भाव में रहिए*

*संसार में रुपांतरण आता है*

*जैसे आपकी प्रार्थनाएँ सुनी जाती हैं*

*आपके तप की क़दर है*

*आपकी आराधना स्वीकार होती है*

*राम आपके सिमरन के साथ ऐक्य करते हैं*

*ऐसी है राममय कृपा*

*ऐसी है आपकी प्रार्थना*

*ऐसी है आपकी साधना*

*ओ मेरे राम नामी साधक*

*श्री श्री स्वामीजी महाराजश्री मुस्कुरा रहे हैं*

*परम गुरू राम समस्त ब्रह्माण्ड के सच्चिदानंद*

*कृपा बरसाते हैं*

*ऐसे प्यारे हैं मेरे राम*

*मेरे राममममममम*

***

*Ram Ras Mey Rasley Ram*
*Prem Ras mey Rasley Raam*

*राम रस में रस ले राम*

*प्रेम रस में रस ले राम*

***

## ***Ram Naam Siddhi***

*Hey Aradhya Raam Shree Naad*
*Give me etetnal Bhaav O my Raam.*
*With intensed emotion*
*when we do simran*
*The body electrifies with consciousness.*
*Jeevatman establishes connect*
*With Atman bodh*

*Such is Ram Raam Naaaam Jaap*
*And Bhava Bhakti*
*Aradhana of Shree Naam Ram.*
*Ram Naam the cosmic energy field*
*When runs through the jaap mala*
*There blast the eternal light within*
*Which is arupa jyoti*
*That is eternal brilliance.*
*The consciousness of Raam Shakti*
*Then runs on the body*
*That nullifies body and*
*malefic intends of body instincts*
*And even indriya..*
*Moha and maya diminishes.*
*Eshwar prem awakens*
*This bhava indicates*
*your Ram Naam Siddhi yatra*
*To prove this sadhana pray for others*
*Cry for others*
*Stand by them who are abondoned*
*Nurture the divine mind*
*Who may be challenged*
*and even suffer*
*One will realize Ram is within*
*and healing world be seen outside*
*such Is Ram Naam Sadhana that connects immortal aur akshay Raam*
*That is purest selflless prem bhava*
*Shakti upasana of*
*RAM naam*
*Which ensures siddhi*
*Provideded we completrly diminish*
*Our ego and surrender to Raaam*
*As param Satya Param Dhyan*
*And Param Dhaam*
*Raaaaaasaaaaaaaaaaaaauuuuum.*

## ***राम नाम सिद्धी***

*हे अराध्य राम श्री नाद*

*ओ राम मुझे अनंत भाव कृपया प्रदान कीजिए*

*गहरे भावों के साथ जब हम सिमरन करते हैं*

*तो शरीर में चेतना के साथ बिजली कौंध जाती है ।*

*जीवात्मा आत्मबोध के साथ संबंध स्थापित करता है*

*ऐसे हैं राम, और श्री नाम राम की*

*यह है राम नाम जाप और*

*भाव भक्ति आराधना ।*

*राम नाम एक ब्रह्माण्डीय ऊर्जा क्षेत्र*

*जो जाप माला से होता हुआ अनंत प्रकाश*

*भीतर बिखेरता है जिसे अरूपा ज्योति कहते हैं*

*और वो शाश्वता की प्रतिभा कही गई है ।*

*राम शक्ति की चेतना फिर शरीर से होकर*

*जो शरीर के अस्तित्व को ही समाप्त कर दे*

*और उसके सहज ज्ञान व उसकी इंद्रियाँ तक...*

*मोह और माया सब घट जाता है ।*

*ईश्वर के प्रति प्रेम जागृत होता है*

*यह भाव आपकी राम राम नाम की*

*सिद्धी यात्रा को दर्शाता है*

*इसको सिद्ध करने के लिए*

*दूसरों के लिए प्रार्थना कीजिए*

*उनके लिए अश्रु बहाइए*

*जो ठुकराए हुए हैं उनका साथ दीजिए*

*दिव्य मानस का पालन पोषण कीजिए*

*जो कष्ट भोग रहे हैं*

*तब यह एहसास होगा कि राम भीतर हैं*

*और नीरोग्य जगत बाहर है*

*ऐसी है राम नाम साधना जो अनश्वर और अक्षय राम*

*का संबंध स्थापित करती है*

*यह सबसे पवित्र प्रेम भाव है*

*राम नाम की शक्ति उपासना का*

*जो सिद्धी सुनिश्चित करती है*

*यदि हम अपना अहंकार पूर्ण रूप से कम कर दें*

*और राम को सर्वस्व समर्पित कर दें*

*क्योंकि परम सत्य परम ध्यान*

*और परम धाम हैं*

*राम*

*****

## ***Maan Ki MaanKa Raaam***

*There is an invisible mala*
*That has garlanded our heart*
*By Guru Sadhana Shakti*
*Raam Naam during shakshatkar.*
*Go back to that time space*
*When alaukik Ram got seated in you.*
*Ram Avataran is Naad Avataran*
*Ram Avataran is Bhav Avataran*
*RAM Shakshatkar is Ram Jyoti.*
*The maha mahima of Ram Naam*
*Were realized by by Great Saints*
*All the learned,yogi and intellectuals*
*Submitted to this Bhav bodh Raaam*
*As every bead of Ram Naam jaap*
*Is gem in the aradyas heart.*
*Journey from mannka to manaka*
*Is bava anubhut, adbhut, alaukik ram,*
*Which the heart knows*
*Thst heartCounts Ram Ram*
*with every bit of pulse*
*And mind gets light up with wellness*
*And sublime eternal glow.*
*Such is Maan ka mannak*
*Hey my Raaaaaaaaaaaaaauuuum.*

***मन की मनका राम***

*साक्षात्कार के दौरान*

*एक अदृश्य माला*

*गुरूशक्ति के द्वारा*

*हमारे हृदय को हार पहनाती है।*

*उस समय में वापिस जाइए*

*जब अलौकिक राम को आपमें*

*विराजमान किया था*

*राम अवतरण नाद अवतरण है*

*राम अवतरण भाव अवतरण है*

*राम साक्षात्कार राम ज्योति है*

*राम नाम की महा महिमा*

*बहुत बड़े बड़े संतों ने अनुभव की*

*सभी ज्ञानी, योगी व बुद्धिजीवी*

*भाव बोध राम पर समर्पित हुए*

*क्योंकि राम नाम जाप का हर मनका*

*एक मणि की भाँति अरदास करने वाले*

*के हृदय में रहता है*

*मनके से मनके तक की यात्रा*

*भाव अनुभूत, अदभुत व अलौकिक*

*राम.. जिसका हृदय को ज्ञात है*

*और वह ही हर नाड़ी के साथ राम राम की*

*गिनती करता है और मन, सद्भावना व दिव्य अनंत*

*तेज़ के साथ प्रकाशित हो उठता है ।*

*एसा है मन का मानक*

*हे मेरे राम*

***

## *SHREE ARADHYA RAAM*

*Let our mind smear in Ram Naam*
*Ram is our Aradhanana*
*Ram is our Sadhana*
*RAM is our Aradhya*
*RAM is our Siddhi.*
*Ram is Netarine flow*
*Which emits out of Jaap Sadhana.*
*Raam with its eternal shakti*
*Resides in naam dharan*
*Which is sublime emotions*
*Felt as juice in the atman bodh*
*And realized through jeevatman*
*As nectarine Raam acts upon us*
*And we manifest in Ram Sadhana*
*As auto elevation*
*Such is bliss and blessings*
*Of Aradhya Raam and resultant of*
*SHREE NAAM JAAP.*
*O my Raaaaaaaaaaaaaaauuum.*

## *श्री आराध्य राम*

*हमारे मानस पर राम नाम का लेप लगने दो*

*राम हमारी आराधना हैं*

*राम हमारी साधना हैं*

*राम हमारे आरध्य हैं*

*राम हमारी सिद्धी हैं।*

*राम मधुमेह का प्रवाह हैं*

*जो जप आराधना स्कंदन करती है।*

*राम अपनी अनंत शक्ति से दिव्य भावों के रूप में*

*नाम धारणा में निवास करते हैं*

*जो आत्म बोध में रस की भाँति महसूस होते हैं*

*व जीवात्मा द्वारा प्रबुद्ध होते हैं।*

*जब मधुमेह राम हम पर कार्य करते हैं*

*और हम राम साधना में स्वयं के उत्थान को प्रत्यक्ष करते हैं*

*आराध्य राम का ऐसा आनंद व कृपा बरसती है*

*जो कि श्री नाम जप का ही परिणाम स्वरूप है ।*

*ओ मेरे राम*

*****

*Shree Swamiji Maharaj shree told us*

*In Shree Ram Durbar*
*One should choose an obscure corner*
*Though amidst all the sadhaks*
*Keeping Raaam inside*
*Having controlled mind*
*And with Maun bhava within*
*It spells out silence.*
*Touch of Shree Raam*
*Comes from drishti*
*Looking at*
*Shree Shree Adhistanji*
*Then Ram dhun cleanses*
*the body and mind*
*Which brings oneness and Unification*
*With Raaaaaaaaaaaaaaauuuuuuum.*

*श्री स्वामी जी महाराज श्री ने हमें बताया कि*

*राम दरबार में*

*एक अव्यक्त कोना ले लें*

*सभी साधकों के बीच*

*राम को अंदर स्थापित किए हुए*

*मन पर नियंत्रण किए हुए*

*अंतर में मौन भाव रखे*

*वह शांति प्रदान करता है ।*

*श्री राम का स्पर्श*

*श्री अधिष्ठान जी को निहारने से होता है*

*और राम धुन मन व शरीर को पावन कर देती है*

*जो कि राम के साथ*

*एक्य व मेल ले कर आता है ।*

*****

*Maha mantra Raam eternally resounding in Akash in Maun we get that sacred vibration which does suddhi karan of atman.raaaaaaaauuuuum.*

मौन में जब महामंत्र राम दिव्यता से आकाश में गूँजता है तब हमें वह पावन तरंग महसूस होती है जो आत्मा का शुद्धीकरण करती है ।

*****

*Divine whispers are constant in the universe sometime we hear them in Maun state as getting the CONNECT is sadhana.*

*In Maun allow the mind to float as white cotton like clouds move on the sky. Deeper you go and realize that cloud itself is sky. Similarly bhavamaye raam chintan is at times cloud at times it time its blue horizon. The bigger picture of maun dhyan is connect to CONSCIOUSNESS and realizing self as floating clouds in the Ramamaye Aakash.*

ब्रह्माण्ड में दिव्य वचन सतत होते हैं, कई बार मौन के दौरान उन्हें सुनना का मतलब है संयोजक पाना और यही साधना है ।

मौन में मन को बहने दो, एक सफ़ेद कपास की भाँति , जिस तरह बादल आकाश में तैरते हैं । जैसे आप गहरे जाएँगे आप अनुभव करेंगे कि बादल ही आकाश है । इसी तरह भावमय राम चिंतन बहुत बार बादल की भाँति नीला क्षितिज बन जाता है । एक बड़े पैमाने पर मौन ध्यान है चेतनता से जुड़ना और स्वयं को बादलों की भाँति राममय आकाश में तैरते हुए अनुभव करना ।

***

*Consciousness of Gurutattwa gets connected when we cease to think and don't try to stop thinking in the Maun. Let loose in guru bhava make us rich in our consciousness. Anahad Raam and antar karan of Guru Bhava bridges the universal mind even for few seconds. That's Guru Kripa.*

जब हम सोचना बंद कर देते हैं तब गुरूतत्व की चेतनता जुड़ जाती है तथा इसलिए मौन में सोचने को बंद न करें । गुरू भाव में अपने आप को खोल देने से हम अपनी चेतना में समृद्ध हो जाते हैं ।अनहद राम और गुरू भाव का अंतःकरण सार्वभौमिक मन से कुछ सैकंड के लिए जोड़ देता है । यही गुरू कृपा है ।

****

*When silence visits you then remember Ram is willing to do Maun Sadhana in you and with you. Bahot sey shabd ko nishabda reheney do. Maun mannan sey shuru karkey Maun tapasya tak jana hai...*

जब शान्ति आपसे भेंट करने आती है तो स्मरण रहे कि राम आपके भीतर आपके संग मौन साधना करने के लिए तैयार हैं । बहुत से शब्द को निःशब्द रहने दो ।मौन मनन से शुरू करके मौन तपस्या तक जाना है.....

****

## *JOURNEY OF MAUN SADHANA*

*Maharshi Swami Dr Vishwa Mitterji Maharahji once said that "Enough we have talked. Now we need to silence this SHOR and Ram Naam aradhana makes it possible".*

*It is true, barring the need of professional communication and social talk, we keep on talking all the time and it mirrors our mind which just do not know anything but think and talk everthing under the sky and this process creates hindrances of focussed contemplation. Moreover being talkative we loose lot of our energy apart from getting wrongful indulgence in gossip, unwanted criticism and becoming judgemental about things and people around. Thus our nature of Overuse of Vak poses hindrances for our Ram Naam Sadhana as well.*

*Maun Sadhana and Ram chintan do help us in our regular life apart from realizing its zenith in Sadhna Satsang.*

*Maun Sadhana journey upto Maun Tapasya and then one begets siddhi which is Maun Chaitanya Bhava. Keeping these thought in mind if we walk few steps in everyday life towards Maun Dharana or conscious contemplation on Maun can set our journey of unique Ram Naam Maun Tapasya. It tames our "mad horse" like mind or buddhi and instinctively aberrant nature are streamed towards pure bhava.*

*Ram Naam bliss or chitanya bhava smear the body and mind. As if gurujan applying Chandan on our third eye. Then streamed thought within Ram Bhava controls the sound of rioutious thought within. The measured chintan controlled vak becomes reality after constant or regular Ram Naam Maun Sadhana.*

*You do think enough and speak enough but allow Ram to think in you and talk through you. The beauty of Vak and sublimity of thought is just a maun away. Let we allot some time to Ram Naam Maun Sadhana for experincing Raam chaitanya. RAUUUUUM.*

## मौन साधना की यात्रा

महर्षि स्वामी डॉ विश्वामित्र जी महाराजी ने एक बार कहा " बस बहुत बोल लिया। अब हमें इस शोर को शांत करना है और यह राम नाम आराधना सम्भव बना सकता है। "

यह सत्य है कि काम काज में बात चीत व सामाजिक वार्तालाप के अलावा , हम हर समय बोलते रहते हैं और वह हमारे मन में प्रतिबिम्बित होता है, जिसे और कुछ भी नहीं आता पर केवल सोचना और हर सम्भव बात करना ,पर यह प्रक्रिया, केंद्रित मनन के लिए बाधा बन जाती है। वाचाल होने से हम अपनी बहुत सी शक्ति खो देते हैं और दूसरी तरफ़ हम ग़लत जगह चुगली, बिन माँगे कटाक्ष व अपनी ओर से लोगों व चीज़ों के प्रति

ग़लत अनुमान लगाने का अतिभोग कर देते हैं । इसलिए हमारी ज़रूरत से ज़्यादा बोलने की प्रवृति हमारी राम नाम साधना में बाधक ही सिद्ध होती है ।

मौन साधना व राम चिंतन हमारी मदद करते हैं हमारी रोज़मर्रा की ज़िंदगी में और दूसरी ओर , साधना सत्संग में इसकी परम गरिमा का अनुभव किया जाता है ।

मौन साधना की यात्रा मौन तपस्या तक और फिर हमें प्राप्त होती है सिद्धी जो कि मौन चैतन्य भाव होता है । इन विचारों को मन में रख कर अगर हम हर रोज़ कुछ क़दम मौन धारणा या मौन पर जागृत मनन की ओर बढ़ाते हैं तो वह एक अद्‌वितीय राम नाम मौन तपस्या की यात्रा की ओर हमें अग्रसर कर देगा । वह हमारे " पागल घोड़े" जैसे मन या बुद्धि को नियंत्रित कर देगा और स्वाभाविक ग़लत गतिविधियों के स्वभाव की धारा को पवित्र भाव की ओर मोड़ देगा ।

राम नाम आनंद या चैतन्य भाव शरीर व मन को लिप्त कर देता है । ऐसे जैसे कि गुरुजन हमारी तीसरे नेत्र पर चंदन लगा रहे हों । तब राम भाव की विचार धारा भीतर कोलाहल करते हुए विचारों को नियंत्रित कर देगी ।सतत मौन साधना से , नपा तुला चिंतन व नियंत्रित वाक एक सच्चाई बन जाते हैं ।

क्या आप काफ़ी सोचते हैं और बोलते हैं ? पर अब राम को अपने अंदर सोचने दीजिए व आपके द्‌वारा बोलने दीजिए । वचन की सुंदरता और विचारों का उदात्तपन केवल मौन की दूरी पर है । चलिए हम कुछ समय राम नाम मौन साधना को दें ताकि राम चैतन्य को अनुभव कर सकें । राम

***

*Shree Shree Swamiji Maharaj Shree*
*taught us that RAM naam is eternal beauty.*
*In Timeline or in Timelessness*
*Raaamamay saundarya always remained.*
*Cosmic like Beauty Ram Naam simmers*
*Raam naam in Vak and Vision*
*Remain such sublime that even the form*
*Of fomless bespeak in eternal sublimity.*
*The eternity of love Ram Naam invokes*
*That turns our mind manifestation inward*
*Antarsharanam raaamam*
*Ananta madur Raaaaaaum Raaaaaaaauum*
*The beauty of Raam is in Maun*
*In deepest maun manas sthiti*
*Where Anhad Raaaaum sounds.*

*श्री श्री स्वामीजी महाराश्री*

*ने हमें सिखाया कि राम शाश्वत सौंदर्य है ।*

*समय रेखा में या समयातीत में*

*राममय सौंदर्य सदा रहा है ।*

*दिव्य स्वरूप सुंदरता राम नाम गुनगुनाता है*

*राम नाम वाक् व द्दष्टि में ऐसे उदात्त रहते हैं कि*

*निराकार का स्वरूप भी दिव्य उदात्तता के विषय में बोलने लग जाता है ।*

*राम नाम दिव्य प्रेम को जागृत करता है*

*जो हमारे मन की मनोवृत्ति को अंतर्मुखी करके*

*अंतरशरणम् राम*

*अनंत मधुर राममममम राममममम*

*राम का सौंदर्य मौन में है*

*सबसे गहरी मौन स्थिति*

*जहाँ अनहद राम गूँजता है ।*

*****

*O My Raaaum*
*You are only and only*
*Most loving thing I have*
*Your Naaam Hey Raaaaaum.*
*You are stream of realized Love*

*You are Sublime*
*You are eternal Jyot*
*O my Raaaaaaaaaaaaauuuum*

*So loving your name that my lips smiles*
*And heart dances mind does tandava*
*every where I see my Guru*
*Every light is You and all are Raaaaaaam*
*Such loving Jyot you are O my Raaaaauuum.*

*ओ मेरे राम*

*केवल और केवल आप ही*

*मेरी सबसे प्यारी चीज़ हैं*

*आपका नाम हे राममममम*

*आप अनुभूत प्रेम की धारा हो*

*आप उदात्त हो*

*आप दिव्य ज्योत हैं*

*ओ मेरे रामममममममममम*

*इतने प्यारे हैं आप कि मेरे अधर मुस्कुरा उठते हैं*

*और मेरा हृदय नृत्य करता है और मन तांडव*

*हर तरफ़ मुझे मेरे गुरू दिखते हैं*

*हर प्रकाश आपसे है और सब राममममममम है*

*ऐसी प्यारी ज्योत हो आप ओ मेरे राममममममममम.*

*****

*O lord of lords*
*O my Raaaaum*
*You reside in self.*
*Then self manifests*
*Becomes param dham*
*Of eternal Prem of Raaam.*
*Ram Naam the word itself*
*Is Pure mode of celestial sandhi*
*Or conjunction was taught by Sadguru*
*Shree Shreee Swamiji Satyananji Maharaj Shree.*
*Raauum blesses as He awaits to meet us in purest form of param Prem*
*Raaaaaaaaaaaaauuuuuum.*

*ओ मेरे देवों के देव*

*ओ मेरे राममम*

*आप आत्मा में विराजते हैं*

*और आत्मा अभिव्यक्त होकर*

*राम के दिव्य प्रेम का परम धाम*

*बन जाता है ।*

*राम नाम का शब्द ही*

*दिव्य संधि या संयोजक*

*का पवित्र साधन है*

*ऐसा हमारे सद्गुरू श्री श्री स्वामीजी सत्यानंद जी महाराजश्री*

*द्वारा सिखाया गया ,*

*राम हमें आशीर्वाद देते हैं*

*व परम प्रेम के सबसे पावन रूप में हमारा इंतज़ार करते हैं*

*राममममममममममममममम*

***

## *Even RAAM can't help us if we have TRUST DEFICIT.*

*If we dont trust the self and doubt others and loose complete VIshwas in Gurujan and Parmeshwar especially in our rainy days then nobody can help us.*

*Its time to repair your trust deficit. VISHWAS rebuilds a person. 100% surrender to Guru and Param Guru are just SILENT pre-requisites. Mending mind and bridging minds meaning RAAM Setu is possible when we are ANTARMUKHI with ABSOLUTE FAITH IN RAAM. Raaaaaaaaaaauuuuuum give us eternal understanding that its GURU VACHAN and DYNAMIC JYOTI of RAM matters and nothing else.*

*So do halt. Check that no Trust Deficit at play in the Self. EGO must not boast. If yes, correct and mend the self. Our Gurujans are most loving and surely empower you back with Complete Vishwas and Shraddha.Awakened Raaaaaaam is within us, feel Him, experience Him, Love Him in Maun, but don't boast or preach. As we fall when we behave as learned demi gods and pretend.*
*Extreme Silence teaches us how not to question HIM and pardon all who wishes to mend and experience SATCHITANANDA. RAAAAAAAAUUMMMM*

## राम भी हमारी मदद नहीं कर सकते यदि हमारे में विश्वास का अभाव हो ।

यदि हम स्वयं पर विश्वास नहीं करते और संशय करते हैं तब गुरूजनों व परमेश्वर के प्रति पूर्ण विश्वास खो देते हैं ख़ासकर दुख के दिनों में पर तब कोई हमारी मदद नहीं कर सकता ।

अब समय है कि हम अपने विश्वास के अभाव को सुधारें । विश्वास इंसान को फिर से बना देता है । गुरू व परम गुरू के प्रति १००% समर्पण मौन पूर्व आवश्यक तथ्य हैं । मन को सुधारने और जोड़ने, अर्थात राम सेतु तभी सम्भव है जब हम राम पर पूर्ण विश्वास के साथ अंतर्मुखी होते हैं ।

राम हमें दिव्य विवेक प्रदान करते हैं कि केवल गुरूवचन और राम की ऊर्जस्वी ज्योति ही मायने रखती है बाकि कुछ नहीं ।

इसलिए ज़रा रुकिए। देखिए कि कोई विश्वास का अभाव तो नहीं है मुझ में । अहम् को डींग नहीं हांकनी । यदि हाँ, तो स्वयं को ठीक व सुधारिए । हमारे गुरूजन अति प्यारे हैं और आपको पूर्ण विश्वास व श्रद्धा से सशक्त कर देंगे । जागृत राम हमारे भीतर हैं, महसूस कीजिए उन्हें, अनुभव कीजिए, मौन में प्रेम करिए उनसे पर डींग न हांकिए न ही प्रचार कीजिए। जब हमारा पतन होता है तब हम ऐसे व्यवहार व पाखण्ड करते हैं जैसे कि हम छोटे भगवान हों ।

गहन मौन हमें सिखाता है कि हम कैसे परमेश्वर पर प्रश्न चिन्ह न लगाएँ और सभी को क्षमा करें जो सुधर कर सच्चिदानंद को अनुभव करना चाहते हैं । राममममममममम

***

## *Jai Jai Raaam Maharishi*

*O PARAM GURU RAAM*
*ATTMIK PRANAM*
*ON THIS DAY YOU GAVE US*
*OUR GURU TO SEE THE NEW LIGHT*
*OF SADHANA.*
*Always at the feet of Shree Shree*
*SWAMIJI MAHARAJ Shree*
*The Sadguru of unparallel kind*
*Who gave us Alaukik Ram Naam*
*And loves us so much that He gave us*
*Param Pujya Premji Maharaj*
*And friend phisopher and guide of*
*All seasons*
*Maharishi Swami Shri VISHWA MITTERji*
*Maharaj Shree*
*Whose day of Daiva Abhishek is today*
*My pranam, my submission,*
*My offering of my atman to Maharishi*
*On this Divya Tilak Divas of Maharishi.*

*O Maharishi*
*I do bow billion times*
*and everytime I hear*
*Ram Naam in you.*
*You were and you are present*
*as omnipresent beyond time line.*
*O prabhu you reman Siddha Purush*
*you came to heal.*

*And as a true healer you kept*
*yourself at the humblest level*
*Swamiji Maharaj Shree's Paduka*
*you carried O my Maharaj.*
*Guru anugami*
*How to become you taught us*
*O Maharishi.*
*You lived, spoke, acted and did pious deeds*
*For Param Guru Ram and*
*Submitted your siddhi*
*To Sadguru Shree Swamiji Maharaj Shree.*
*Such a grace you enjoyed*
*Such a blissful child of Maa you remain*
*Which I noticed from blowing curtain*
*Of some stolen momements*
*When maa bhabatarini pampered you.*

*Yet you never ever declared your Siddhi*
*Never ever boasted*
*for miracles as all were gifts of*
*Swamiji Maharaj shree*
*and you did Lila of daas*
*such a siddha purush you are*
*O my Maharisi.*

*Sandhya after sandhaya*
*you cried before Maa and Raaam*
*To provide respite to sadhaks*
*and salvage them from*
*Tauma, tragedy, pain and poverty.*
*You cried every evening for someone*
*Or the others for rescuing sadhaks*
*But we never knew*
*How our deeds were mended*
*How overnight eternal transformstion*
*Took place.*
*How he consumed our pasp*
*As Neelkantha*
*.... it was His bliss.*

*Siddha vachan of you*
*O maharishi were Wisdom*
*Of all the time*
*But we wasted them as you were*

*around us.*
*Your golden words are shinning today*
*as we dont or can't engage*
*to "give you darshan"*
*And can't be around you to claim*
*we are Vishesh and closer to you.*
*But you blew off all the masks*
*of pretention*
*and moulded all to do sadhana*
*If not for siddhi at least for solace.*
*You O Maharishi*
*When in form*
*Used to leave your body*
*Every day to bless is  rescue someone*
*Somewhere*
*But you kept them secret*
*O my friend till I confronted you*
*In some candid moments.*
*Your kripa as Guru*
*Remains ever pervading.*
*Your bliss is in our breath*
*O Maharishi.*

*You taught us how to*
*dilute the ego that stalls sadhana.*
*You taught us the concept*
*of complete surrender to Ram Dhaam*
*you held our hand as*
*We small soul could see the*
*Glory of Alaukik Ram in our*
*Sharir tattwas. Such blissful you remain.*

*Vishal Hriday you showed*
*and showered the bliss*
*to perceive the eternal reality of*
*PARAM PURUSH PARAMESHWAR RAAM*
*and Maa bhavatarini.*

*Today your subtle presence*
*do become tears of mortal viraha*
*Yet we merge with you*
*O maharishi.*
*We pray Hey Param Bhskta of Param Guru*
*to help us to mend our*

*Chinta karma*
*Vak karma and deed or karma.*
*Correct our buddhi*
*and allow us to realize Guru Vachana*
*and Guru Tattwas as absolute truth.*
*Teach us to be more humble*
*in our sadhana and sewa.*
*Make our ego melt*
*and cast it anew with Ram Tattwa*
*As ultimate mould we must become*
*and represent.*
*Bless us to discover*
*Gurutattwa within*
*with no pretention outside.*
*Help us to realize bliss of Ram Naam*
*And all Ram Durbar be filled with*
*Mahashakti anahad naad of pure Raaaam*
*Dhwani and ram bhava.*
*Let we live a life of prayer for others*
*and secretely we are able to help*
*And serve humanity*
*As you taught the real meaning of*
*Vasudaiba kutumbakam*
*Whenever calamity enveloped the world.*

*O My friend O my Maharishi*
*I bow to you billion times*
*for all the wrongs we have done*
*And paap we have commited.*
*You are merciful O prabhu*
*Kshama karna, kshama karna.*
*Kripa karo Maharaj shree Kripa karo*
*that we all become worth of your sadhana*
*We become worthy enough*
*To call ourself your disciples.*

*O Maharishi*
*Within Viraha*
*I find you*
*Sitting beside me*
*With smile of your sublime kind.*
*Such bliss I am experincing while*
*writing these lines*
*to celebrate celestial*

*Day of your Maha Abhishekham.*
*Raaaauuuuuuum.*

***जय जय राम महर्षि***

*ओ परम गुरू राम*

*आत्मिक प्रणाम*

*साधना का*

*एक नया प्रकाश दिखाने के लिए*

*आज इस दिन आपने हमें*

*हमारे गुरू दिए ।*

*सदैव श्री श्री स्वामी जी महाराजश्री*

*के श्री चरणों में*

*ऐसे सदगुरू जिनका कोई समांतर नहीं है*

*जिन्होंने हमें अलौकिक राम नाम दिया*

*और जो हमसे इतना प्रेम करते हैं कि उन्होंने*

*हमें परम पूज्य प्रेम जी महाराज दिए*

*और हर ऋतु के सखा , दार्शनिक व मार्गदर्शक*

*महर्षि स्वामी डॉ स्वामी विश्वामित्र जी महाराज श्री दिए,*

*जिनका आज दैव अभिषेक है*

*मेरा प्रणाम , मेरा समर्पण,*

*मेरी आत्मा का समर्पण आपको महर्षि*

*महर्षि के इस दिव्य तिलक दिवस पर।*

*ओ महर्षि*

*मैं खरबों बार झुकता हूँ*

*जब भी आपमें राम नाम को सुनता हूँ।*

*आप सर्वव्यापक समयातीत के पार थे व हैं।*

*ओ प्रभु आप सिद्व पुरूष आज भी हैं*

*आप आए थे निरोग्यता देने ।*

*एक सच्चे वैद्य के भाँति आपश्री ने अपने आप को*

*सबसे विनम्र रखा और स्वामी जी महाराजश्री की पादुकाओं*

*को शिरोधार्य किया,, ओ मेरे महाराज।*

*ओ महार्षि ,आपश्री ने हमें सिखाया कि गुरू अनुगामी कैसे बनते हैं।*

*आपश्री जीए, बोले व पावन कृत्य करके दिखाए*

*परम गुरू राम के लिए*

*और अपनी सर्व सिद्वी*

*सदगुरू श्रीस्वामी जी महाराजश्री को*

*समर्पित कर दी।*

*आपश्री ने ऐसी कृपा का आनन्द लाभ किया*

*कि माँ के आनंद मय बच्चे सदा रहे*

*जो मैंने उड़ते हुए पर्दे से कुछ चुराए हुए पलों से*

*माँ भवतारिणी को आपको लाड़ प्यार करते हुए देखा ।*

*पर आपश्री ने कभी भी अपनी सिद्धी की घोषणा नहीं की*

*कभी डींग नहीं हांकि*

*क्योंकि चमत्कार तो स्वामीजी महाराज श्री की भेंट थी*

*और आपश्री ने एक दास की लीला निभाई*

*ऐसे सिद्ध पुरूष आप हैं ओ मेरे महर्षि ।*

*संध्या के बाद हर संध्या आपश्री रोएँ हैं माँ व राम के समक्ष*

*ताकि साधकों को निजाद मिल सके*

*और वे क्षति, त्रासदी, पीड़ा व ग़रीबी*

*से बच सकें।*

*हर शाम आपश्री किसी के लिए बिलखते थे*

*या फिर साधकों की रक्षा के हेतु*

*पर हम कभी न जान सके*

*कि कैसे हमारे कृत सुधर गए*

*कैसे रातों रात हममें दिव्य बदलाव आ गए..*

*कैसे उन्होंने हमारे पाप निगल लिए नीलकण्ठ बन कर....*

*यही उनका आनंद था ।*

*आपश्री का सिद्ध वचन*

*ओ महार्षि हर पल की बुद्धीमता थी*

*पर हमने सब नष्ट कर दिया जब आपश्री हमारे समक्ष थे ।*

*आज आपश्री के सुवर्ण वचन चमक रहे हैं*

*क्योंकि आज हम आपश्री को "अपने दर्शन" नहीं दे पा रहे*

*और आपश्री के आस पास भी नहीं रह पा रहे*

*यह जताने के लिए कि हम आपश्री के विशेष हैं या*

*आपश्री के निकट हैं ।*

*पर आपश्री ने सभी ढोंग के मुखौटे उतार दिए*

*और सबको साधना रत होने के लिए रूपांतरित कर दिया*

*सिद्धी के लिए नहीं तो शांति के लिए ही सही ।*

*आप ओ महार्षि जब सशरीर थे तो*

*अपनी देह छोड़ कर हर रोज़ किसी न किसी पर कृपा करने*

*या किसी की रक्षा करने के लिए कहीं भी पहुँच जाते थे*

*किन्तु यह सब आपश्री ने गुप्त ही रखा*

*मेरे सखा , तब तक जब तक मैंने आपसे कुछ सरल पलों में*

*इस विषय का सामना नहीं करवाया ।*

*आपश्री की कृपा आज भी सर्वव्यापी है ।*

*हमारी हर साँस में आपश्री का आनंद है*

*ओ महार्षि ।*

*आपश्री ने हमें अहंकार को घोलना सिखाया*

*जो साधना के लिए बाधक बनता है ।*

*आपश्री ने हमें राम धाम के प्रति सम्पूर्ण समर्पण सिखाया*

*आपश्री ने हमारा हाथ पकड़ा*

*ताकि हम जैसी छोटी आत्माएँ अलौकिक राम नाम की महिमा*

*अपने शरीर तत्व में देख सकें ।*

*आपश्री सदा ऐसे आनन्दमय रहे ।*

*आपश्री ने सदा अपना विशाल ह्रदय दिखाया*

*और कृपा की वर्षा की*

*ताकि हम परम पुरूष राम व माँ भवतारिणी*

*की शाश्वत सत्यता को जान सकें ।*

*आज आपश्री की सूक्ष्म उपस्थिति*

*नश्वर विरह के अश्रु बन जाते हैं*

*पर फिर भी हम आपश्री में समाए हुए हैं*

*ओ महार्षि ।*

*हे परम गुरू के परम भक्त, हम प्रार्थना करते हैं*

*कि हमारी मदद कीजिए कि हम अपने चिंत कर्म*

*वाक कर्म व कृत्यों को सुधार सकें ।*

*हमारी बुद्धी को कृपया सुधारिए*

*ताकि हम गुरू वचन और गुरू तत्व को*

*परम सत्य के रूप में अनुभव कर सकें*

*कृपया हमें अपनी साधना व सेवा*

*में और विनम्र बनना सिखाइए ।*

*हमारे अहंकार को पिघला दीजिए*

*और उसे राम तत्व से नवीन बना दीजिए*

*जो कि हमें अंततः बनना है व जिसका प्रतिनिधित्व करना है ।*

*कृपा कीजिए कि हम बिना किसी बाहरी स्तर के ढोंग के बिना*

*गुरूतत्व को भीतर पाएँ ।*

*राम नाम के आनंद को अनुभव करने के लिए हमारी मदद कीजिए*

*और सारा राम दरबार पावन राम ध्वनि व राम भाव*

*की महाशक्ति अनहद नाद से भर जाएँ ।*

*हम ऐसी ज़िंदगी जिएँ जिसमें हम दूसरों के लिए प्रार्थना कर सकें*

*और गुप्त रूप से समाज की मदद व सेवा कर सकें*

*क्योंकि जब भी संसार पर विपदा छाई*

*आपने ही हमें वसुदैव कुटुम्बकम का*

*असली अर्थ समझाया है ।*

*ओ मेरे सखा ओ मेरे महर्षि*

*मैं आपश्री को ख़रबों बार प्रणाम करता हूँ*

*आप करूणानिधान हैं*

*जितने भी पाप हमने किए तथा दुष्कृत हमसे हुए।*

*क्षमा कीजिएगा, क्षमा कीजिएगा ।*

*कृपा करो महाराजश्री कृपा करो*

*कि हम आपश्री की साधना के क़ाबिल बन सकें*

*कि हम अपने आप को आपश्री के शिष्य कहलाने के क़ाबिल बन सकें ।*

*ओ महर्षि*

*विरह के मध्य में*

*मैं आपको अपने साथ बैठा हुआ पाता हूँ*

*आपकी दिव्य मुस्कान के संग*

*आपश्री के महा अभिषेकम् का दिव्य उत्सव मनाते हुए*

*यह पंक्तियाँ लिखते हुए*

*ऐसा आनंद मैं महसूस कर रहा हूँ ।*

*राममममममममममम*

*****

### ***Taming the Restless Mind with Ram Naam***

*Someone asked me that "maan vichalit hai Ram Naam Nahi ho pa raha hai". It's true when we are divided and restless this happens. But the answer is within the question. Do have abdolute faith and must we hold on to Shree Ram's Naam charan that nothing can make us restless. Poorna Astha Poorna samarpan Raam Naam ko gati deti hai aur maan ko shaant karkey "vichalit manasit sthithi" ko samhalti hai. Just two words of Maharishi I recall COMPLETE SURRENDER AND CONSTANT REMEMBERANCE of Ram Naam can do all the wonder. Its universally proven fact! RAAAAAAAUUUUM.*

## राम नाम द्वारा बेचैन मन को सिधाना

किसी ने मुझसे पूछा कि " मन विचलित है राम नाम नहीं हो पा रहा है " यह सत्य है कि जब हम बटे हुए होते हैं और बेचैन होते हैं, यही होता है । पर इसका उत्तर प्रश्न के अंदर ही है । क्या आपको सम्पूर्ण विश्वास है ? तो हमें श्री राम नाम के चरण कमलों को पकड़ लेना चाहिए यह सोच कर कि हमें कुछ भी विचलित नहीं कर सकता । पूर्ण आस्था पूर्ण समर्पण राम नाम को गति देता है और मन को शांत करके " विचलित मनस्थिति " को सम्भाल लेता है । केवल दो शब्द मुझे महर्षि के स्मरण होते हैं सम्पूर्ण समर्पण व राम नाम का सतत सिमरन कोई भी काया पलट कर सकती है । यह एक सार्वभौमिक सिद्ध किया हुआ तथ्य है !

राममममममममममम

***

### ***SHANT BHAVNA***
### ***INNER TRANQUILITY***

*Shree Shree Swamiji Satyanandji Maharaj Shree proclaimed that*

*Let your atman know*
*within you Shanta Dham*
*Shree Ram resides.*
*Purest of pure*
*Chaitanaya bhava comes to the fore*
*as one does Ram Naam Aradhana.*

*He warned us*
*that inner tranquility is disturbed*
*When we become victim*
*Of three elements....*
*Inner compexity and sadness;*
*Pervertion of the karmic world*
*Mayabi illusion or Moha jaal of life and times*
*That spoil our inner peace and tranquility.*

*Swamiji Maharaj Shree then guides*
*Realize the Chetna Tattwa*
*Which is pure and eternally shaant.*
*He asked us to submit the self*
*To Shree Raam Naam Tattwa*
*The embodiment of eternity*
*Shree Shanta Dham, Shree Raaaauuum.*

*I PRAY*

*O my Ram your purest chaitanya*
*Beseige me as I imbibe your Naam Tattwa*
*that purifies me.*
*Your naam cures world of ills*
*that make us restless all the time.*
*Your attributes, your purest nature*
*Destroys our "Vasana Pravitti"*
*OR slavery of Desires!*
*O Raam let your name smear my mind*
*You O lord of Lord*
*Do preside in me in Tattwa bhava*
*So that my mental desire,pervertion*
*Get washed and We beget eternity of you.*

*Raam Dhham Maaha Dhaam*
*Raam Naam Maha Naam*

*You remain source of peace*
*Your naam tattwa can give us*
*Mukti from our perinial illness*
*Of "Ashanta Bhava" as we live*
*A life of desires and conflicts.*
*Raam Ras can be experienced*
*When we reduce our moha*
*and unending wants*
*And purify the self with Raam Naam.*
*Raam Naam is Mahaushaddhi*
*Its pure tranquil Raaauuum*
*that is always floating in Atma Tattwa*
*Realize this ETERNAL PEACE*
*Experience the OCEANIC TRANQULITY*
*In purest Ram Bhaava within*
*Deep very deep within*
*RAAAAUUUM.*

## *शांत भावना*

## *आतंरिक शांति*

*श्री श्री स्वामीजी सत्यानंदजी महाराजश्री ने कहा है*

*कि अपने आत्मा को अवगत करवाओ*

*कि तुममें ही शांत धाम श्री राम विराजमान हैं ।*

*पावन से पावन चैतन्य भाव उभर कर आता है*

*जब हम राम नाम आराधना करते हैं ।*

*उन्होंने हमें चेतावनी दे कि*

*भीतर की शांति बिखर जाती है*

*जब हम तीन तत्वों का शिकार हो जाते हैं--*

*आंतरिक जटिलताएँ व उदासीनता*

*कर्मों के दूषित पन व कितने ही जन्मों के मोह जाल के संस्कार*

*जो हमारा आंतरिक शांत भाव बिगाड़ देता है ।*

*स्वामीजी महाराजश्री तब मार्गदर्शन देते हैं कि*

*अपने चेतन तत्व को अनुभव करो जो पवित्र व दिव्य स्वरूप से शांत है ।*

*उन्होंने हमें अपने आप को श्री राम नाम तत्व को समर्पित करने को कहा*

*जो कि शाश्वत श्री शांत धाम के प्रतीक हैं , श्री राम ।*

*मैं प्रार्थना करता हूँ*

*ओ मेरे राम ,जो सबसे पवित्र चैतन्य हैं*

*मुझे अपने में खींच लीजिए जैसे मैं आपके नाम तत्व*

*को अपने अंदर सोख लेता हूँ जो मेरा पवित्रीकरण करता है ।*

*आपश्री का नाम हर बुराई जो हमें बेचैन करती है*

*उसे को धो डालता है ।*

*आपश्री के गुण, आपश्री की पावन प्रकृति*

*हमारी वासनाओं की प्रवृति को नष्ट कर देती है !*

*ओ राम कृपया आपश्री का नाम मेरे मन को अपने में लिप्त कर दे*

*आप हे सर्वेश्वर*

*मेरे में तत्व भाव में आधिपत्य कीजिए*

*ताकि मेरी मानसिक इच्छाएँ, दूषित विचार*

*धुल जाएँ और हम आपसे आपकी दिव्यता को पा सकें ।*

*राम धाम महा धाम*

*राम नाम महा नाम*

*आपश्री ही हमारी शांति के केंद्र हो*

*आपश्री का नाम तत्व हमें अशांत भाव की*

*चिरस्थाई बीमारी से मुक्ति दे सकता है क्योंकि*

*हम इच्छाओं व तनावों की ज़िंदगी जीते हैं ।*

*राम रस का अनुभव किया जा सकता है*

*जब हम अपना मोह व कभी न ख़त्म होने वाली इच्छाओं*

*को कम कर सकें तथा अपने आप को राम नाम से पवित्र कर सकें ।*

*राम नाम महा औषधि है*

*वह पावन शांत राम हैं*

*जो सदा आत्म तत्व में तैर रहे हैं*

*भीतर सबसे पावन भाव में*

*बहुत बहुत गहन गहराई में*

*इस शाश्वत शांति को प्रबुद्ध कीजिए*

*सागर समान शांति को अनुभव कीजिए*

*राममममममममममम*

*****

## *Shree Shree Virtual Ram Durbar... My Prayer*

*At this wee hour (4 15 AM IST) I am scripting something which is an appeal, a request, a submission. I confess some celestial force is working. I dont know the next sentence but I know some thing serious is in offing in this script.*

*This open group of Shree Ram Sharanam Facebook has become sanctum santorium or Shree Shree Ram Durbar. Its virtual Shree Ram Durbar and this could only happen with the blessings of Param Guru Ram and our Gurujans.*

*The spirit of their discipine, teachings and philosophy are being upkept by hon'ble and revered seniors who are constantly guiding SRS Amritvani Satsang, SRS Sahitya, SRS FB SRS Pracharak and SRS Techgroup. My atmikink Pranam to them for contributing so much as if I am feeling Maharishi is smiling with pride and blessing all who are doing virtual satsang. We are really greatful to Swamiji Maharaj Shree who taught us real discipline about Shree Ram Durbar.*

*At times we forget in Shree Ram Durbar in our Third eye Shree Shree Adhistanji resides. Thus its space for learning and most about unlearning. It's about becoming humbler and reducing ones Ego. It's all about complete surrender to Param Guru Ram and floating and experiencing Sadguru's bliss and satchitananda bhava of Gurutattwa.*

*But some times here in this virtual world we forget about the norms Shree Shree Swamiji Maharaji Shree had coined and rules followed with utter disciplines for several decades by all our Gurus. We indulge in boasting and try to create importance of people and even do gossip in whatsapp about who is closer to Gurujans and who are closer to those who got visible blessings from Guru! THIS IS NO SOCIAL SPACE TO DRAG PEOPLE, Confront or even involve in unnecessary conversations which somewhere hurts Gurujans. Can we not make it much purer a space? Beyond the concept of Likes or initisting in interpersonal communication or even wrongfully referring to others. ALL THESE SPOIL SADHANA. ITS VIRTUAL SPACE OF SATSANG BUT SATSANG WITH RAM AND GURUJANS ONLY AND NOT just mortal sadhaks.*

*I share a small real happening where one soul was hurt in Ram Durbar. 17 or 18 year ago a sadhak after amritvani satsang became so bhav vibhor that he forgot to return the copy of Shree Amritvani. At the gate one sewak very rudely snatched his Shree Amritvani as if he was stealing it. That one behaviour of a person caused huge damage. That person thereafter never*

*ever entered Shree Ram Durbar for Amritvani Satsang though he remains a sadak in anonomity. Maharishi Swamiji Dr Vishwa Mitterji came to know and his heart cried. He, that is why, always said that Shree Ram Durbar is begetting Ram and for purifying self and not nurturing friendship, socializing or doing Gossip and "Hum log bahot batey kar chukey hain ab batey band karna hai.Maun sadhana sey apney maiy(I) ko khatam karna hai aur vishesh na baney hi sadhana hai".*

*I don't know why wrote all these. But I touch the Shree Charan of our Sadguru Shree Shree Swamiji Maharaj Shree so that He gives us wisdom to do Sadhana in this Virtual world too. GIve us samskar to share Raam Bhava and always pray for others and rise to all occasions. SHREE RAM DURBAR OF SHREE RAM SHARANAM EVEN IN THIS CYBER SPACE HAS BECOME PIOUS DUE TO MILLIONS OF JAAP AND PRAYER HAPPENING HERE. LET'S MAKE IT MOST PIOUS SPACE AND FOLLOW ALL THE NORMS OF GURUJAN AND USE THIS FORUM ONLY TO REALIZE EXPERIENCE THE SUPRA CONSCIOUSNESS OF RAM TATTWA AND GURU TATTWA . BECAUSE THESE ARE ONLY ETERNAL AND IMMORTAL AND REST ARE TOO MORTAL INCLUDING OUR SELVES. JAI JAI RAM.*

## श्री श्री वर्चुअल राम दरबार... मेरी प्रार्थना

भोर के इस समय में मैं कुछ लिख रहा हूँ जो कि एक विनती है , निवेदन है, एक प्रस्तुतिकरण है I मैं स्वीकार करता हूँ कि कोई दिव्य ताक़त काम कर रही है I मुझे नहीं पता कि अगली पंक्ति क्या होगी पर कुछ गंभीर ज़रूर है इस लेख में I

यह श्री रामशरणम का फ़ेसबुक ग्रुप राम दरबार के समान बन गया है I यह वर्चुअल राम दरबार है और यह केवल परम गुरू राम व गुरुजनों की कृपा से ही सम्भव हो सकता है I

उनके अनुशासन , शिक्षा व दर्शाशास्त्र की आत्मा वरिष्ठ व आदरणीय साधक गण द्वारा बहुत सुंदरता से निभाए जा रहे हैं जो सतत श्री रामशरणम् अमृतवाणी सत्संग , श्री रामशरणम् साहित्य ,श्री रामशरणम् फेसबुक , श्री रामशरणम् प्रचारक और श्री रामशरणम् टेकग्रुप का मार्गदर्शन कर रहे हैं ।मेरा आत्मिक प्रणाम उन्हें, उनके योगदान के लिए, इतना कि मुझे लग रहा है कि महार्षि गौरावंगित होकर मुस्कुरा रहे हैं और उन सभी को आशीर्वाद दे रहे हैं जो वर्चुअल सत्संग में भाग लेते हैं I हम पूज्य स्वामीजी महाराजश्री के अतिश्य आभारी हैं जिन्होंने हमें राम दरबार के बारे में असली अनुशासन सिखाया है I

पर कई बार हम भूल जाते हैं राम दरबार में कि हमारे तीसरे नेत्र में श्री अधिष्ठान जी विराजमान हैं । इसलिए यह क्षेत्र विद्या उपार्जन व विद्या विसर्जन के लिए है ।यहाँ पर और विनितपन लाने व अहंकार

शून्य करने की चेष्टा करनी चाहिए । यह सब परम गुरू पर सम्पूर्ण समर्पण के लिए है और सदगुरू का परमानन्द व गुरूत्तव का सच्चिदानंद भाव अनुभव करने के लिए है ।

पर कई बार इस वर्चुअल जगत में हम श्री श्री स्वामीजी महाराज श्री के नियम व अनुशासन जो कितने ही दशकों से निभाए जा रहे हैं हम वे सब भूल जाते हैं । हम अपनी बढ़ाई में लग जाते हैं और लोगों को वशिष्ठ बनाने में लग जाते है और व्हाट्सप्प पर यह भी चर्चाएँ करते हैं कि कौन गुरुजनों के निकट है और किन्हें गुरूजनों से साक्षात आशीर्वाद प्राप्त हुए! कृपया स्मरण रहे कि यह कोई सामाजिक स्थल नहीं है लोगों को घसीटने का, सामना करने का या मिथ्या वार्तालाप करने का जो कि कहीं न कहीं गुरुजनों को दुख पहुँचाता है । क्या हम इसे और पवित्र क्षेत्र नहीं बना सकते? पसंद करने या आपसी वार्तालाप को ज़बरदस्ती बढ़ाना या फिर ग़लत तरह से दूसरों को दोषारोपण करने के पार नहीं जा सकते क्या? यह सब साधना को ख़राब कर देता है ।यह वर्चुअल क्षेत्र सत्संग के लिए है किन्तु सत्संग राम व गुरुजनों के संग न कि केवल नश्वर साधकों के संग ।

मैं आप जी के समक्ष एक सच्ची घटना प्रस्तुत करता हूँ जहाँ राम दरबार में एक आत्मा को बहुत पीड़ा पहुँची थी । 17-18 वर्ष पूर्व श्री अमृतवाणी सत्संग के पश्चात् एक साधक अति भाव विभोर भाव में श्री अमृतवाणी जी का ग्रंथ लौटाना भूल गए । गेट पर एक सेवक ने बहुत ही निष्ठुरता से ग्रंथ खींचा ऐसे जैसे कि वे चुरा रहे हों ।इस एक व्यवहार ने बहुत ही भारी क्षति कर डाली ।वे साधक आज तक कभी भी श्री राम दरबार लौट कर नहीं आए जबकि वे गुप्त रूप से साधक ही हैं ।जब महर्षि स्वामी जी डॉ विश्वामित्र जी महाराज श्री को पता चला तो उनका हृदय अति द्रवित होकर पीड़ा से रो उठा । तभी उन्होंने सदा कहा है कि राम दरबार राम को पाने के लिए है और अपना पवित्रीकरण करने के लिए है और न कि दोस्ती बढ़ाने , सामाजिक व्यवहार बढ़ाने या कि चुगली करने के लिए और " हम लोग बहुत बातें कर चुकें अब बातें बंद करनी हैं । मौन साधना से अपनी "मैं" को ख़त्म करना है और विशेष न बनें यह ही साधना है ।"

मुझे नहीं पता यह सब क्यों लिखा । पर मैं सदगुरू श्री श्री स्वामी जी महाराज श्री के चरणस्पर्श करता हूँ कि वे हमें सद्बुद्धी दें ताकि हम इस वर्चुअल जगत में भी साधना कर सकें ।कृपया हमें संस्कार दीजिए कि हम राम भाव बाँट सकें और सदा दूसरों के लिए प्रार्थनारत रहें और हर अवसर पर जागें ।करोड़ों जप व प्रार्थनाएँ यहाँ होने के कारण श्री राम शरणम का राम दरबार इस साइबर जगत में भी इतना पावन बन चुका है ।चलिए हम इसे सबसे पावन क्षेत्र बना डालें और गुरूजनों के सभी नियम पालन करें और इस क्षेत्र को केवल राम तत्त्व व गुरुतत्व की पराचेतना को अनुभव , प्रबुद्ध करने के लिए उपयोग में लाएँ ।क्योंकि वे ही केवल शाश्वत व अनश्वर हैं और बाकि सब तो बहुत ही नश्वर हैं हमें लेकर । जय जय राम

***

*Purest bhava rebuilds self. Raam maketh the sattvik self to step out first to heal even unknown*

सबसे पवित्र भाव अपने आपको फिर से बनाता है । राम सात्विक आत्मा तैयार करके उसे बाहर अज्ञात में भी आरोग्यता प्रदान करने को भेजते हैं ।

***

*0ther day some very senior sadhak told me that jaap and Amritvan if merged together one can really unlock the eternal bliss. I said "exactly jaap and Amritvani blends to encounter a new frontier of bliss". Then I told to myself even a trend of sadhana repicates in time. I mean the conjunction of jaap and amritvani'.... and in the air? Such is bliss of Raaaam*

एक दिन एक बहुत वरिष्ठ साधक ने मुझसे कहा कि यदि जाप और अमृतवाणी का ऐक्य हो जाए तो हम दिव्य आनन्द का बंद ताला खोल सकते हैं । मैंने कहा " सही में जाप और अमृतवाणी मिलकर आनन्द के नए गंतव्य से सामना करवा सकते हैं " तब मैंने स्वयं से कहा कि साधना की प्रवृति में समय के साथ दोहराती है । मेरे कहने का तात्पर्य जाप और अमृतवाणी का संयोजक " .... हवा में? राम का ऐसा आनन्द है ।

***

*Good SOULS are not those who inflict no harm to others but those who pray, heal and do all the good even for unknown SOULS. Ram Naam sadhana elevates the soul to act and wish wellness for the whole PRAKRITI or Creation.*

अच्छी आत्माएँ वे नहीं जो दूसरों को कोई कष्ट नहीं पहुँचाती हैं बल्कि वे जो प्रार्थना करती हैं, आरोग्यता प्रदान करती हैं और अज्ञात आत्माओं के लिए भी भला करती हैं । राम नाम साधना आत्मा का उत्थान करती है ताकि वह दूसरों व प्रकृति के प्रति सद्भावना ला सके।

***

*Don't be restless to find divine here meaning Raam. In the stillness of time in the dynamic of spacelessness He is breathing in you and with you. Yet he accompanies the soul through light zone beyond body. Why become restless if you say you have surrendered to Param Guru Ram!*

राम अर्थात परमेश्वर को पाने के लिए अधीर न हों। समय के मौन में व क्षेत्रविहीनता की गतिशीलता में वे आपमें व आपके साथ साँस ले रहे हैं। अधीर क्यों बनना जब आपने परम गुरू राम को समर्पण कर रखा है।

***

## *ETERNAL DIRECT CONNECT WITH PARAM GURU RAM*

*Divinity is sublime. Raaaaum is eternal Nirakar Shabdik and jyotiswarup as Swamiji Maharaj Shree taught us.param guru Ram is our Goal and means too. Being a prisoner of this body we often become judgemental about our own progress in sadhana. We do doubt and slip at shraddha level. We compare and refer with others and even compete so socially we fail the whole process of our spiritualism. In rainy days we start complaining about God's intention and deeds and even question Ram. All this happen we are just a prisoner of our body and limitedly think of our entity now as absolute which is not. Its just passing chola. Or a dress for our atman.*

*In the eternal time line our life is just few minutes, say you go to Shree Ram Durbar and do Shraddha purvak pranam to Shree Adhishtanji and gurujan and come out …a life time is over. That is why Swamiji Maharajshree gave us complete guidance so that even one second is not lost in our mortal avatar. Let's give 5 min to the thought.*

*Swamiji Maharaj Shree deleted all enigmas about guru and His divine entity and connected us with Param Guru Shree Niraakar Jyooti Swarup Raam who is not eternal but eternal supreme. Ram is ultimate Gurutattwa and that's our Guide Goal and Mode. Nothing in between and not even rituals of any kind. This direct connect is Ram Kripa and Guru Kripa bestowed upon us by our Sadguru Swamiji maharajShree and end number of times Pujya Premji Maharaj Shree and Maharishi Swami Dr Vishwa Mitterji Maharaj ji have been teaching us and even today This Swamiji Maharaj gave us Ram Mantra to unlock biggest mystery of Cosmos. So why doubt yourself. You are already part of Supreme Guru Ram. Still you need a mortal now? Swamiji Maharaj Shree gave Vedas of all Vedas about life and living in Shree Amritvani. No other wisdom talk stands before this divine creation. Whenever in doubt, answers will be available in this. Please read it with bhakti yet you read this as Gyan margi too. So shraddha emits from it and doubt is doused for good. This be our referral point.*

*Simple simran and ajapa jaap 24 x 7 patterns our mind as divine Ram kills the demon in us all the time and purify ourself. This prescription is for our jeevatman and that works as auto mending mode for all the deeds or karma we do. Such is the impact of loving Ram. Swamiji Maharaj Shree gave us biggest medicine to handle the aberrations of our body thought and action.*

*So we are in the eternal time line just few minute in this body. Devote it to Param Guru Ram and do a complete surrender to Him. Don't waste time in mortal gurutattwa. Do all your worldly duties and dedicate to RAM. We need to banish our ego and realize spiritual marg Swamiji*

*Maharaj shree gave us as a NON SOCIAL SUBLIME SPIRITUALITY. So we drop our social spiritual masks and utilize this life time to realize the Supreme through the pious and most sacred connect RAAAAAAAAAAUUUUUM.*

## परम गुरू राम के साथ दिव्यता से सीधा संबंध

स्वामी महाराज श्री ने सिखाया कि राम दिव्य निराकार शाब्दिक व ज्योतिस्वरूप हैं । परम गुरू राम ही हमारा साधन व गंतव्य हैं । देवत्य उदात है । स्वामीजी महाराज श्री ने सिखाया कि राम दिव्य निराकार शाब्दिक व ज्योतिस्वरूप हैं । परम गुरू राम ही हमारा साधन व गंतव्य हैं ।

इस देह की क़ैद में रहते हुए हम अपनी साधना की प्रगति के प्रति अनुमान ठीक से नहीं करते। हम संशय करते हैं और साधना के स्तर से गिर जाते हैं । हम दूसरों से मापदण्ड करते हैं प्रतिस्पर्धा भी , तो सामाजिक रूप से हम अपनी आध्यात्मिकता विफल कर देते हैं । दुख के दिनों में हम परमेश्वर की करनी पर उँगली उठाते है और राम पर प्रश्न चिन्ह भी लगा डालते हैं ।यह सब तभी करते हैं क्योंकि हम अपनी देह की क़ैद में हैं और अपने अनन्त के अस्तित्व को दायरे में समझते हैं । देह तो केवल एक चोला है या फिर आत्मा का वस्त्र ।

ब्रह्माण्ड के समय के सामने हमारा जीवन तो केवल कुछ ही क्षणों का है , जैसे कि सोचिए आप श्री राम दरबार गए, श्रद्धा पूर्वक श्री अधिष्ठान जी को व गुरूजनों को प्रणाम किया और बाहर आए..., जीवन समाप्त ! तभी स्वामी जी महाराजश्री ने हमें पूर्ण मार्ग दर्शन दिया ताकि हमारा एक भी क्षण इस नश्वर अवतार में व्यर्थ न हो । इस पर ५ मिनट का चिंतन करियेगा ।

स्वामीजी महाराजश्री ने गुरू व उसकी दिव्यता की पहेली सब मिटा डाल रखी है । और हमें परम गुरू श्री निराकार ज्योति स्वरूप राम , जो केवल दिव्य नहीं अपितु परम दिव्य हैं , उनसे जोड दिया ।राम ही परम गुरूतत्व हैं और वे ही हमारे मार्गदर्शन व गंतव्य । कुछ भी बीच में नहीं , कोई शास्त्रविधि तक नहीं ।यह सीधा जुड़ाव ही राम कृपा व गुरू कृपा बरसाई है हमारे सदगुरू स्वामी जी महाराजश्री ने और अनन्त बार पूज्य प्रेम जी महाराजश्री व स्वामी डॉ विश्वामित्र जी महाराजश्री ने भी यही सिखाया है और आज भी यही सिखा रहे हैं । स्वामीजी महाराजश्री ने हमें राम मंत्र दिया ताकि हम ब्रह्माण्ड का सबसे बड़ा रहस्य जान सकें । आप तो परम गुरू राम के अंश हो क्या अभी भी नश्वर गुरू की आवश्यकता है ?

स्वामीजी महाराजश्री ने जीवन व जीवन यापन के लिए वेदों के वेद श्री अमृतवाणी में दिए । कोई और ज्ञान की चर्चा इस पावन रचना के समक्ष खड़ी हो सकती है । जब भी कभी संशय हो तो सभी उतर इस ग्रंथ में

मिलेंगे। कृपया इसे भक्ति व ज्ञान , दोनों तरह पढ़े। इससे श्रद्धा प्रकाशित होती है और संशय मिट जाते हैं। यही हमारा परामर्श का आधार होना चाहिए।

सिमरन व 24x7 अजपा जाप हमारे मन को रेखांकित कर देता है और दिव्य राम हममें बैठे सभी राक्षसों को मार कर पावन कर देता है। हमारे जीवात्मा के लिए यही औषधी है और हमारे कृत्यों का स्वत: ठीक होने का ढंग। हमारे अतिप्रिय राम का ऐसा प्रभाव है! स्वामी जी महाराजश्री ने हमें सबसे उच्च कोटि की औषधि दी है जिससे हम तन, मन व कर्मों के कृत्यों को संभाल सकें।

सो हम इस ब्रह्माण्ड की समयरेखा के अनुसार केवल कुछ ही पलों के लिए इस देह में हैं। परम गुरू राम पर इन क्षणों को लगाइए व सम्पूर्ण समर्पण उन्हें कर दीजिएगा। अपना समय नश्वर गुरूतत्व के पीछे न बरबाद कीजिए। सभी संसारी कर्तव्य निभाइए और राम को समर्पित कर दीजिए। हमें अपने अहम् को दूर करने की आवश्यकता है और उस आध्यात्मिक मार्ग को अनुभव करना है जो स्वामी जी महाराजश्री ने हमें एक समाज व्यवस्था के पार एक उत्कृष्ट आध्यात्मिक मार्ग दिया है!

आइए हम अपने सामाजिक आध्यात्मिक मुखौटे उतारें और इस जीवन में परमेश्वर का पावन व सबसे अलौकिक राम द्वारा संबंध स्थापित करें।

***

## *Karma of Mind*

*Raam Naam Sadhak installs Param Guru Ram making the self as Ghat meaning the sacred utensil. Thus our Body becomes Temple right from the day of Diksha. The question is the SELF TEMPLE is still pious? Is our body is in Sadhana mode or we play off and on with our body at our convenience. Asking self will get us an answer. We do bad karma by our ill toned words or curses right within our loved ones. We forgot a CC TV of Param Guru is recording our deeds all the time as self is the residing temple of Ram.*

*We human are smart and say that karma is not bad if one does not act physically. Some actions are bad when seen openly or which is pronounced action. But karma is not limited to action. This is for sure. Swamiji Maharaj Shree prescribes Ram Naam Chintan, Ram Naam Jaap , Ram Naam Simran as Manas Sadhana. So our Karma starts in our mind as our sadhana. What we think is our secret. But we know our mind is Chanchal or restless and its mad horse. Our mind is full of aberrations. As we think unethical and even immoral. We do have nasty wishes. We tend to think ill for others and even we conspire. Our mind knows all these but no one else knows. At times our mind not only thinks negative but plans negative action. Well we don't allow others to know our thinking. But Param Guru Ram within your mind can you hide your aberrant thinking from Ram? No we can't. We all are naked before Ram. Thinking is also our karma so such huge*

*sufferings of all kinds invade our mind and body. Other day Maharishi told us Ramji does not like mask or pretension! Swamiji Maharaj Shree asked us to do ajapa jaap all the time to purify the mind and make its karma meaning manas or chintan karma of elevated kind. Mind is purified when we realize that Raam is knowing all that we are thinking no matter how aptly we are hiding socially. Pure or sattvik thought and wellness for all and wishing and blessing all by the same mind is possible with Guru Kripa and Ram Kripa. Pure thoughts bridges mind not only to universal mind but mends our karma at thought level too. Just spare some time consciously that we are doing our karma with our Mind so we are attracting results of pain and suffering. Let our Manas be filled with trillions of Ram naam shabdik chintan that our mind becomes pious as Param guru Ram is Residing in our Manas. A wrong thinking by us is an insult to Ram just remember this. Let's bathe our mind with anant Raaaaaaaum.*

## मन के कर्म

राम नाम साधक परम गुरु राम को स्वयं में स्थापित करता है जिससे वह अपने आप को एक घाट यानि एक पावन पात्र बना लेता है । सो दीक्षा के दिन से ही हमारा शरीर मंदिर बन जाता है । पर प्रश्न यह है कि क्या हमारा यह मंदिर अभी भी पावन है ? क्या हमारा शरीर अभी भी साधना रत है या हम कभी भी अपनी सुविधा अनुसार क्रीड़ा करते रहते हैं । स्वयं से प्रशन करने पर हमें उतर मिलेगा । हम बुरे कर्म करते हैं अपने विकृत शब्दों द्वारा या अपने प्रियजनों के मध्य अपमानित शब्दों का प्रयोग करते हैं ।हम भूल जाते हैं कि परम गुरू का सीसी टीवी हमारे कर्मों की रिकॉर्डिंग हर पल कर रहा है क्योंकि हमारी आत्मा ही राम का निवास स्थान है ।

हम मानव चतुर हैं और कहते हैं कि कर्म बुरे नहीं यदि वे किए न जाएँ । कई कर्म बुरे होते हैं यदि हम उन्हें खुले आम देखें । पर कर्म केवल कार्य तक ही सीमित नहीं होते । यह तो पक्की बात है । स्वामी जी महाराजश्री ने राम नाम चिंतन, राम नाम जाप , राम नाम सिमरन मानस साधना निर्धारित की है । सो साधना हेतु हमारे कर्म हमारे मन से शुरू होते हैं । हम सोचते हैं कि यह हमारा रहस्य है । पर हम जानते हैं कि हमारा मन चंचल है और एक पागल घोड़ा है । हमारा मन बहुत सी विकृतियों से भरा है । हम अनैतिक व व्यभिचारी विचार भी सोचते हैं । हमारी दुष्ट कामनाएँ भी होती हैं । हम दूसरों का बुरा सोचते हैं व षड्यंत्र भी रचते हैं । कई बार हमारा मन न केवल बुरा सोचता है पर बुरा करने की योजना भी बनाता है । हम दूसरों को अपने मन के भावों का पता नहीं लगने देते । पर परम गुरू राम हैं आपके मन में .. क्या आप अपनी विकृत सोच राम से छिपा पाएँगे ? नहीं हम नहीं कर सकते । हम पूर्ण तरह से राम के समक्ष नग्न हैं । विचार भी हमारे कर्म हैं और इसी कारण इतनी पीडा हमारे शरीर व मन को रोगी बना देती है । पीछे ही महार्षी ने हमें समझाया था कि राम जी को मुखौटा या बनावटी पन नहीं पसंद ! स्वामी जी महाराजश्री ने हमें हर पल अजपा जाप करने के लिए कहा है जिससे मन का पवित्रिकरण हो सके जिससे हम एक ऊँचे स्तर का चिंतन

कर्म कर सकें । चाहे हम सार्वजनिक तौर पर जितना भी छिपाएँ किन्तु मन पवित्र तब होता है जब हमें यह एहसास हो जाए कि जो भी हम सोच रहे हैं उसके सर्वज्ञाता राम हैं ।

पवित्र व सात्विक विचार तथा दूसरों के लिए भला सोचना एवं दूसरों को आशीर्वाद देना , यह सभी एक ही मन से केवल गुरू कृपा व राम कृपा द्वारा ही सम्भव है । पवित्र विचार मन को न केवल समिष्टी मन से जोड़ता है अपितु हमारे मन को विचारों के स्तर पर भी ठीक करता है । कुछ समय चैतन्य भाव को देकर विचारे कि यह हमारे मानस कर्म ही हैं जिसके कारण हम पीडा व वेदना को आकर्षित कर रहे हैं । हम अपने मानस को ख़रबों राम नाम के शाब्दिक चिंतन से भर दें ताकि हमारा मन पावन बन जाए क्योंकि परम गुरू राम हमारे मानस में विराजमान हैं । यह सदा स्मरण रहे कि ग़लत विचार राम का अपमान है । आइए हम अपने मन को अनन्त राममममम से स्नान करवा दें ।

***

## *What is the goal of Ram Naam Sadhana?*

*Some Siddhi for sure!*
*The FIRST SIDDHI to attain is SAYYAM or Self Control.*

*This SIDDHI is possible when we achieve 100% surrender to Param Guru Ram through ATMIK SAMARPAN (offering Mind body soul at the feet of Ram and self thereafter owns not even the self)which is to be coated with ANANT SIMRAN OF RAM naam.*

*Here begins the Sadhana... Ask yourself what is our state of Sadhana. Realize the self through these three words Sayyam, Samarpan and Simran. Jai Jai Ram*

## राम नाम साधना का लक्ष्य क्या है ?

कोई सिद्धी तो ज़रूर ! सबसे पहली सिद्धि जो हासिल होनी चाहिए वह है संयम।

यह सिद्धि तभी संभव है जब हम पूर्णतय १००%आत्मिक समर्पण द्वारा परम गुरू राम पर मन , तन व आत्मा समर्पित कर दें तब अपना कुछ भी नहीं रहता , अपना आप भी नहीं ! और इस सब को अनन्त सिमरन द्वारा लिप्त कर दें।

अब साधना आरम्भ होगी .... पूछिए अपने आप से कि हमारी साधना की क्या स्तिथि है .. स्वयं को संयम , समर्पण व सिमरन द्वारा साधिए।

जय जय राम

***

*Shree Shree Swamiji Maharaj Shree in shree Amritvani*
*Declared RAM GUNA Transcends three loka.*
*Maharishi taught me its only Glory of Ram Naam that manifests in time line yet that prevails in timelessness and spacelessness such eternally of Universality is in Ram Naam.*

*Let we feel the Glory of Raaàaam.*
*Raaam is the core of Cosmic Egg*
*or Hiranya garbha or the golden Egg of Cosmos.*
*its sound is beyond shabdik Rupa*
*Its eternal code of creativity*
*thus relevant and prevalent in three loka.*
*Ram the Dhwani*
*Remains unstruck or anhad*
*Ram the acoustic was created before Shrishti*
*RAM is cause of shrishti.*
*Raam is eternal sound.*
*Raam Dhun transcends beyond galaxies*
*Thus it remains the symbol of existence*
*for all animates and inanimates.*
*Raam naam is sattwik energy core*
*That salvages soul from birth and death.*

*Mangal kari is Raam*
*As it rescues us from grave situation to grief.*
*Ram Naam glory wheels eternal love*
*That heals all strata from those who are fallen*
*And those who are getting elevated.*

*Ram Naam is the solaceful balm at the hour of*
*Pain agony and failures.*

*Raam Maam is kripa as heartful singing*
*Allows us to experience nectar like bliss.*

*श्री श्री स्वामीजी महाराजश्री ने श्री अमृतवाणी में उद्घोषणा की कि राम गुण तीन लोकों को पार कर जाते हैं।*

*महार्षी ने मुझे सिखाया कि वह राम नाम की महिमा है जो समय रेखा में प्रकट होती है पर फिर भी समयाती व क्षेत्रातीत है , ऐसी राम नाम में सर्वव्यापी दिव्यता है।*

*आइए हम राम नाम की महिमा को महसूस करें ।*

*राम नाम ब्रह्माण्ड के अण्डे का मूल है या ब्रह्माण्ड का हिरण्य गर्भ या ब्रह्माण्ड का स्वर्ण अण्डा है ।*

*उसकी ध्वनि शाब्दिक रूप से पार है ।*

*वह रचना का दिव्य संकेत हैं तभी तीन लोकों में प्रचलित व प्रासंगित हैं ।*

*राम जो ध्वनि है वह अनहद है ।*

*राम जो शाब्दिक है वह सृष्टि से भी पूर्व रचे गए ।*

*राम ही सृष्टि की रचना का कारण है ।*

*राम दिव्य ध्वनि है ।*

*राम धुन आकाशगंगा के भी पार जाती है ।*

*इसलिए वे चेतन व अचेतन जीवों के अस्तित्व का प्रतीक हैं ।*

*राम नाम सात्विक शक्ति का स्रोत हैं जो आत्मा की जन्म व मृत्यु से रक्षा करती है ।*

*राम मंगलकारी है*

*क्योंकि वह विपत्तियों से लेकर शोक से हमारी रक्षा करते हैं ।*

*राम नाम की महिमा दिव्य प्रेम का चक्र चलाती हैं और उन सभी को जो गिरे हुए हैं व जो उच्च स्तर पर हैं उनको निरोग करती है ।*

*राम नाम एक आत्मिक बाम का कार्य करता है जब पीडा संकट व विफलताओं की घडी आती है ।*

*राम नाम कृपा है जब हृदय से निकला संगीत हमें मधु जैसा आनन्द प्रदान करता है ।*

*राम नाम हमारी आत्मा को सशक्त कर देता है ताकि हम अपने अहं को फेंक डालें और कुटिल मनोभावों को दुष्ट चिंता कर्मों व नीच विचार जो कि गुरू महिमा को ही समाप्त करके गद्दी की चाह रखते हैं ।ऐसे कुटिल इंसान भी राम नाम से मुक्ति प्राप्त कर सकते हैं ।मैंने इंदौर सेंट्रल जेल में देखा कि कैसे एक इंसान जिसने ७ लोगों का क़त्ल किया था वह पवित्र भी हुआ व उसका उत्थान भी हुआ ।*

*राम नाम परम दयालु हैं व क्षमा करने की सर्वोत्तम शक्ति।ऐसी महिमा है राम नाम की ।*

*राम तारक मंत्र है जो वाद विवाद को समाप्त करके हमारी आत्मा को पावन कर देता है जिससे हम ठीक हो जाते हैं ।राम नाम तो दिव्य वैद्य हैं जो कि सार्वभौमिक प्रार्थना है ।*

*राम नाम दिव्यता का सम्बंध स्थापित करके जीवात्मा को ठीक करता है ।*

*राम नाम जितनी भी पवित्रता हम सोच सकते हैं उनमें से सबसे पावन है ।*

*राम धुन तो ब्रह्माण्ड की रचनात्मक शक्ति है जो हर चेतनता, यहाँ तक पेड़ पौधों तक को भी को पावन कर दे ।*

*राम नाम जब जिह्वा पर विराजमान होवे तब हम त्रीकाल भी देख सकते हैं । ऐसी महिमा है राममममममममम की ।*

*प्यार से राम उच्चारिए, नाम के गुण हमारी आत्मा पर अपनी तह जमा देंगे ।*

*राममममममममममममम*

*****

*Ram Naam empowers our soul to discard our ego and cunning mindsets with many dushta chinta karma and nasty ideas who even want to banish guru mahima and wish to beget gaddi. Such treacherous people can also be salvaged with Ram naam. I have seen in Indore central jail a person got purified and elevated with Ram Naam though he killed 7 people earlier.*

*Raam naam is most dayalu and highest power for mercy. Such is Glory of Raam Naam. Raam is tarak mantra that allows conflict resolution in life even that cleanses our soul and we are corrected.Raam as eternal healer it is a Universal prayer.Raam naam bridges eternity and*

*mends jeevatman in mortality.Raam Naam is purest of all imaginable sacred pureites Raam dhun is the cosmic creative energy that purifies all life form including plants and trees. Ram naam when seated in our tongue one can even see tri kal. Such is glory of Raaaaauuuum. Lovingly take Ram naam is guna or eternal attributes will sediment our soul. Raaaaaauuuum.*

राम नाम हमारी आत्मा को सशक्त करता है ताकि हम अपना अहंकार त्याग सकें और कुटिल मानस कितने दुष्ट चिंता कर्मों व निकृष्ट विचार जो गुरू महिमा को ही लुप्त करना चाहते हैं और गद्दी पाने के इच्छुक हैं । ऐसे क्रूर व्यक्तियों की भी राम नाम से रक्षा की जा सकती है । मैंने इंदौर सेंट्रल जेल में देखा कि एक साधक का राम नाम द्वारा पवित्रीकरण व उत्थान हुआ जबकि उसके ७ लोगों को पहले मार डाला था । राम नाम परम दयालु हैं और क्षमा की सर्वोच्य शक्ति हैं । ऐसी है राम नाम की महिमा । राम तारक मंत्र है जो जीवन के संघर्ष के समाधान करता है और यह भी हमारी आत्मा को पवित्र करके हममें सुधार आता है । राम शाश्वत वैद्य हैं और सार्वभौमिक प्रार्थना । राम नाम दिव्यता के सेतु हैं और जीवात्मा को संसार में सुधारते हैं ।जितनी भी पूज्य पवित्र सत्ता सोची जा सकती हैं , राम नाम उन सबसे पवित्र ही है । राम धुन दिव्य क्रियात्मक शक्ति है जो हर जीव पेड़ पौधे व पशु पक्षी तक को पवित्र कर देती है ।राम नाम जब हमारी जिह्वा पर विराजमान होते हैं तो हम त्रीकाल तक देख सकते हैं । ऐसी महिमा है राममममम की । प्यार से राम उच्चारिए । नाम के गुण हमारी आत्मा पर तह जमाएँगे । राममममममममम

***

## *RAM BHAVA*

*Shree Shree Swamiji Maharaj Shree taught us to beget RAM with a pure bhava. Experiment and experiences of sadhaks do tell us that Bhava is the core and sublime mode and source of pure Ram Dharana.*

*But the question is whether bhava is just an emotion on its wing we travel for Ram Naam!*

*Ram Naam Bhav Dharana is a state of mind which is beyond psychological states of emotions as love, passion, hate, anger etc. Rather we encounter within this BHAVA which comes into existence when our questful mind surrenders to RAM Naam Tattwa or attributes of sublimity.*

*With prem bhava and bhakti bhava merges and our heart chants HIS name Raaauuum Raaaaauuum involuntarily then we move beyond our thought control zone.*

*This bhava is spiritual high beyond the frontiers of mind and thinking as this bhava allows soul to transcend beyond even known realm of perceivable knowledge. Trails of Viraha for Beloved Ram scale our bhava to pursue the supreme even on void space.*

*Selfless call undriven by our materialistic desire and even beyond social realm it dwells within as very very personal experience as this bhav aradhana be done being antarmukhi as taught by our beloved (I some time call him within) dadu thakur shree Shree Swamiji Maharaj Shree. His words*

*are divine so do contemplate on this Bhava of Ram naam Aradhana. This bhava is no superficial emotive state but a state that controls our buddhi.*

*Bhava is a state our questions are immersed. We don't think anything but Ram. Complete surrender to bhavamay Raam is the first step as this low soul is feeling. But for sure this bhavamaye state is brahmand itself and core of that is Ram Sharvashaktimatey Ram paramdayalu Ram. Let's begin to beget Bhava that will allow the celestial merger with Raaaaaum. Bhava ram bhava ram jai jai ram*

## राम भाव

श्री श्री स्वामीजी महाराजश्री ने हमें राम को पवित्र भाव द्वारा पाना सिखाया ।

साधकों के परिक्षण व अनुभवों ने बताया है कि भाव पावन नाम धारणा का मूल , उदात साधन व स्रोत है ।

पर प्रश्न यह है कि भाव क्या केवल एक भावना है जिसके पंख पर अग्रसर होकर हम राम नाम की यात्रा करते हैं ?

राम नाम भाव धारणा मन की ऐसा स्थिति है जो मानसिक भावनाओं जैसे प्रेम, राग,घृणा , क्रोध इत्यादि के पार है । बल्कि हम यह भाव भीतर तब अनुभव करते हैं जब हमारा प्रश्न करने वाला मन राम नाम तत्व को समर्पण कर देता है ।

जब प्रेम भाव व भक्ति भाव का समन्वय होता है और हमारा हृदय उसका नाम बिना उच्चारे राममममममम राममममममम लेता है तब हम अपनी विचारधारा के पार जाते हैं ।

यह भाव आध्यात्मिक स्तर पर मन व विचार के पार बहुत ऊँचा है ।क्योंकि यह आत्मा को अनुभवगत ज्ञान के पार ले जाता है । परम प्यारे राम के लिए विरह की वेदी हमारे भावों को और उच्च कर देती है ताकि हम उस परमेश्वर को पाने के लिए ख़ाली क्षेत्र में भी आतुर रहें ।

निष्काम बुलावा जो भौतिकता की लालसा से नहीं प्रेरित है और सामाजिकता के भी पार होकर बहुत ही अत्यन्त निजी अनुभव के रूप में भीतर उठता है क्योंकि यह भाव आराधना अंतर्मुखी होकर ही करनी है , ऐसा हमारे परम प्यारे दादा ठाकुर श्री श्री स्वामीजी महाराजश्री ने सिखाया । इनके वचन दिव्य हैं सो, राम नाम आराधना के भाव पर चिंतन कीजिएगा । यह भाव कोई कृत्रिम भावात्मक स्तर नहीं है अपितु ऐसी अवस्था है जो हमारी बुद्धी पर नियंत्रण करती है ।

भाव ऐसी अवस्था है जहाँ हमारे सारे प्रश्न विलीन हो जाते हैं । हम राम के अलावा कुंछ नहीं सोचते। यह अधम आत्मा समझता है कि पूर्ण समर्पण इस भावमय राम के प्रति पहला पड़ाव है ।पर निश्चय से यह भावमय अवस्था स्वयं ब्रह्माण्ड है और उसका मूल है राम , सर्वशक्तिमय परम दयालु राम । आइए हम इस भाव को पाने की चेष्टा करें जो कि हमारा दिव्य मिलन राममममम से करवाएगा ।

भाव राम भाव राम जय जय राम

***

## *MY RAAAM. MY MAA*

*O my Raam*
*You are the seed of creation*
*O my Maa.*
*You are the first vibration*
*Of Brahma Naadi*
*Hey Maa.*
*Your wish manifested*
*Mahamaye Lila came to play*
*Raamamaye fabric of cosmos*
*Created its lila of life form and beyond.*

*Maa O my Raaam*
*You are the Mother of all Mantra*
*You are Maha Mantra.*
*On your lap we breath*
*we grew with*
*We got smeared with amritya prem*
*As Raam bhava you gave us*
*O my maa.*
*RaaaMaaa is the goal Hey maa.*
*You taught us to bow to thee million times*
*you diluted or rather melted my ego*
*Hey maa.*
*Raam bhava you installed in us Maaa*
*As my Guru is Maa only.*
*You taught us shraddha Hey Maa*
*You gave us Dhairya of Sadhana*
*O my maa.*
*Maa you rescue me in all in all situation*
*Hey Param dayalu Ram.*
*Maa you are the energy of all power*

*Sharvashakti mati Hey Maa.*
*O maa you pardon my guilts and deeds.*
*You only lift us from ground*
*when the world has forsaken me.*
*You O my Maa to reduce our want and desire*
*You took us to the final frontier*
*Of Ram darbar*
*O my maa*
*Give us mukti from birth and death*
*Keep me away from Maya*
*Make me pious and symbol*
*Of universal good so that*
*I am never separated from you*
*O my Ram*
*I again ever suffer from Viraha*
*O my karunamayi Maa.*
*You are Ram you are Maa*
*you are cosmos but am*
*just a dust particle waiting*
*to get merged in Maha Maa mahalaya.*
*Pranam hey Maa*
*Pranam paramkripalu Raaam*
*My eternal maa.*

## ***मेरे राम.... मेरी माँ***

*ओ मेरे राममममम*

*आप सृष्टि के बीज हैं*

*ओ मेरी मइया*

*आप ब्रह्म नाद की*

*पहली गूँज है*

*हे माँ ।*

*आपकी इच्छाशक्ति के अनुरूप*

*महामई लीला का आगमन हुआ*

*राममय ब्रह्माण्ड ने जीवन व उसके पार*

*की लीला की रचना की ।*

*माँ ओ मेरे राम*

*आप सभी मंत्रों की माँ हैं*

*आप महामंत्र हैं ।*

*आपश्री की गोद में हम साँस*

*लेते हैं*

*हम बड़े हुए*

*जैसे आपश्री ने हमें राम भाव दिया*

*और अमृतय प्रेम से ओत प्रोत हुए*

*ओ मेरी माँ ।*

*राममां ही गंतव्य है हे माँ ।*

*आपश्री ने ही हमें करोड़ों बार आपश्री के लिए नत्मस्क होना सिखाया*

*आपश्री ने ही मेरे अहम को कम किया या पिघला ही डाला*

*हे माँ ।*

*आपश्री ने हममें राम भाव स्थापित किया*

*मेरे गुरू मां ही हैं ।*

*आपश्री ने हमें श्रद्धा सिखाई हे माँ*

*आपश्री ने ही हमें साधना के लिए धैर्य सिखाया*

*ओ मेरी माँ ।*

*माँ आपश्री ही मेरी हर परिस्थिति में रक्षा*

*करती हो*

*हे परम दयालु राम ।*

*माँ आप ही हर शक्ति का स्रोत हैं*

*सर्वशक्तिमते हे माँ ।*

*ओ माँ आप मेरे अपराध व कृत्यों*

*को क्षमा करती हैं*

*जब गिरते हैं आप ही हमारा उत्थान करती हैं*

*जब यह संसार मुझे छोड़ देता है ।*

*तुम ओ माँ हमारी कामनाएँ व तृष्णों को कम करती हो*

*और नाम दरबार के अंतिम छोर तक ले जाती हो*

*ओ मेरी माँ*

*हमें जन्म मरण के चक्कर से मुक्ति दो*

*मुझे माया से दूर रखो*

*मुझे पावन तथा सावभौमिक अच्छाई*

*का चिह्न बना दो ताकि*

*मैं तुमसे कभी अलग न हूँ*

*ओ मेरे राम*

*ताकि कभी फिर तुमसे विरह न सहना*

*पड़े ओ मेरी करूणामयी माँ।*

*आप राम हो आप ही माँ हो*

*आप सकल ब्रह्माण्ड हो*

*पर मैं तो केवल एक धूलि का कण*

*जो इंतज़ार कर रहा है*

*महा माँ महालय में विलीन होने के लिए*

*प्रणाम हे माँ*

*प्रणाम परमकृपालु राम*

*मेरी दिव्य माँ।*

*****

*Mantra shakti is our thought. power of mind scripts creativity.*

मंत्र शक्ति हमारे विचार हैं। मन की शक्ति रचनात्मकता लिखती है।

***

*Beeja Akahar (Ram)Maha Shakti Kosh was declared by Shree Shree Swamiji Maharaj Shree. Ram is treasure trove it is the core energy source of Cosmos. Seed is unmanifest aur suptta or un-awakened state.but with constant simran and uninterrupted jaap can do the wonder. With Jaap the seed Ram gets re-vibrated and dynamic power of Ram manifests and come to the fore. Wellness for all karuna for whole creation and energy fountains Raam as bliss and empower all with dedication and sacredness to unleash dynamic Ram and our life and beyond. Sarva Shakti Kosh is a bliss for all and allows good and liberation for all such powerful is Ram mantra. Its Amrit. Its pious most Shakti the Maa.*

बीजाक्षर ( राम ) महाशक्ति कोश है, ऐसा श्री श्री स्वामी जी महाराजश्री ने उद्घोषणा की ।राम तो निधि भण्डार है जो इस ब्रह्माण्ड की मूल शक्ति का स्रोत है । बीज अचेतन है और सुप्त अवस्था में होता है । पर सतत सिमरन व अविरल जाप करिश्मा कर सकते हैं ।जाप के साथ बीजाक्षर राम में फिर से कंपन व राम की क्रियात्मक शक्ति प्रकाटय रूप में प्रत्यक्ष सामने आ जाती है । सब के लिए सद्भावना , पूर्ण सृष्टि के लिए करूणा ऐसी शक्ति राम को परमानन्द के रूप में प्रस्फुटित करती है और सभी को लगन व श्रद्धा से सशक्त करके ऊर्जस्वी राम को हमारे लोक व परलोक के लिए खोल देती है ।सर्व शक्ति कोश ऐसा शक्तिशाली राम मंत्र है कि वह सभी के लिए आनन्द है और सभी को अच्छाई व मुक्ति की अनुमति देता है। वह अमृत है । वह सबसे पावन व सर्वशक्तिमान माँ है ।

***

When heart flowers and body bursts with sacred aroma then realize Ram is dancing in your mind as sakha.

जब ह्रदय प्रफुल्लित होता है और शरीर एक पावन सुगंध बिखेरती है तब समझिए कि राम आपके मस्तिष्क में नृत्य कर रहे हैं ।

***

The powerful storm when frozen as frames means prakriti of Ram at inter play of lila

फ्रेम के रूप में जब शक्तिशाली तूफान जम जाते हैं तब उसका अर्थ है कि राम की प्रकृति व लीला परस्पर क्रीड़ा कर रहे हैं।

***

The aroma of bhor is the signature scent of Maa Raam.

भोर की सुगंध माँ राम का हस्ताक्षर चिन्ह है ।

***

*Ram is the pious most dews of the dawn.*

राम भोर की सबसे पावन ओस है।

***

## *EMPOWERING Sadhana*

*RAAM IN RAAM NAAM IS THE MODE AND MARGA THE MANTRA AUR GOAL OF RAM NAAM SADHANA.*
*SADHANA IS POSSIBLE WHEN MAKE IT SADHYA OR POSSIBILITY.*

*POSSIBILITY COMES WITH SANNIDHYA WITH RAM OR INTIMATE RELATION WITH RAM. This is eternal sannidhya or proximity occurs in sandhya or in the time of conjunction of life in day time and space.*

*SAYYAM ERASES PERVERSION OF MIND AND BODY AND MAKE OUR SADHANA SATTWIK.*

*TO DO SATTWIK SADHANA ONE NEEDS TO DO FULL AND FINAL SAMARPAN TO ESHTA AND WORLDLY QUESTIONS MUST BE IMMERSED FOR GOOD.*

*SADHANA IS PURE STATE OF MIND BECOMES CONSTANTLY PURIFIED WITH RAM NAAM SIMRAN.*

*IT IS GURU KRIPA THAT SADHANA CAN REALLY HAPPEN AS GRACE NO MATTER ONE IS duty BOUND WITH CHORUS OF PARIVAR. ONE IS ENGROSSED IN WORLDLY DUTY OF PARIVAR THE BLISS OF sadhana increases as running away will not give you sadhana and its graceful bliss. Such is glory of ram naam. Just dedicate the self to Param Dayalu Raaaaauuuum.*

*BUT MOST SADHANA IS BROKEN BY CO-MEMBERS OF FAMILY. THAT'S PAAP. KOI KABHI BHI DUSREY KEY SADHANA KO CHOTA MAT DIKHAYA YA ERSHA KE KARAN VIGHNA NA GHATYE. RAM JI KO APRASSANA NA KAREY. SARVASHKTIMAN RAMJI IS UR SAKHA DONT INVITE HIS RAGE!. EVEN IN THE PRETEXT OF SOCIAL RELATION SAYYAM SHRADDHA JEEVAN HAI. HAR SADHAK KO PRANAM KAROGEY TO RAM JI PRASNNA HONGEY. SHRADDHA AUR SADHANA EK SAATH CHALTI HAI. GIVE SPACE TO ALL SADHAK AND SADHANA AS RAM IS SEATED IN SADHANA. RAAAUUUM.*

## साधना को सशक्त करना

साधना साध्य या सम्भवता है राम साधना के लिए

राम नाम में ,राम नाम साधना का, राम साधन व मार्ग है , मंत्र व गंतव्य है ।

साधना संभव है जब हम इसे साध्य या सम्भावना बना देते हैं ।

सम्भावना उपजती है जब हम राम से सानिध्य या घनिष्ठ सम्बंध स्थापित करते हैं ।

यह दिव्य सम्बंध या सानिध्य संध्या के समय स्थापित होता है ।

संयम मन व देह की विकृति को मिटा डालता है तथा साधना को सात्विक बना देता है ।

सात्विक साधना के लिए हमारा अपने इष्ट के प्रति पूर्ण समर्पण अनिवार्य है तथा सांसारिक प्रश्नों का विलीन होना आवश्यक है ।

साधना मन का वह पवित्र स्तर है जब उसका पवित्रिकरण राम नाम सिमरन द्वारा हो जाता है ।

यह गुरूकृपा ही है कि साधना कृपा स्वरूप सम्भव हो सकती है ,चाहे हम परिवार के चंगुल में ही क्यों न ग्रस्त हों । परिवार की सांसारिक कृत्यों में ग्रस्त होते हुए भी साधना का आनन्द बढ़ता जाता है और संसार से भागना न ही साधना दे गा और न ही पावन आनन्द । ऐसी महिमा है राम नाम की । बस परम दयालु राममममम को समर्पण कर दीजिए ।

पर बहुत सी साधना परिवार जनों के कारण ही टूट जाती है । यह पाप है ।कोई कभी भी दूसरे की साधना को छोटा न दिखाए या ईर्ष्या के कारण विघ्न न डाले । राम जी को अप्रसन्न न करे । सर्वश्क्तिमान राम जी आपके सखा हैं उनका क्रोध न आमंत्रित करें ! सामाजिक संबंधों की आढ में भी संयम और श्रद्धा जीवन है । हर साधक को प्रणाम करोगे तो राम जी प्रसन्न होंगे । श्रद्धा और साधना एक साथ चलती है । सभी साधकों व साधना को जगह दीजिए क्योंकि राम साधना में विराजमान हैं । राममममममममममममम

***

***When your Eyes do Ram Naam Ajapa Jaap***

*Let all of us wash our eyes with Ram Bhav amrit and see the world. We would find bliss all around and discover hidden ram kripa even amongst unknown. Your eyes when soaked in Ram bhava chetna or bliss then whenvever you would see your eyes will work as prayer. Drishti mey ram bhav bahro ki janha deko wanha adhayatmik prem jhalkey. Even eyes can do ajapa ram naam jaap million times if you wish. Go for drishti kripa. Ram ram.*

चलिए हम सब अपने नेत्र राम भाव अमृत से धो डालें और उनसे फिर इस संसार को देखें । तब हम हर तरफ़ परमानन्द व अनजानों में राम कृपा छिपी हुई पाएँगे । आपके नेत्र जब राम भाव चेतना या आनन्द से सिक्त होते हैं तब जहाँ भी आप देखेंगे आपके नेत्र प्रार्थना का कार्य कर रहे होंगे । दृष्टि में राम भाव भरो कि जहाँ देखो वहाँ अध्यात्मिक प्रेम झलके । नेत्र तक करोड़ों अजपा राम नाम जप कर सकते हैं यदि आप चाहें तो । दृष्चि कृपा के लिए जाइए ।

***

*Satyata or truthfulness for Ram Naam sadhana is so powerful that body mind can't (vichalit) unnerve the gati of atman. One can surely move away from mundane to cosmic. PARAM satya is Ram Param Guru is Raaam*

राम नाम साधना के लिए सत्यता इतनी शक्तिदायनी है कि देह व मन आत्मा को विचलित नहीं कर सकते । हम अवश्य ही भौतिकता से दिव्यता की ओर मुड़ सकते हैं । राम ही परम सत्य हैं ; परम गुरू ही राम हैं ।

***

*Ram Naam Jaap is eternal vibration that measures Tri Loka. It is unique divine energy that charges all animates and inanimate. Raaam in acoustic silence is creative energy for all the lila that transcends the world. Million times as Ram Naam trends and rent the air one can feel bliss all around. Bliss and Ram Naam jaap unifies at the meditative level of Sadhana. Being with Ram Naam jaap jyoti is siddhi of Ram Naam Sadhana.*

राम नाम दिव्य कंपन है जो त्रिलोक को मापता है । उनकी दिव्य अनुपम शक्ति सभी चेतन व अचेतन को प्रभार से परिपूरित कर देती है । राम ध्वनि के मौन में विश्व की हर लीला की क्रियात्मक शक्ति है । करोड़ों बार वातावरण में जब राम नाम की प्रवृति होती है, तब हम हर तरफ़ आनन्द महसूस करते हैं । परमानन्द व राम नाम जाप, ध्यान साधना में एक्य हो जाते हैं । राम नाम जाप ज्योति ही राम नाम साधना की सिद्धी है ।

***

*Dhwani of Raam becomes Dhun of Ram. Journey of Ram Naad Aradhana is to reach a stage where Most melodious Raam Dhun is heard and felt from whole lot of natural, man made*

*and technological sound. The day I hear Ram Dhun even in the running sound of an old three wheeler auto, I feel I am closer to Raaam. So melodious is Ram Naad aradhana.*

राम की ध्वनि राम की धुन बन जाती है। राम नाद आराधना की यात्रा को इस स्तर पर पहूंचना है जहाँ अतिशय मधुर राम धुन सुनी जाती है और हर तरह के प्राकृतिक, मानव द्वारा बनाये गए तथा प्रौद्योगिकीय ध्वनियों में उसे महसूस कर सकें। जिस दिन मुझे एक पुराने चलते हूए ऑटो की आवाज़ में भी राम धुन सुनाई देगी, मैं समझूंगा मैं राम के निकट हूँ। राम नाम आराधना कितनी मधुरतम है।

****

## *SHREE AMRITVANI*

*Shree Amritvani is only true companion of life.*
*Hari Naam Raam Naam is chandan tilak of Third eye*
*Resonance or sound is its true attributes*
*Essence of divinity is scripted here*
*Energy of Supreme Shree it denotes.*

*Amrit or Nectarine is true nature of divine wisdom*
*Mateic supreme Raam it promulgates*
*Resonance of sound go deep into anhad silence*
*Iit has solution to all situations of life.*
*Treasure trove for a supreme spiritualist*
*Vaikunta bhava it brings in this sharir tattwa*
*Answers of all kind is hidden in it as if ram enclyopedia*
*Nature of divinity speak as if akashvani*
*No soul can remain untapped once hearing its melody*
*Innermost self is touched with 327 occurence of Ram Naam in SHREE AMRITVANI.*

*RAAAAAAAAAAAAAAAUUUUM THIS IS DIVINE TEXT FOR RAM NAAM SADHAK.*

## श्री अमृतवाणी

श्री अमृतवाणी ही जीवन की असली संगी साथी हैं ।हरि नाम, राम नाम तीसरे नेत्र के ध्वनि का चंदन तिलक हैं क्योंकि उनके दिव्यता के गुणों का यहाँ आलेख हुआ है तथा यह परम श्री की शक्ति दर्शाता है ।

अमृत ही दिव्य ज्ञान का यथार्थ स्वरूप है ।
परम पुरूष राम यह प्रकाशित करते हैं।

अनहद के मौन में ध्वनि की गूँज गहरी जाती है जहाँ जीवन की हर परिस्थिति के समाधान निहित हैं ।
सच्चे आध्यात्मिक के लिए एक निधिवन है ।
शरीर तत्व में वैकुण्ठ भाव लाती हैं ।
हर तरह के समाधान इन में छिपे हैं जैसे कि राम का विश्वकोश हो ।
दिव्यता का स्वरूप का ऐसे उच्चारण होता है जैसे कि आकाशवाणी ।
कोई भी आत्मा अप्रयुक्त नहीं रह सकती यदि एक बार इनका मधुर श्रवण हो जाए।
श्री अमृतवाणी अन्तरात्मा को छू जाती है ३२७ बार राम नाम के उच्चारण से ।

राममममममममममम राम नाम साधक के लिए यह दिव्य पाठ है ।

***

## *Shree Amritvani : Extending an understanding.*

*Swamiji Maharaj Shree gifted us with immortal gift Amritvani. But we do fail to estimate such a Guru Kripa.*

*Let us be at the Feet of Shree Amritvani and learn its essence.*

*Amritvani is nectarine because it descended from divine through our Sadguru Swamiji Satyanandji maharaj Shree. Its words are of Supreme Ram Himself so it is Amrit. And if one can drink the nectar or internalize this Amrit then one becomes immortal meaning escaping from cyclic birth and death. Amrit at another level is eternal wisdom which is nothing but eshwartattwa rarely comprehended by jeevatman. Thus we refer Amritvani as just a sacred book but it is Vedas of all Veda for the mind who could comprehend Amritvani. It is not rule book of life but a formula of cosmic manifestation. But our conscious mind of jeevatman tend to believe that its couple of stanzas with melody. But Shree Amritvani is Himalaya amongst tallest summit of the world. Amrit gives one a state where mind moves beyond consciousness of body it scales eternal consciousness of Chaitanya Bhava that makes us understand that we are just one millioneth of a dot called Ram Chaitanya. Amritvani is an entry point to fathom bhav chaitanya through which mahachaitanya or divine attribute is experienced of Param Guru Ram. So next time when you take Shree Amritvani in your palm believe that whole brahmand is in your hand. Realize our buddhi, vivek, siddhi riddhi and ego are nothing before it so complete surrender all these so that our innocent self to be at the feet of Shree Amritvani so that Ram Shree Ram picks you up as child and embrace for eternity or amritbhav maha chaitanya as Param Guru is MAA BHAVATARINI*
*Raaaààaauuuium.*

**श्री अमृतवाणी : विस्तार से समझना**

स्वामीजी महाराजश्री ने हमें अनश्वर उपहार से सुसज्जित किया है । पर हम ऐसी गुरू कृपा को ग्रहण करने में विफल हो रहे हैं ।

आइए हम श्री अमृतवाणी के श्री चरणों में बैठकर इनका सार समझें ।

अमृतवाणी अमृत है क्योंकि यह परमेश्वर से हमारे सदगुरू स्वामीजी सत्यानन्दजी महाराजश्री में अवतरित हुईं । इनके शब्द स्वयं परमेश्वर श्री राम के शब्द हैं तभी यह अमृत हैं ।यदि कोई इस अमृत को पी कर यानि भीतर ग्रहण कर सके, तो वह अनश्वर हो जाएगा यानि जन्म मृत्यु के चक्कर से बच जाएगा । अमृत एक अन्य स्तर पर दिव्य ज्ञान है जो और कुछ नहीं अपितु ईश्वरतत्व है ,जो कि कोई बहुत ही विरला जीवात्मा समझ सका है । हम अमृतवाणी को पूज्य अवश्य मानते हैं पर यह वेदों के भी वेद हैं ,उस मन के लिए जो अमृतवाणी को समझ पाया है । यह कोई नियमों की पुस्तक नहीं है अपितु ब्रह्माण्ड की अभिव्यक्ति का सूत्र इन में निहित है । पर हम जीवात्माओं का चेतन मन बस यही मानता है कि यह तो कुछ मधुर दोहे हैं । पर श्री अमृतवाणी विश्व के सबसे ऊँचे शिखरों में से हिमालय के समान हैं । अमृत एक ऐसा स्तर प्रदान करता है कि मन ,देह की चेतना के पार चैतन्य भाव की दिव्य चेतना में ले जाकर समझाता है कि हम राम चैतन्य में ,करोड़ों में केवल एक बिंदु के समान हैं। अमृत वाणी एक प्रवेशद्वार है जहाँ भाव चैतन्य को महाचैतन्य या परम गुरू के दिव्य गुणों को अनुभव किया सकता है ।
सो अगली बार जब आप श्री अमृतवाणी को अपनी हथेली में लें तो विश्वास कीजिएगा कि समस्त ब्रह्माण्ड आपकी हथेली में है । यह अनुभव कीजिएगा कि हमारी बुद्धी, विवेक,सिद्धी, रिद्धी व अहम् इनके समक्ष कुछ भी नहीं हैं , अमृतवाणी के श्री चरणों में इन सभी का व अपने सरलतम आत्मा का सम्पूर्ण समर्पण करिए ताकि राम श्री राम आपको अपने बच्चे की भाँति उठाएँ व सदा के लिए अपने हृदय से लगा लें। अमृतभाव महाचैतन्य परम गुरू माँ भवतारिणी ही हैं ।
राममममममममममममममममममम

***

## *Gurumukhi and Antarmukhi*

*When I tend to be Gurumukhi archana mudra I learn from them..... Swamiji Mahaharj Shree taught us discipline of aradhya and aradhana. Gave us path which siddha purush would envy and He Gave us Raam as our Param Guru.*

*Param Divyaa Pujya Premji Maharaj Shree taught us how to absorb pains of others and how selflessly one can heal the world with prayer.*

*Maharishi Swamiji Dr. Vishwa Mitterji taught us how to sacrifice the self and live and work for Ram on Behalf of Swamiji Majaraj Shree. He taught us the brilliance if ANANDA as He was powerful energy of Ramm. He was universal Aashirvad data yet never ever claimed any miracle he did. He echoed youthfulness innovation and creativity in youth. Natamastak He remained forever Such humbleness he portrayed.*

*Do we need any other margdarshann? Gurujano ko koti koti pranam ki hum jaisey papi o ko sthan diya apney charno mey aur galey lagaye.*

*WAHA GIRU WAHA WAHA RAM WAHA.*

## गुरूमुखी और अंतर्मुखी

जब मैं गुरूमुखी अर्चना मुद्रा में होता हूँ तो मैं उनसे सीखता हूँ ....

स्वामी जी महाराजश्री ने हमें आराध्या व आराधना के अनुशासन सिखाए । हमें ऐसा मार्ग दिया जिससे सिद्ध पुरूष को भी ईर्ष्या हो जाए और राम हमें परम गुरू के रूप में दिए ।

परम देव पूज्य प्रेम जी महाराजश्री ने दूसरों की पीडा आत्मसात करनी तथा कैसे हम निष्काम भाव से इस संसार को आरोग्य कर सकते हैं, यह सिखाया ।

महर्षि स्वामी डॉ विश्वामित्र जी ने अपने आप को न्योछावर करना तथा कैसे स्वामी जी की ओर से राम के लिए जीना व कार्य करना , यह सिखाया । उन्होंने ने हमें आनन्द की प्रतिभा सिखाई क्योंकि वे स्वयं ही राम की सर्वोपरी शक्ति थे । वे सार्वभौमिक आशीर्वाददाता थे किन्तु कभी किसी चमत्कार पर अपना आधिपत्थ्य नहीं बताया । उन्होंने सदा यौवन की नवीनता तथा युवा क्रीयात्मकता को प्रतिबिंबित किया । वे सदा नत्मस्क ही रहे तथा विनम्रता के दिव्यमूर्ती बने ।

क्या हमें किसी अन्य मार्गदर्शन की आवश्यकता है?
गुरूजनों को कोटि कोटि प्रणाम कि हम जैसे पापियों को अपने चरणों में स्थान दिया और गले लगाया ।

वाह गुरू वाह!
वाह राम वाह !

***

*SHREE RAM SHARANAM GACHAMI*

*श्री राम शरणम् गच्छामि*

*****

## *How RAM saved a Sadhak!*

*He saw death coming yet RAM came as oxygen.*

*He narrated an incident happened two days back. I am trying to put his words as closely to his expression so that it can help other sadhaks too.*

*" It was a pleasant evening, suddenly I found myself choking. I thought it was breathlessness which was happening for 10 days or so. Outside it was storm in a swing as dust got the wings! I got choked further. I ran for an inhaler and ran upto sink to water the mouth as it was sweeping suffocation. Mouth was wide open even eyes was looking for air as body became restless. Thinking how to go to hospital for grab of oxygen. But body was sinking and he was remembering Ram. Knew even a ventilator won't be able to help. Pain of death was looming large and knew with ventilator he will soon die. Then asked Ram to give me breath or let me die as I can't bear the dance of death anymore. Soon Ram Ram was in the air I started breathing and without even oxygen Isurvived the surely impending death. So I saw Ram in the thin air where death was doing its tandav. I survived. It was RAAAM"(the whole episode lasted for one and half hour and he found himself lying on bed with tranquil breath at the end)*

*HE IS FINE TODAY. Raam is so powerful was seen by the sadhak. He also told me that he was ready to die. But asked Ram to take him with ease not so torturous way of acute killing suffocation. He told Ram I am ready for Visharjan so why pain..let you take me. Such was the dialogue my friend sadhak had and he narrated very pleasantly.*

*I feel I should at least remember Ram at my departure time. It will be a bliss if it happens with me and all sadhaks who know nothing but Raaaaam.*

## राम ने कैसे एक साधक की रक्षा की ?

उन्होंने मृत्यु को आते देखा फिर भी राम ऑक्सीजन के रूप में आए ।

उन्होंने एक घटना का उल्लेख दो दिन पूर्व किया । मैं उनके शब्द जितना हो सके यथार्थ रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास कर रहा हूँ ताकि बाकि साधक इससे लाभ उठा सकें ।

" बहुत मनभावन शाम का समय था, पर अचानक मेरा दम घुटने लगा । मुझे लगा साँस की तकलीफ़ हो रही है जो कि पिछले १० दिनों से हो रही थी । बाहर आँधी चल रही थी मानो धूलि को पंख लग गए हों । मेरा और दम घुटा । मैं श्वसित्र (इनहेलर) के लिए दौड़ा और सिंक पर पानी के लिए दौड़ा क्योंकि दम बहुत घुटने लग गया था । मुँह पूर्ण रूप से खुला था व आँखें साँस ढूँढ रही थीं जैसे जैसे शरीर बेचैन हो रहा था । सोच रहा था हस्तपताल कैसे जाऊँ ताकि ऑक्सीजन लग सके ।पर शरीर जवाब दे रहा था और वे राम का स्मरण कर रहे थे ।

उन्हें ज्ञात था कि वेन्टीलेटर भी कुछ नहीं कर पाएगा । मृत्यु की पीडा पूर्ण रूप से मँडरा रही थी और अब लग रहा था कि वेन्टीलेटर से भी बच नहीं पाएँगे । उन्होंने राम से कहा मुझे साँस दीजिए या मृत्यु आ जाने दीजिए क्योंकि मृत्यु का नृत्य सहन नहीं हो रहा था । तभी राम राम हवा में आए और मैंने साँस लेना आरम्भ कर दिया और बिना ऑक्सीजन के मैं मृत्यु के मुँह में भी सुरक्षित रहा ।मैंने राम पतली सी हवा में देखे जहाँ मृत्यु अपना ताण्डव कर रही थी । मैं बच गया । वे राममममम थे "

यह सारी घटना डेढ़ घण्टे तक चली और अंत में उन्होंने अपने आप को शांत स्वासों के संग बिस्तर में पाया ।

वे आज स्वस्थ हैं । राम इतने शक्तिशाली हैं यह उन साधक ने देखा । उन्होंने मुझे यह भी बताया कि वे मरने के लिए तैयार थे । पर राम से कहा कि कृपया आराम से लेकर जाएँ न कि इतने कष्टदायी रूप में घुटन के साथ ! उन्होंने राम से कहा कि मैं विसर्जन के लिए तैयार हूँ फिर पीडा क्यों ... आप आएँ मुझे लेने ।

मेरे संगी साधक ने यह वार्तालाप बहुत ही शांतभाव से उल्लेख किया।

मुझे लगा कि मुझे भी अपने अंतिम क्षणों में राम का स्मरण होना चाहिए । वह परमानंद होगा यदि मेरे साथ ऐसा होता है और उन सभी के साथ जिन्हें राममममम के सिवाय कुछ नहीं ज्ञात ।

***

## *DIALOGUE WITH GURU.*

*To have Dialogue with Guru*
*I must be tranquil enough*
*To hear the sound of dew that drops*
*Or the sound of pen that writes.*
*I must cease to have my own wishes*
*I must snub my ego or aham*
*At least for time being*
*I must not use our "buddhi"*

*To interpret their words*
*even before they are uttered.*
*I must know that I may be talking to Guru*
*but answers are from Param Guru Ram.*
*To hear the whisper of divine*
*The sound of wind must not disturb*
*All sound becomes maun or silence*
*And the noise of silence must*
*Be unheard.*
*I never knew I was already*
*In the mid of dialogue*
*With my Guru*
*Who smiles in sublime solace*
*speaks in the language of bliss*
*give a glance to smothen*
*our aham based complicated mind*
*Guru was purifying me*
*Even when I was planning a dialogue.*
*Such blissful is my Guru*
*His words and His Grace*
*Such loving is My Raaaam.*

## *गुरू के साथ वार्तालाप*

*गुरू के साथ वार्तालाप*

*करने के लिए*

*उन ओस की बूँदों को सुनने के लिए*

*या उस क़लम जो लिखता है उसकी ध्वनि सुनने के लिए*

*मुझे अति शांत भाव में होना पड़ेगा।*

*स्वयं की इच्छाओं का शांत*

*होना आवश्यक है*

*अपने अहम को धिक्कारना ज़रूरी है*

*कुछ क्षणों के लिए अपनी बुद्धि*

*का उपयोग यदि न करूँ*

*उनके उच्चारण करने से पहले*

*यह समझने के लिए*

*कि उन्होंने क्या कहा।*

*मुझे यह ज्ञान होना चाहिए*

*कि मैं वार्तालाप तो अपने गुरू*

*से कर रहा हूँ*

*किन्तु उत्तर तो परम गुरू की*

*ओर से आ रहे हैं।*

*दिव्य वाणी सुनने के लिए*

*हवा की ध्वनि भी न तंग करे*

*सभी ध्वनियाँ मौन में परिवर्तित हो जाएँ*

*और मौन का शोर तक भी न सुने।*

*मुझे नहीं पता था कि मैं तो*

*अपने गुरू के साथ वार्तालाप*

*के मध्य में था*

*जो उदात शांत भाव में मुस्कुराते हुए*

*आनन्द की भाषा बोलकर*

*हमारे अहम भरे जटिल मन को अपनी*

*शांत नज़र से देखकर*

*मेरा पवित्रीकरण कर रहे थे*

*जब कि मैं उनसे वार्तालाप करने की*

*तैयारी में था ।*

*ऐसे आनन्दमय हैं मेरे गुरू*

*उनके शब्द व उनकी कृपा*

*ऐसे प्यारे हैं मेरे राम ।*

***

## ***RAM NAAM MAHACHAITANYA***

*Chintan chaitanya is not just a bhav of Ananda for Supreme Raaum but HIS intra-cosmic consciousness that first wishes a creation which manifests and take us back to the pre wish stage of unmanifest. Ramamaye Chetna is spandan of three loka. Ram Naam jaap connects you with that spandan or first cosmic vibration. After being in the Ramamaye stage one floats beyond fear as dynamic tide in mahasamudra which constantly make and unmake yet it is part of the Ocean called anant Raaaaaum. Here begins the Ram Chetna which travels upto mahachaitanya. Raaaaaaaauuuuuum.*

## **राम नाम महाचैतन्य**

चिंतन चैतन्य परमपुरुष राम के आनन्द का केवल कोई भाव नहीं ही है अपितु उनकी ब्रह्माण्डीय चेतना है जिसने सृष्टि की रचना का विचार किया व प्रकट हुई तथा फिर हमें उस इच्छा के पूर्व अप्रकाट्य स्तर पर ले जाती है । राम चेतना तीनों लोकों का स्पंदन है । राम नाम जाप हमें उस स्पंदन के साथ जोड देता है ।राममय स्तर में रहने के बाद हम भय से पार हो जाते है जैसे की एक गतिशील ज्वार महासमुद्र में नित्य

बनती व विलीन होती है पर फिर भी वह उस अनन्त महासागर राममममममम का ही अंश होती है। यहाँ से राम चेतना का आरम्भ होता है जो महाचैतन्य तक जाता है। राममममममममममममममममम

***

## *SHREE RAM DARBAR MEY VISHESH KAUN?*

*Kisi sadhak ney apney sathi ko bola "Shree Ram Sharnam mey kisiko VISHESH banney ki koshish nai karna chaiye sirf parm guru key padma charno mey baithkey vishiwash sey sewa karna chahiye"*

*Achanak ek akashvani sunai di*

*" Ati sundar. Lekin Aap sab log jo swamiji maharaj ke parivar mey hain ye hi VISHESH Hai. SHREE RAM DARBAR VISHESH HAI. Yanha vykkti vishesh nai hai.Param Guru Ram ek Mantrik, jyoti swarup apar brahmand key swarup siraf ek matra VISHESH HAIN. Apney ko meetakey sab ka sewa karna hi sikhaya haiy Swamiji Maharah Shree ney. Ram Naam ko bhitar rakhkey Anant Jaap karney waley sarey VISHESH Hain Param Guru Shree Ram key charno mey. Aap vishesh hain bina kahey bhi ye hi vishesh baat hai Shree Ram Durbar ki"*

*Ram Ram*

## श्री राम दरबार में विशेष कौन?

एक साधक अपने साथी को बोला" श्री राम शरणम में किसीको विशेष बनने की कोशिश नहीं करनी चाहिए सिर्फ परम गुरू के पद्म चरणों में बैठकर विश्वास से सेवा करनी चाहिए "

अचानक एक आकाशवाणी सुनाई दी

" अति सुंदर। लेकिन आप सब लोग जो स्वामीजी महाराजश्री के परिवार में हैं यह ही विशेष हैं। श्री राम दरबार विशेष है। यहाँ व्यक्ति विशेष नहीं है। परम गुरू राम एक मांत्रिक, ज्योति स्वरूप अपार ब्रह्माण्ड के स्वरूप सिर्फ एक मात्र विशेष हैं। अपने को मिटाकर सबकी सेवा करना ही सिखाया है स्वामीजी महाराजश्री ने। राम नाम को भीतर रखकर अनन्त जाप करने वाले सारे विशेष हैं परम गुरू श्री राम के चरणों में। आप विशेष हैं , बिना कहे भी यह ही विशेष बात है श्री राम दरबार की "

राम राम

****

## *THE POWER OF RAM NAAM SIMRAN*

*Shree Shree Swamiji Satyanandji Maharaj Shree gave us this un -parallel spiritual mode called SIMRAN or CONSTANT REMEMBRANCE OF RAM NAAM. But is it just simran? Perhaps little more. Let us briefly explore.*

*JUST WE WILL PEEL OFF THE WORD SIMRAN TO REACH ANOTHER LEVEL OF MEANING.*

***S**ubconsciousness and awareness of Ram Ram*

***I**mpersonal mind is involuntarily layered with naam.*

***M**ind is taught with method called Simran.*

***R**esonance in silence patters our thought.*

***A**ssurance to self of constant companionship of Ram*

***N**ever a separation with Ram Naam is Simran.*

***N**ow we will shift our thought to another level of understanding.*

*We tool our Mind with Simran of Ram Naam to freshen up our thought with pure bhava. This starts with conscious effort by telling to the self" Swamiji Maharaj always wanted us to do simran of Ram Naam even waiting for bus or doing some job or karma". Now this conscious effort and constant reminder to the self is must for doing Simran or be in the state of Constant Remembrance.*

*Simran at one level layer our conscious thoughts called Chintan in NOW. With this process our thoughts are so layered that aberration or following the asatya marga becomes impossible. Even one deviates simran of Ram Naam brings one back to pure thought and pure living.*

*From voluntary Simran or Constant Remembrance with years of contemplation it becomes involuntary effort of doing Ram Naam even at subconscious level. Here begins the churning of Ram Naam consciousness which is Ram Chaitanya bhava at the deeper super subconscious state of chetana at the atmick level. This Simran is a silent process to beget Shri Chaitanaya Bhava of Ramayness which propels within as a seed of chetna or Rama consciousness. This is the siddhi begotten from sadhana of Ram Naam Chintan or simran.*

*Finally The constant companionship of Nirakar Jyotiswaup Param Guru Ram in the shape of Simran allows us to face the vagaries of life and help us to pump the self with renewed confidence –- what to loose... what to fear if Raaam is in me and lives as me..*

*THUS SWAMIJI MAHARAJ SHREE GAVE US THE KEY OF ETERNAL CONSCIOUSNESS OF RAM NAAM WITH THE MODE OF SIMRAN. Should we not revitalize in us the Simran process so that Raam remains with us and we can live a fearless life with a touch of piousness? Ram Raaaam Raaaaaaaaaauùm.*

## राम नाम सिमरन की शक्ति

श्री श्री स्वामीजी सत्यानन्द जी महाराज श्री ने हमें अद्वितीय आध्यात्मिक साधन प्रदान किया है- सिमरन या राम नाम का सतत स्मरण । पर क्या यह केवल सिमरन है ? शायद कुछ और भी । चलिए थोड़ा इसका समन्वेषण करते हैं ।

चलिए हम सिमरन के हर एक शब्द को एक एक करके समझें ताकि हम सिमरन के एक और स्तर तक पहुँच सकें ।

राम नाम की अवचेतनता व सजगता

अवैयक्तिक मन अनायास ही नाम से ओत प्रोत होता है

मन को सिमरन द्वारा शिक्षित किया जाता है

मौन मे सम्पंदन हमारी विचारधारा को स्वरूप देता है

स्वयं को राम के सानिध्य का आश्वासन मिलता है

राम नाम से कभी विछोडा न हो यही सिमरन है

अब हम अपनी विचार धारा एक अलग स्तर पर लेकर जाएँगे ।

हम अपने मानस को राम नाम का सिमरन सिखाएँगे ताकि हमारे विचार पवित्र भावनाओं से ताज़ा हो सकें । यह एक सजग प्रयास द्वारा आरम्भ होता है जब हम अपने आप से कहते हैं " स्वामीजी महाराज ने सदा हमें राम नाम का सिमरन करने के लिए कहा, जब हम किसी बस का इंतज़ार करते हैं या कोई कार्य या कर्म करते हैं " अब यह चेतन प्रयास व सतत स्मरण स्वयं सिमरन या सतत स्मरण के भाव में रहने के लिए के लिए आवश्यक है ।

सिमरन एक स्तर पर हमारे चेतन विचारों को वर्तमान के चिंतन की परत से ओढ़ देता है । इस प्रयास से हमारे मानस के विभिन्न स्तरों पर कुछ भी गलत करना असम्भव हो जाता है । यदि कोई राम नाम के

सिमरन से विचलित हो जाता है तो राम नाम फिर से वापिस पवित्र सोच व पवित्र जीवनयापन में ले आता है।

वर्षों के चिंतन से स्वैच्छिक सिमरन या सतत स्मरण वह राम नाम का अवचेतनता के स्तर पर अवैयक्तिक प्रयास बन जाता है। यहाँ अब राम नाम चेतनता की आलोड़न आरम्भ होती है जो कि राम चैतन्य भाव ही है, परम अवचेतनता की गहराई में, चेतना के आत्मिक स्तर पर। यह सिमरन राममयता के श्री चैतन्य भाव को प्राप्त करने की एक शांत प्रक्रिया है, जो भीतर चेतना के बीज या राम चेतनता को प्रेरित करता है। यह सिद्धी राम नाम चिंतन या सिमरन की साधना से उपलब्ध होती है।

अंतत: निराकार ज्योतिस्वरूप परम गुरू राम का सतत सानिध्य, सिमरन के रूप में हमें जीवन की जटिल समस्याओं को सामना करने व हममें नए आत्मविश्वास से परिपूरित कर देता है - क्या खोना है ... किसका भय जब राम मुझमें है और मुझ में रहते हैं।

अत: स्वामीजी महाराजश्री ने हमें सिमरन के माध्यम से दिव्य चेतना की कुंजी दे दी। क्या हमें सिमरन की प्रक्रिया को स्वयं मे पुनर्जीवित नहीं करना चाहिए ताकि राम सदा हमारे संग रहें और हम एक भय मुक्त जीवन पवित्रता के संग व्यतीत कर सकें?

राम राममममम राममममममममममम

***

## *My beloved Swamiji Maharaj Shree*

*O my loving Baba*
*Hey Shree Shree Swamiji Satyand Maharaj Shree*
*At your feet I, nay ,We all wait for your commands.*
*Everytime we read Shree Amritvani*
*new meaning dawns in our mind*
*So dynamically divine script you created*
*Inter woven with attributes of Ram.*
*So sublime knowledge you served through*
*Shree Bhakti Prakash.*
*When we do swadhay*
*We realize Ram is Cosmos only.*
*We unlearn many nuances*
*And encounter greater truth*
*Of Absolute Supreme.*
*Yet words are so moving*

*That our inner core is searched*
*And vibrating Raaaaam appears*
*Such is your poetry*
*Hey Swamiji Maharaj Shree.*

*I for hour sit before your portrait*
*And realize the innocent laughter*
*You carried all through to inspire all.*
*Divinity smiles with your laughter*
*And yet your wisdom sparks from*
*Your penetrating and sublime eyes.*
*Your face is epitomizing*
*Spiritual brilliance*
*That beams love and eternal love*
*And aura of geru creates*
*the cosmic conjunction*
*as if the whole aakassh ganga*
*sparkling the unending Deepawali*
*as if Ram Naam is whispering as bliss*
*all over your face.*
*Such a brilliance light you beam*
*that diminishes our ego.*
*Every time I look upto you*
*I feel the commandments of grace and love.*
*I find the tenacity of Sadhana and siddhi*
*in your eyes.*
*I discover the lyrical Ram Naam Jaap*
*resounding in high pitch and echoes*
*in deepest sacred silence*
*as you look on to smear all.*
*I look at your feet*
*get merged in deepest shraddha.*
*I am aware of the stick you hold*
*so I don't indulge in aberration.*
*Through my Manas Eye*
*I see Shree Adhistanji you carry in your heart*
*and the spiritual brilliance radiates*
*and envelopes thousand million souls*
*over the century of Ram Naam Sadhana.*
*I do discover the acoustics of sadhana*
*as deeper I look into you.*
*you are an enigma but very loving baba.*
*in you we see nirakar jyotiswarup Ram.*

*You come and descend at our call*
*You do give us solace to fight back in life*
*and we are graced by you everytime*
*as a child I look on and on*
*tears of joy rolls on..*
*so loving you are*
*O my gracious Baba.*
*koti koti pranam*
*you are the Dawn of eternity*
*you are spiritual zenith*
*I look up and beg*
*please make me a better sadhak*
*make me humbler*
*let me spread love for all*
*and I see whole world*
*in your Mantric Ram*
*Such loving gift you gave to all of us.*
*Keep us at your feet ever*
*O MY LOVING SWAMIJI MAHARAJ SHREE.*
*PRANAAM raaaaaaaaaam*

## ***मेरे परम प्यारे स्वामीजी महाराजश्री***

*ओ मेरे प्यारे बाबा*
*हे श्री श्री स्वामीजी सत्यानंद महाराजश्री*
*आपके श्री चरणों में मैं, नहीं, हम सब आपश्री के आदेशों का इंतज़ार करते हैं ।*
*हर बार जब हम श्रीअमृतवाणी का पाठ करते हैं*
*एक नई समझ की हमारे मानस पर भोर होती है*
*ऐसा क्रियात्मक दिव्य पाठ आपश्री ने रचा*
*जो राम के गुणों से ओत प्रोत है ।*
*ऐसा उदात ज्ञान आपश्री ने श्री भक्ति प्रकाश द्वारा दिया ।*
*जब हम स्वाध्याय करते हैं*
*तो हमें अनुभव होता है कि राम ही सकल ब्रह्माण्ड हैं ।*
*हम परम पुरूष के कितने ही भेद व सत्य को जान सकते हैं ।*
*पर फिर शब्द इतने प्रभावशाली हैं कि हमारा अंतर्मन चिंतन करने लगता है और राम सम्पंदन के साथ प्रकट होते हैं*

*ऐसी आपश्री की कविता शैली है*
*हे स्वामीजी महाराजश्री ।*

*मैं आपश्री के चित्र के समक्ष एक घण्टे*
*तक बैठा*
*और आपश्री की सरल हँसी को अनुभव किया कि कैसे इसने सभी को प्रेरित किया ।*
*दिव्यता आपश्री की हँसी से मुस्कुराती है और ज्ञान आपश्री की गहरी व उदात नेत्रों से छलकता है ।*
*आपश्री का चेहरा आध्यात्मिक तेज़ की उत्कृष्टता झलकाता है*
*जो प्रेम व दिव्य प्रेम विस्तृत करता है*
*और गुरू की आभा ब्रह्माण्डीय संयोजक*
*रचता है*
*जैसे कि समस्त आकाश गंगा*
*अनन्त दीपावली की चमक बिखेरती*
*जैसे कि राम नाम आपश्री के चेहरे पर आनन्द धीरे से बोलता हो ।*
*ऐसा तेजस्वी प्रकाश आप फैलाते हैं*
*जो कि हमारा अहंकार कम कर देता है ।*
*जब भी मैं आपश्री की ओर निहारता हूँ*
*मुझे कृपा व प्रेम के आदेश मिलते हैं ।*
*मैं साधना व सिद्धी का तप आपश्री के नेत्रों में देखता हूँ ।*
*जैसे ही आपश्री सब को ओत प्रोत करने के लिए निहारते हैं मैं संगीतमय राम नाम के जाप को ऊँचे स्वर तथा गहरे पवित्र मौन में प्रतिबिंबित होते हुए महसूस करता हूँ ।*
*मैं आपश्री के चरणकमलों की ओर देखकर गहरी श्रद्धा में डूब जाता हूँ ।*
*मुझे आपश्री की लाठी का आभास है जो आपश्री ने थामी हुई है ताकि मैं कोई गलती न कर सकूँ ।*
*मैं अपने मानस नेत्रों से देखता हीं कि श्री अधिष्ठान जी को आपश्री ने अपने हृदय में विराजित किया है*
*और आध्यात्मिक तेज़ विस्तृत होताहै*
*जो कि करोड़ों आत्माओं को एक शतक से राम नाम साधना से ओत प्रोत कर रही है ।*
*जब मैं और गहराई से आपश्री को निहारता हूँ तो साधना के स्वर मुझे अनुभव होते हैं ।*
*आप एक रहस्य हैं किन्तु मेरे अतिशय प्यारे बाबा हैं ।*
*आप में हम निराकार ज्योतिस्वरूप राम को देखते हैं ।*
*आप हमारी पुकार पर आते हैं*
*आप हमें शांति देते हैं कि हम फिर से जीवन में उठ कर लड़ सकें*
*और हम पर कृपा आपश्री बरसाते हैं जब भी एक शिशु की भाँति मैं आपश्री को देखता रहता हूँ और आनन्द*

*के अश्रु छलकते रहते हैं ...*
*कितने प्यारे हैं आप*
*ओ मेरे कृपामय बाबा ।*
*कोटि कोटि प्रणाम*
*आप अनन्त की भोर हैं*
*आप आध्यात्मिकता की चोटी हैं*
*मैं आपश्री की ओर देखता हूँ*
*और भिक्षा की प्रार्थना करता हूँ कि*
*कृपया मुझे एक अच्छा साधक बना दीजिए*
*मुझे और विनम्र बना दीजिए*
*मैं सब ओर प्रेम बिखेरूँ*
*और मैं सम्पूर्ण जगत को*
*आपश्री के मांत्रिक राम में देखूँ*
*ऐसा प्यारा उपहार आपश्री ने हम सब को दिया है ।*
*कृपया सदा हमें अपने चरणकमलों में रखना*
*ओ मेरे प्यारे स्वामीजी महाराजश्री*
*प्रणाम*
*राममममममममममममममम*

*****

## *In Search of Glory of Ram Naam*

*When we seek Glory of Raam Naam*
*We find that in melody of Ram Naam.*
*Melody of Ram Dhun brings melody in life.*
*Contrasts and turbulence of life ceases*
*As anant raam naam creates the ultimate sync.*
*Discovering melody of ram naam means*
*We are away from fear of life and its challenges.*
*The sacred melody reinstates shraddha in self*
*Complete surrender allow us to hear*
*Ram Naam Sur jhankar and melody in Sitar*
*As taught by our beloved Shree Swamiji Maharajji.*
*Ram Naad Heals all and*

*Ram naam reinvents*
*Prem bhava that is melody of cosmic creation.*

## *राम नाम की महिमा की खोज में*

*जब हम राम नाम की महिमा की प्रार्थना करते हैं*
*हमें वह राम नाम के माधुर्य में मिलती है ।*
*राम धुन का माधुर्य जीवन में माधुर्य भर देता है ।*
*जैसे ही अनन्त राम नाम सर्वोच्च समन्वित रचता है*
*जीवन की वेदनाएँ व विषाद समाप्त हो जाते हैं ।*
*राम नाम के माधुर्य को खोजने का तात्पर्य है कि हम*
*जीवन के भय व उसकी चुनौतियों से बहुत दूर हैं ।*
*पवित्र धुन फिर से श्रद्धा को स्वयं में स्थापित कर देती है ।*
*सम्पूर्ण समर्पण राम नाम सुर झंकार तथा सितार*
*की मधुर धुन सुनने की अनुमति प्रदान करता है,*
*ऐसा हमारे प्यारे स्वामी जी महाराजश्री ने सिखाया ।*
*राम नाम सब को आरोग्य करता है ।*
*राम नाम प्रेम भाव को , जो ब्रह्माण्ड की रचना की धुन है*
*उसे एक नए अंदाज में प्रस्तुत करता है ।*

***

### ***Shree Shree Amritvani's first core sentence***

### ***Sarvashaktimatey Parmatmaney shree Ramaya Namaha***

*Hey Ram*
*You are the epitome of all energy*
*your power is supreme of all powers.*
*you are the Supreme O my lord Ram*
*You are Nirakar Patmatman.*
*We bow to thee to thy name as we say*
*Shree Ramaye Namaha.*

*Swamiji Maharaj Shree*
*gave us this divine mantra*
*which is maha kosh for Siddhi.*
*When we do jaap with the mahamantra*
*SARVARSHAKTI MATEY PARAMATMANEY SHREE RAMAYE NAMAHA*
*Our conscious mind is layered with the wisdom*
*and as Jaap contemplation with this line continues*
*our chetna awakens*
*Paramatman Shree Ram is supreme of supreme*
*from Him all energy percolates and creation appears*
*such deep secret of Prakriti resides in this Naam shakti*
*This remains a siddhi Mantra for Ram Naam Sadhak.*
*Let we be in Chaitanya bhava*
*Get the eternal connect with RAAAAAM*
*Till we merge with this Maha Mantra*
*Raaaaaaaauuuum.*

## ***श्री श्री अमृतवाणी का पहला मूल वाक्य***
## ***सर्वशक्तिमते परमात्मने श्री रामाय नमः***

*हे राम आप सर्वशक्तिमान हैं*
*आपश्री की शक्ति सर्वोच्य शक्ति है*
*आपश्री परमपुरुष हैं ओ मेरे प्रभु राम*
*आपश्री निराकार परमात्मन हैं*
*जब हम श्री रामाय नमः उच्चारते हैं*

*हम आपश्री के नाम पर नतमस्तक होते हैं ।*
*स्वामीजी महाराजश्री ने हमें*
*यह दिव्य मंत्र दिया*
*जो सिद्धि के लिए महाकोष है।*
*जब हम महामंत्र*
*सर्वशक्तिमते परमात्मने श्री रामाय नमः*

*का जाप करते हैं*
*हमारी चेतना ज्ञान से ओत प्रोत हो जाती है*
*और जैसे जाप चिंतन इस मंत्र से चलता रहता है*
*हमारी चेतना जागृत हो जाती है*
*परमात्मा श्री राम सर्व परम व् उच्चत्तम हैं*
*उन्ही से सारी शक्ति विस्तृत होती है*
*और सृष्टि प्रकट होती है*
*प्रकृति का ऐसा गहरा रहस्य इस नाम शक्ति में विराजमान है।*
*राम नाम साधक के लिए यह एक सिद्धि मंत्र है ।*
*चलिए हम चैतन्य भाव में रहें*
*और राम से दिव्य संयोजक करें*
*जब तक हम इस महामंत्र में विलीन नहीं हो जाते।*
*राम*

***

*Ram naam leads to bhava chaitanya*
*Where Bhakti and Prem resides.*

राम नाम भाव चैतन्य तक ले कर जाते हैं
जहाँ भक्ति और प्रेम विराजमान हैं

***

*Ram Naam is Prayer in silence*
*It involuntarily heals millions*
*No matter we remain unaware.*
*Thus is the Prayer Power of Ram Naam*

राम नाम मौन में एक प्रार्थना है
यह अस्वैच्छिक रूप से करोडो को आरोग्य करती है
चाहे हमें इसका आभास भी नहीं होता पर तब भी
ऐसी प्रार्थना की शक्ति है राम नाम में

***

*Raam ...The name is Sublime and most beautiful. Yet it is the most powerful code of celestial words, content, context, creation and manifestation. Its Naad Brahama the beeja akshar RAM.*

राम .... नाम उदात्त है और अतिशय सुन्दर ।फिर भी यह सबसे शक्तिशाली सांकेतिक अंक है दिव्य शब्दों का ,विषेय , सन्दर्भ , रचना और क्रियात्मकता का बीजाक्षर यह नाद ब्रह्म है। राम

***

***LOTUS FEET OF RAM***

*Hey Nirakar*
*Hey jyotishwar*
*Hey Raaam.*
*At your lotus feet*
*we seek salvation.*

*I don't know any Mantra*
*I have no siddhi*
*I can’t sing in your praise*
*I cry and only cry*
*they say its bhakti*
*yet I don't know.*

*I find peace at the lotus feet of*
*Shree Shree Swamiji Maharaj Shree*
*I see the flowering of cosmic lotus on seeing*
*the pious feet of*
*Param Pujya Devadi Dev Premji Maharaj Shree.*
*I find bhakti dancing with eternal wisdom of karma ans Gyan Yog at the feet of*
*Maharishi Swami Dr Vishwa Mitterji Maharajh Shree.*

*Hey Param Guru Raaam at*
*thy lotus feet*
*we sit beneath*
*with tears we do aradhana*
*and feel the Bliss of Ram Kripa and Guru Kripa*
*Beneath your feet Hey Maa.*
*Your own lotus we offer to you*
*as Pushpanjali*
*as we know nothing else O my Raam.*

## *राम के चरण कमल*

*हे निराकार*
*हे ज्योतीश्वर*
*हे राम।*
*आपके श्री चरणों में*
*हम मुक्ति की प्रार्थना करते हैं।*

*मुझे किसी मंत्र का ज्ञान नहीं*
*न ही कोई सिद्धी है*
*न ही मैं तुम्हारा गुण गान कर सकता हूँ*
*मैं केवल रोता हूँ केवल रोता*
*सब कहते हैं यह भक्ति है*
*पर मुझे नहीं पता।*

*मुझे श्री श्री स्वामीजी महाराजश्री*
*के चरण कमलों में ही विश्राम मिलता है*
*परम पूज्य देवाधिदेव प्रेमजी महाराजश्री*
*के पावन श्री चरणों में मुझे*
*दिव्य कमल का खिलना दृष्टिगोचर होता है*
*महर्षि स्वामी डॉ विश्वामित्र महाराजश्री के चरण कमलों*

*में मुझे भक्ति सनातन कर्म के ज्ञान योग के संग नृत्य करती प्रतीत होती है।*

*हे परम गुरू राम*
*आपश्री के चरणकमलों में*
*अश्रु लिए हम आराधना करते हैं*
*और राम कृपा व गुरू कृपा का आनन्द*
*महसूस करते हैं।*
*हे माँ आपश्री के चरण कमलों में*
*हम अापश्री का ही कमल*
*आपश्री को पुष्पांजलि के रूप में*

*अर्पित करते हैं*
*क्योंकि हमें किसी और का कुछ ज्ञान नहीं ओ मेरे राम ।*

***

## *STOP THINKING AND BEGIN RAM NAAM MAUN SADHANA*

*Maun Sadhana is an important mode for Ram Naam Sadhana and aradhana. But silencing Mind is near impossible because mind never cease to think so aspiring pure silence becomes impossible.*

*But if we realize what make mind to think! And conclude that mind can't think just as itself then we realize that mind has stopped thinking meaning here going for Maun without any conscious thinking. What makes brain think should not be thought of. My Ram is eternal brilliance that sparks all the action including our thinking becomes our thought that means we are going towards complete surrender to Ram not just as an intellectual exercise but an act of atman. Then we realize Maun is a concept beyond silence rather it is a state of illumination where enlightened intelligence resides. So through Maun Sadhana we should avoid conscious thinking of achieving a state of silence rather we should imagine the lotus feet of Shree Ram and let loose our thought as if we are mere stone beneath His feet. This is my experiment with maun and you may have better mode. Just sharing this with a realization SILENCE OR MAUN IS BEYOND THINKING AND BHAVA OF RAMAMAYENESS DO HELP US TO EXPLORE THE BRILLIANCE OF SILENCE. RAAAAUUUM*

## सोचना बंद कीजिए और राम नाम मौन साधना आरम्भ कीजिए

राम नाम साधना और आराधना के लिए मौन साधना एक महत्वपूर्ण साधन है । पर मन को शांत करना बहुत असंभव है क्योंकि मन सोचना बंद नहीं करता सो मन की पूर्ण शांति पाना असम्भव हो जाती है । पर यदि हम अनुभव करें कि मन को क्या सोचने पर मजबूर करता है ! तो हम देखते हैं कि मन स्वयं कुछ नहीं सोच सकता , तब हम देखते हैं कि मन ने सोचना बंद कर दिया है और हम मौन में बिना किसी प्रयास के चले जाते है । जो बुद्धि सोचना चाहती है वह उसे सोचने नहीं देना चाहिए । मेरे राम दिव्य प्रकाश हैं जो हर कृत्य को शक्ति देते हैं , हमारी सोच ही हमारे विचार बन जाते हैं और इसका तात्पर्य है कि हम राम पर पूर्ण समर्पण के साथ अग्रसर हो जाते हैं न केवल एक बौद्धिक कार्य के साथ नहीं बल्कि आत्म के संग ।तब हम देखते हैं कि मौन तो शांति के पार की संकल्पना है पर वह तो प्रकाश का स्तर है जहाँ अनुभूत बुद्धिमत्ता विराजमान होती है । सो मौन साधना के द्वारा हमें मौन के चेतन विचारों के स्तर की प्राप्ति को त्याग कर स्वयं को श्री राम के चरण कमलों में रख कर और अपने विचारों को ढीला करके ऐसा प्रतीत करना चाहिए जैसे कि हम उनके चरणों के नीचे के पत्थर हों । यह मेरे अनुभव रहे है मौन के संग और आपको इससे बेहतर

ढंग भी पता हो सकता है I यही बाँट रहा था कि मौन सोच व विचार के पार है और राम भाव हमें मौन की प्रतीभा का अनुभव करवा सकती है I राममममममममम

***

## *REALIZING " Self" AS RAM*

*Take your mind to the day of Deeksha*
*when Maharaj shree installed Ram*
*Param Guru Ram*
*and made your body Devalaye.*
*Guru did Pran prathishta in your body.*
*Remember, realize and conclude*
*RAM is seated in you.*

*Now just for a second*
*realize that you are not the entity*
*but Ram Himself.*
*Think you no more aspiring to beget Ram*
*but you have merged in Ram.*
*This being Ram even for few seconds*
*within your own isolation*
*we become Mangalchari*
*as sumangal naam of Ram besmear us.*
*Our mind no more thinks as narrow being*
*with eternal open mind we beam love for all*
*without any discrimination.*
*We realize success and failure are insignificant*
*cosmic anananda beams everywhere*
*and we merged in the play of world*
*yet detached with maya and realize it as Lila only.*
*Here begins Ramamamayness*
*and lost for few seconds with sublime Raaaaam*
*such a blissful and loving Ram reside in us*
*yet we fumble as lesser being.*
*Do rise above and realize Ram within*
*even for few seconds daily.*
*This will be surely an eternal connect with*
*my RAAAAAAAAAUUUM*
*ANANADAWARUP JYOTISHWAR RAAAAAM.*

## *"स्वयं" को राम अनुभव करना*

*अपने मन को दीक्षा के दिन पर ले चलिए*

*जब महाराजश्री ने राम , परम गुरू राम*

*आपके भीतर विराजित किए थे*

*और आपकी देह को देवालय बना दिया था ।*

*गुरू ने आपकी देह के भीतर प्राण प्रतिष्ठा की थी ।*

*स्मरण कीजिए, अनुभव कीजिए तथा निष्कर्ष निकालिए*

*कि राम आप में विराजमान हैं ।*

*अब पल भर के लिए सोचिए कि*

*आप कोई वस्तु नहीं हैं पर स्वयं राम ही हैं ।*

*आप राम को पाने की चेष्टा नहीं कर रहे*

*अपितु राम में विलीन हो चुके हैं ।*

*यह राम बनना केवल कुछ क्षणों के लिए भी*

*अपने एकांकी में हमें मंगलाचारी बना देता है*

*क्योंकि नाम अपने सुमंगल भाव से हमें ओत प्रोत कर देता है ।*

*हमारा मन अब एक संकुचित मानव कि भाँति*

*नहीं सोचता अपितु पूर्ण खुले मन से सोचता है*

*और हम सभी के लिए निरपेक्ष भाव से प्रेम विस्तृत करते हैं ।*

*हमारे लिए सफलताएं व विफलताएँ कोई माएने नहीं रखतीं*

*और हम सनातन आनन्द हर तरफ़ विस्तृत करते हैं*

*और हम सृष्टि के खेल में विलीन होकर किन्तु माया के संग*

*अनासक्त भाव से रह कर अनुभव करते हैं कि यह लीला ही है ।*

*यहाँ से राममय भाव आरम्भ होता है और*

*उदात राम में कुछ क्षणों के लिए डूब जाओ,*

*ऐसा परमानन्द व प्यारा राम हमारे अंदर विराजमान है ,*

*पर हम गिर जाते हैं एक आम इंसान के भाँति ।*

*अपने आप को ऊपर उठाइए और राम को अपने भीतर*

*प्रतिदिन कुछ ही क्षणों के लिए अनुभव कीजिए।*

*यह अवश्य ही एक दिव्य संयोजक*

*मेरे राममममममममममममम के साथ होगा ।*

*आनन्द स्वरूप ज्योतीश्वर राममममममम*

*****

### *Human Perspective: Life is full of unavoidable MAYA*

*Param Guru RAAM'S Perspective: All life forms are LILA and manifestation of Lila till one merges back to ME in my RAMAMAYE ANANADA.*

### *मानवीय दृष्टिकोण: जीवन में माया से नहीं बचा जा सकता*

परम गुरू राम का दृष्टिकोण : प्रत्येक चेतन वस्तु लीला है और लीला की क्रियात्मक रचना, जब तक तुम मेरे , राममय आनन्द में विलीन नहीं हो जाते ।

*****

## *RAM Naam Beejakshar*

*Raam is cosmic seed*
*that sprouts with Gurujan's bliss.*
*It is dynamic mode of sadhana and siddhi.*
*Raaaaam invokes solace in Chitta and*
*provides avenue for consciousness*
*Raam naam chaitanya bhava.*
*The cosmic seed sprouts*
*our attribute changes*
*we move from mine to thine.*
*We diminish ego.*
*We beget prem bhava.*
*Our deeds become mangalkari.*
*Such is divine beejakshar Ram Naam.*
*Its cosmic nectar*
*Its Mahaaushadhi for worldly ills*
*Emancipation nears as cosmic seed sprouts*
*within in the Garbagriha of Raam*
*in our body Ramalaye*
*Raam is the spiritual wealth*
*That only dispenses love faith and healing for prakriti.*
*Such loving Mahamantra is Raaaaam*
*The cosmic seed Raaaauuum*

## *बीजाक्षर राम नाम*

*राम सनातन बीज है*
*जो गुरूजनों की कृपा से*
*अंकुरित होता है ।*
*वह साधना व सिद्धी का*
*गतिशील साधन है ।*
*राम चित में शांति का*
*आह्वान करता है*
*चेतनता में राम नाम चैतन्य*

*भाव का मार्ग प्रशस्त करता है ।*
*जब सनातन बीज उपजता है*
*हमारे गुण बदल जाते हैं*
*हम मेरे से तेरे तक जाते हैं ।*
*अहंकार कम होता जाता है*
*हम प्रेम भाव प्राप्त करते हैं ।*
*हमारे कृत्य मंगलकारी बन जाते हैं*
*ऐसा दिव्य है बीजाक्षर राम नाम ।*
*इसका दिव्य मधुरस*
*महौषधी है*
*तथा मुक्ति निकट महसूस होती है*
*जब सनातन बीज अंकुरित होता है ।*
*राम आध्यात्मिक धनराशि है*
*जो प्रकृति के केवल प्रेम, विश्वास व आरोग्यता वितरित करती है ।*
*ऐसा प्रेममय मंत्र है राम*
*दिव्य बीज राममममममममम*

*******

## *Ram Naam Tirtha*

*Tirtha or sacred Geography always remains a huge punctuation in Indian spiritualism. Kashi is the oldest and Jhabua is the latest and Tirtha manifests. One Ram Naam sadhak heard lot about some Ram Naam Tirtha as his Guru Narrated. After Guru's departure He decided to go for Ram Naam Tirtha after few years.*

*With deep shraddha he went. He was trying to match his Guru's expressions and descriptions. But became very disappointed. He did not like the local gossip. He also did not appreciate the way the Purohit was talking or behaving. He was looking for elevated sadhak who did several crores of ram naam jaap but was not happy. He was crying beneath the photographs of his guru as he was unhappy to find in Ram Naam Tirtha which once his guru narrated. He was in Trance and crying there Sad Guru appeared and said*

*"Hey sadhak sthan, kaal, patra sab badalta hai lekin Ram Naam kabhi Nahi. Sadhak atey hain chaley jatey hain siddhi to Tirtha mey basta hai. Tu Ram Naam ko is kshetra vishesh mey na dhund key Ram Naam sadhakon key vachano mey kho gaya.*

*Ram ek ati ucch kripa hai jo Ram khud tujey detey hain aur es mey koi purohit ya ensano ki banai hue archana paddhati kaam nai ati hai. Ram ko Ram Durbar mey payega bhakton ke bhatkao ansuon mey nai.*

*Ram to terey chitta mey hain. Ram key drishti sey dekho tab virat mangalachari param dayalu Ram ji dikhengey. Yaad rakhna Jab Ram tumharey andar bastey hain tab tum hi Mandir aur Tum hi Tirtha ban jatey ho. Sadhako mey siddhi mat dhundo. Siddhi to Ram ka naam hai aur Ram hi mahatirtha hai jo ensano ki goshti ya jeevan sabhyta sur vyakhyan sey kafi uncha hai. Ram kripa kare Ram Kripa Karey" aur Sad Guru antardhyan ho gaye.*

## *राम नाम तीर्थ*

*तीर्थ या पावन भूगोल सदा ही एक बहुत ही महत्वपूर्ण विराम चिन्ह रहा है भारतीय आध्यात्म मे। काशी सबसे पुरातन है और झाबुआ सबसे आधुनिक क्रियात्मक तीर्थ।एक राम नाम साधक ने बहुत सुना किसी राम नाम तीर्थ के बारे में, जैसे उनके गुरू ने व्याख्यान किया था । गुरू के भौतिक चोला छोड़ने के पश्चात कुछ वर्ष पर्यन्त उसने राम नाम तीर्थ पर जाने का निश्चय किया ।*

*अपने अंदर गाढ़ श्रद्धा लिए वह गया । वह अपने गुरू की अभिव्यक्तियाँ व विवरण खोज रहा था । पर उसे बहुत निराशा का सामना करना पड़ा । उसे वहाँ की व्यर्थ गपशप पसंद नहीं आई । वहाँ के पुरोहित जिस तरह बातचीत या व्यवहार कर रहे थे, वह भी नहीं भाया । वह तो उन उच्च कोटि के साधकों को ढूँढ रहा था जिन्होंने बहुत करोड़ों का राम नाम का जाप किया पर वह खुश नहीं था ।*

*वह अपने गुरू के चित्र के नीचे रो रहा था कि जिसका विवरण कभी उसके गुरू ने किया था पर यह उसे राम नाम के तीर्थ में क्या मिला । वह समाधि में था और रो रहा था , तभी सदगुरू आए व बोले "हे साधक स्थान काल पात्र सब बदलता है लेकिन राम नाम कभी नहीं । साधक आते हैं चले जाते हैं सिद्धी तो तीर्थ में बसती है ।तू राम नाम को इस क्षेत्र विशेष में न ढूँढ , कि राम नाम तो साधकों के वचनों में खो गया ।*
*राम एक अति उच्च कृपा है जो राम ख़ुद तुझे देते हैं , इस में कोई पुरोहित या इंसानों की बनाई हुई आराधना पद्धति काम नहीं आती है । राम को राम दरबार में पाएगा , भक्तों के भटकाव आँसुओं में नहीं ।राम तो तेरे चित में है । राम की दृष्टि से देखो तब विराट मंगलाचारी परम दयालु राम जी दिखेंगे ।*
*याद रखना जब राम तुम्हारे अंदर बसते हैं तब तुम ही मंदिर और तुम ही तीर्थ बन जाते हो ।*
*साधकों में सिद्धी मत ढूँढो । सिद्धी तो राम का नाम है और राम ही महातीर्थ है जो इंसानों की गोश्ती या जीवन सभ्यता सुर व्याख्यान से काफ़ी ऊँचा है । राम कृपा करे राम कृपा करे" और सद्गुरू अंतर्ध्यान हो गए ।*

*****

## *Ram Naam Siddhi....PATH AND MODE*

*Hey Param Guru Raaaam*
*make me Ram Naam Sadhak*
*worth your Name.*
*You made me your sadhak*
*I am blessed but*
*how do I go through Ram Sadhana*
*and realize Siddhi of Parampita Param Dayalu Ram.*

*"Hey Sadhak go through these words and*
*implement All of those attributes in life*
*then Ram Naam Siddhi will not be far off*
*.........those are*
*Shraddha, Samarpan, Simran, Sewa,*
*Samaskar, Santushti, Swabhav, Suruchi, Swadhay*
*Sankirtan, Sayyiam, Sadachar, Sneha bhav, Shistachar, Sannidhya, Satsang, Swabhiman,*
*and Sada Shiromani Ram Bhava*
*All these go towards RAM NAAM SIDDHI Vats"*

## *राम नाम सिद्धी... पथ व साधन*

*हे परम गुरू राम*

*मुझे राम नाम साधक*

*अपने नाम के काबिल बनाइए ।*

*आपश्री ने मुझे अपना साधक बनाया*

*मुझ पर कृपा बरसी पर*

*मैं राम नाम साधना कैसे करूँ*

*और परमपिता परम दयालु राम की सिद्धी कैसे प्राप्त करूँ*

*" हे साधक इन शब्दों पर ध्यान धरिए और इन सभी को अपने जीवन में उतारिए*

*तब राम नाम सिद्धी आप से दूर नहीं होगी ... वे हैं*

*श्रद्धा , समर्पण, सिमरन, सेवा, संस्कार, संतुष्टि , स्वभाव, सुरुचि, स्वाध्याय , संकीर्तन, संयम, सदाचार, स्नेह भाव, शिष्टाचार, सानिध्य, सत्संग, स्वाभिमान और सदा शिरोमणी राम भाव ।*

*यह सभी राम नाम सिद्धी की ओर ले जाते हैं वत्स"*

*****

## *ETERNAL SOUND RAAUUUM*

*It is by sound the soundless is revealed. The sound is Ram. By the sound Raaam one proceeds upward and attains rest in soundlessness.*

## दिव्य ध्वनि राम

ध्वनि से ही नीरवता प्रकट होती है । ध्वनि राम है । राम की ध्वनि से ऊपर की ओर बड़कर, नीरवता में अवर्णनीय विश्राम की प्राप्त होती है ।

*******

*An-Ahaut or unstruck sound is nearer to the "music of sphere" where air has no role to re-vibrate as echoes from nature or air cease to exist. We thus need to go beyond what is*

*perceived through ears. The Ram Naam is Pran Spandan for life force but beyond it this is cosmic MUSIC OF SPHERE. I know am inaudible to many but there are sure perception divisions between anhat sound and ahat or struck sound that is audible. I am in deep mysticism of acoustics, pardon me if I am an enigma. But beyond is Ram Dhun of cosmos floats beyond ears. Raaam Naaad is mystique sound of Divine Supreme. Pardon me if I am not clear. Maaf kijiyega Raaaaum*

अनहद ध्वनि संगीत के क्षेत्र के निकट होती है जहाँ हवा की कोई भूमिका नहीं है कि उसकी फिर से गूँज करवानी है क्योंकि वहाँ प्रकृति की प्रतिध्वनियों का अस्तित्व ही नहीं होता । इसलिए हमें सुनने की शक्ति पार जाना है । राम नाम जीवन शक्ति का प्राण सम्पंदन है पर इसके पार ब्रह्माण्ड के संगीत का क्षेत्र है । मुझे ज्ञात है कि बहूत मुझे सुन नहीं सकते पर यहाँ एक अनहद तथा आहत ध्वनि के मध्य अंतर है । मैं ध्वनि के रहस्य में अति गहराई में हूँ , क्षमा कीजिए यदि मैं एक पहेली लग रहा हूँ । पर राम धुन के पार तथा कानों के पार ब्रह्माण्ड तैरता है । दिव्य परमात्मा की राम नाद एक रहस्य मय ध्वनि है । क्षमा कीजिए यदि मैं स्पष्ट नहीं हूँ तो । माफ़ कीजिएगा । राममममम

*****

## *AM I IN RAM OR RAM IS IN ME!*

*I RECALL I have read that once Adi Shankaracharya was standing beside a huge tumbler filled with oil. And in that a small bowl with some oil was floating. HE asked sadhaks and Shishyas "Tell me is the bowl is in oil or oil in the bowl? "Some said bowl on the oil as it was floating on oil. Some said oil in the bowl as bowl was also filled with some quantity of oil. Adi Sankaracharya said both were right as oil and bowl have reached a stage of becoming one. Similarly Our Sad guru Maharajji had planted Ram in us and we started realizing this sharir devalaye and some time we are lost and wonder IS RAM IN ME or ME IN RAM. Perhaps both are Right Raaaaauuum.*

## मैं राम में हूँ या राम मुझ में हैं

मुझे स्मरण हो रहा है कि मैंने एक बार पढ़ा कि आदि शंकराचार्य एक बहुत बड़े लोटे के साथ खड़े थे जो कि तेल से भरा हुआ था । और उसमें एक छोटा सा लोटा तेल लिए तैर रहा था । उन्होंने साधक व शिष्यों से पूछा - बताइए किया लोटा तेल में है या तेल लोटे में है? किसी ने कहा लोटा तेल में क्योंकि वह तेल में तैर रहा है किसी ने कहा कि तेल लोटे में क्योंकि तेल लोटे में था । आदि शंकराचार्य ने कहा दोनो ठीक हैं क्योंकि तेल और लोटा ऐसी स्तिथि में पहुँच चुके हैं कि एक हो जाएँ । इसी तरह हमारे सदगुरू महाराज जी ने राम नाम

हमारे अंदर बीज दिया और हम यह अनुभव करने लग गए कि यह शरीर देवालय है और कुछ समय के लिए हम सोच में पड़ जाते हैं कि क्या राम मुझ में है या मैं राम में । शायद यह दोनों ही सही हैं।
राममममममममम

*****

## *JOURNEY TO ETERNAL LIGHT—RAAAAAUUUM*

*Eternal Brilliance is Ram Naam jyot. This cosmic intelligence become realizable when we reach NEAR ZERO EGO State and don't think consciously rather we try to let loose the self as if floating atom then consciousness or Ram Chaitanya Bhava engulfs our entity involuntarily. Realizing this that we are one million part of cosmic dust only allows us to realize Ananda or complete Ramamaye bhava. Humbleness or Vinamrata at socio spiritual level and extreme surrendering mind set at deep inner level provide the avenue to this state of Encountering Intelligence of Cosmic kind meaning Jyotiswarup Ram. But journey starts with NEAR ZERO EGO LEVEL. Raaaaaaauuum.*

## सनातन प्रकाश राम की यात्रा

राम नाम ज्योति दिव्य प्रतिभा है । यह दिव्य समझ हम तब अनुभव कर सकते हैं जब हम अहंकार के लगभग शून्य स्तर पर पहुँचते हैं । हम चेतन स्वरूप में नहीं सोचते बल्कि अपने स्वयं को ढीला कर देते हैं जैसे कि तैरता हुआ अणु, तब चेतना या राम चैतन्य भाव हमारे अस्तित्व को अनैच्छिक भाव से निगल लेता है । यह अनुभव करना कि हम इस ब्रह्माण्ड के एक करोड़ भाग के समान इस ब्रह्माण्ड की धूलि हैं , हमें आनन्द या सम्पूर्ण राममय भाव अनुभव करवाता है ।सामाजिक - आध्यात्मिक स्तर पर विनम्रता और अत्यन्त समर्पित मानस भाव गहरे भीतरी स्तर पर ज्योति स्वरूप राम से भेंट करने का एक मार्ग प्रशस्त करता है । पर यात्रा ते लग भग शून्य अहं स्तर से ही आरम्भ होती है । राममममममममम

*****

*Jab antarkaran mey Param Guru Ram virajey*
*mann sey dwesh, hinsa, ahankar sab mit jaweey*
*ANTAR MAAN MEY SIRAF RAM HI RAM Niwasey,*

*जब अंतः करण में परम गुरू राम विराजे*

*मन से द्वेष, हिंसा , अहंकार सब मिट जावे*

*अंतर मन में सिर्फ़ राम ही राम निवासे*

*****

*Jis Jivha pey Ramji virajey uspey katu shabd tik nai payey...Etni baar Ram bolo ki apshabd apna thikana kho dey hamesha key liye.*

जिस जिह्वा पर राम जी विराजे उसपर कटु शब्द टिक नहीं पाए... इतनी बार राम बोलो कि अपशब्द अपना ठिकाना खो दे हमेशा के लिए

*****

*Ram Naam Vak Shuddhi karan ka prakriya hai.*
*SABSEY PAAVAN NAAM RAAM NAAM... RAAM NAAM*

राम नाम वाक् शुद्धि करण की प्रक्रिया है. सबसे पावन नाम राम नाम ... राम नाम

****

## *LOVING RAAAAUM*

*Hey Nirakar Raaam*
*You are Shrishti*
*You are Prakriti*
*You are Arupa*
*You are anant Jyot*
*But still you reside in me*
*Knowing that am unworthy*
*So loving supreme you are O' my Ram*
*My Parm Dayalu Ram*
*As you allow me to take your cosmic Name*
*Though you know I am not worth your Naad*
*Still all the time Ram Ram sings in me*
*You made me Ramansha*
*As you clean me with every passing time*
*So loving you are O' my Raaaum.*

## परम प्यारे राममममम

*हे निराकार रामम*

*आपश्री सृष्टी हैं*

*आपश्री प्रकृति हैं*

*आपश्री अरूपा हैं*

*आपश्री अनंत जोत हैं*

*पर आपश्री फिर भी मुझमें निवास करते हैं*

*यह जानते हुए कि मैं काबिल नहीं हूँ*

*कितने परम प्यारे हैं आप ओ मेरे राम*

*मेरे परम दयालु राम*

*जैसे आपश्री मुझे अपना दिव्य नाम लेने की अनुमति देते हैं*

*जब कि आपश्री को पता है कि मैं आपश्री के नाद के काबिल नहीं हूँ*

*फिर भी हर समय राम राम मुझ में गाता है*

*आपश्री ने मुझे रामांशा बना दिया*

*जैसे आपश्री हर समय मेरा पवित्रीकरण करते हैं*

*कितने प्यारे हैं आप ओ मेरे राममममम ।*

*****

## *Ram Naam Sadhana is beyond Group or Individual*

*RAAAM NAAM aradhana becomes taapsik sadhana at the singular spiritual level. Its a journey from society and goes towards individual contemplation of the core at the atmik level. We have to rise above the group and personalities as Param Guru Raam is waiting within for long!*

## *राम नाम साधना किसी व्यक्तिगत या समूह के पार है*

*राम नाम आराधना व्यक्तिगत आध्यात्मिक स्तर पर तपस्या बनती है । यह यात्रा समाज से आरम्भ होकर व्यक्तिगत आत्मिक स्तर के मनन पर जाती है । हमें समूह व व्यक्ति विशेष से ऊपर उठना है क्योंकि परम गुरू राम भीतर बहुत देर से इंतज़ार कर रहे हैं !*

*****

*Eshwar ka akhri akshar RA hai. RA mey Raam hain.*
*Remember ULTIMATE DIVINITY IS RAAAUM*
*THE ABSOLUTE TRUTH*

ईश्वर' शब्द का आख़िरी अक्षर ' र' है ।

र में राम है ।

स्मरण रहे कि परम दिव्यता राम हैं .. परम सत्य ।

*****

## *Dousing the Flame of Cravings through Silence of RAM NAAM*

*Desire drives the craving instincts. Craving is a mental state where one lives in the arena of "irresistibleness". This represents a chaotic sound (thought) within the silence of mind. This sound thought is like white ant which destroys the persona and changes the Karma and drives one to stoop low to appease the cravings of lower order. Craving makes us a victim of lust and lure which in turn brings pain and pathos to ruin our entity. Thus, in RAM NAAM Maun Sadhana one is involuntarily trained to counter the "Craving mind". It alters our focus of attraction from body and brings us on soul plane. The cravings do come also from depravity but one learns through Maun that "deprivation" is just a mind game and solutions embedded within waiting to be explored and unearthed. Over emphasizing self-appeasement and desirous fire of "More need" make us a stooge of our mortal entity and chance of mending Karma pattern is lost in the process. Cravings for luxurious food; craving for very high living; craving for sensuous pleasure of variety; craving for power and money are the common traits of mortals. Maun Sadhana clears this froth of craving as happiness is mortal and ananda or bliss is immortal are realized in the hours of silence. Eternal nectar or bliss is so intoxicating that the lure of outer world cannot penetrate. Shunning the cravings of mortal kind is not so tough if we have complete trust in Param Guru RAM and ultimate faith in Guru. Because if one practises Maun Sadhana and turn the mind towards Guru or being Gurumukhi then the mortal "ills" like cravings fade away for*

*sure. Because bliss lies beyond our body and that has been the destiny birth after birth. So, act now to silence the cravings for good. RAAAAAAAuuuuuuuummmmmm.*

## राम नाम के मौन द्वारा लालसाओं की अग्नि को बुझाना

कामना, लालसाओं को बढ़त देती है । लालसा एक ऐसी मानस स्थिति है जहाँ हम 'स्वयं को न रोक सकने' के क्षेत्र में रहते हैं । मन के मौन में यह एक आरकजकता का विचार का प्रतिनिधित्व करता है । यह ध्वनि सफ़ेद चींटि की भाँति है जो व्यक्तित्व व कर्म बदल देती है और और हम इतने नीचे गिर जाते हैं कि हम नीचे वर्ग की लालसाओं को पोषण करने लगते हैं । लालसा हमें काम व प्रलोभन का दास बना देती है जिससे हमें दुख व पीडा का सामना करना पडता है और वह हमारे व्यक्तित्व को नष्ट कर देती हैं ।

मौन साधना में हमें अनैच्छिक तौर पर लालसाओं से परिपूर्ण मन को जूझना आता है । यह हमारा ध्यान देह की बजाए आत्मा पर केंद्रित कर देता है । लालसाएँ हमें किसी कमि की वजह से भी होती हैं पर हम जानते हैं कि यह सब मानस खेल हैं और इन सब के समाधान भीतर ही निहित हैं । और ज़्यादा चाह की कामना हमें अपने नश्वरता की गुलाम बना देती है जिससे अपने कर्मों को सुधारने का कार्य बीच में ही कहीं गुम हो जाता है । शानदार भोजन की लालसा, बहुत आलीशान रहन सहन , विभिन्न प्रकार के कामुक रस, पद प्रतिष्ठा की लालसा हम इंसानों के आम चिन्ह हैं । मौन साधना यह सब साफ़ करके .. सुख नश्वर है पर आनन्द अनश्वर ...इसकी अनुभूति मौन के द्वारा होती है । दिव्य आनन्द इतना नशीला होता है कि बाहरी जगत का आकर्षण इसे लुभा नहीं सकता । यदि हमें परम गुरू राम पर पूर्ण श्रद्धा व विश्वास है तो इन नश्वर लालसाओं को छोड़ना कठिन नहीं । यदि हम मौन साधना साधें और मन को गुरूमुखी करें तो यह कामनाएँ अवश्य दूर हो सकती हैं । आनन्द शरीर के पार है और यही नियति हर जन्म में रही है । सो इन लालसाओं को सदा के लिए शांत करने के लिए जुट जाइएगा । राममममममममममममममममम

*****

*Raam Naam mey etni astha honi chahiye ki apney vak, apney karma apney aap sudhreyen. Ram Naam ke Sharan mey jao aur Maa key shanti anchal key chaya ko prapt karo. RAAAAAAAAMMMMMMM.*

राम नाम में इतनी आस्था होनी चाहिए कि अपने वाक्, अपने कर्म अपने आप सुधरें । राम नाम की शरण में जाओ और माँ के शांति के आँचल की छाया को प्राप्त करो । राममममममममममममममम

*****

*Mere Mann dhuladey Raam Mere*
*Mere Karam Sudhar dey Maa mere*
*Mujh mey Prem jagadey Raam Mere*
*Mujh pey kripa kar aur ensan bana dey raam mere*
*Mujhsey agyat aur nirantar sewa ley Ram Mere.*
*Mujhey apna bana ley Ram mere*

*मेरा मन धुलादे राम मेरे*
*मेरे कर्म सुधार दे माँ मेरे*
*मुझ में प्रेम जगादे राम मेरे*
*मुझ पे कृपा कर और इंसान बना दे राम मेरे*
*मुझसे अज्ञात और निरंतर सेवा ले राम मेरे*
*मुझे अपना बना ले राम मेरे*

*****

## *WISH LAMP OF LIFE IS MAYA*

*Do not pour oil to your wish lamp ANYMORE. It will enflame unending wishes of life which is chain of Maya that is followed by pleasure or pain. Maya toes off sadhana. Anant jaap of Ram Naam helps one to rediscover spiritual Ground amidst the Tsunami of materialistic wishes--- as engulfing storm that never ends. Glory of Raam naam cleanses our Manas. Indriyon aur ecchaon pey kabu Ram Kripa aur Guru kripa sey ati hai. CONSTANT REMEMBRANCE OF RAM NAAM HOLDS THE SOLUTION. SELF CONTROL IS JUST RAM NAAM AWAY. Raaaaaaaauuum*

## इच्छाओं का दीपक माया है

अपनी इच्छाओं के दीपक में और तेल न डालिए ।वह जोत को बुझा कर अनंत कामनाओं का अंत कर देगा जो कि माया की श्रृंखला है और जो सुख दुख को संग लाती है । राम नाम के अनंत जाप से कामनाओं के सुनामी के मध्यस्त में , जो कि एक ऐसा निगलने वाला तूफ़ान है जिसका अंत नहीं , हम आध्यात्मिक धरती को फिर से पा सकते हैं, । राम नाम की महिमा हमारे मानस का पवित्रीकरण कर देती है । राम कृपा व गुरू कृपा से इंद्रियों पर क़ाबू लाया जा सकता है । राम नाम का सतत स्मरण ही कुंजी है । संयम केवल राम नाम की दूरी पर है । राममममममम

*****

*Maharishi Swamiji Dr. Vishwa Mitterji Maharaj Shree taught us to silence our desire and reduce talking with human logic and surrender completely to Raam Naam aradhana with utmost shraddha to eternal silence...antarkaran ke param shanti ke aur....*

महर्षि स्वामी जी डॉ विश्वामित्र जी महाराजश्री ने हमें कामनाओं को शांत करना और मानवीय तर्क द्वारा बोलना कम करना तथा राम नाम आराधना पर अथाह श्रद्धा से दिव्य मौन पर सम्पूर्ण समर्पण करना सिखाया ... अंतःकरण के परम शांति की ओर ....

*****

*Abhi abhi mann ney suna ek vakya 'Prakashmay Andharkar". Ensani maan ney kaha "Andhakar prakashmaye kaisey ho sakta hai". Jawab aya "Andhakar ka bhi ek prakash hoti hai jo samuchaye akash mey chaya hua hota hai ratri kaal mey"*

*Yaad Aya Andharkar ke akash ko jab Hum dekhetey hain kafi der tak tab ek abha nazar ati hai viraat akash mey mano Raam Naam key jyot ne andhakar ko bhi apney andar sama liya ho. Ram Naam JYOTISHWAR apney aap mey Prakashmaye hain jo andhakar ko bhi jyoti pradan karti hai. RAAAAAUUUUUM JYOTI SWARUP RAAAAUUUUUUM*

अभी अभी मन ने एक वाक्य सुना 'प्रकाशमय अंधकार' इंसानी मन के कहा" अंधकार प्रकाशमय कैसे हो सकता है" जवाब आया " अंधकार का भी प्रकाश होता है जो समुच्य आकाश में छाया हुआ होता है रात्री काल में"

याद आया अंधकार के आकाश को जब हम देखते हैं काफ़ी देर तक तब एक आभा नज़र आती है विराट आकाश में मानो राम नाम की जोत ने अंधकार को भी अपने अंदर समा लिया हो । राम नाम ज्योतीश्वर अपने आप में प्रकाशमय हैं जो अंधकार को भी ज्योत प्रदान करती है । राममममममममममममममम

*****

*Listen to the Prakriti. Divinity is Sublimity. Spiritualism is of individuals. Religion is for society. Keep spiritualism simple, innocent and honest so that we are not entangled with wild wishes of people or the negations of society. DIVINE CONNECT IS DIMINISHING BEING HUMAN BEING AND RATHER BECOMING HUMBLER AND HUMANE.*

प्रकृति को सुनिए । दिव्यता उदात है । आध्यात्मिकता व्यक्तिगत है । धर्म समाज के लिए है । आध्यात्म को सीधा, सरल व निष्कपट रखिए ताकि हम मानवों की जंगली इंचछाओं में या समाज की नकारात्मकता में न फँस जाए। दिव्य संबंध मानव बनना कम करना है बल्कि विनम्र और दयामय बनना है ।

*****

## *GURU SHOWERS GURU KRIPA...*

*Guru is embodiment of Param Guru Ram Himself. After their mortal parinirvan they exist in most subtle sense and cater to millions of Sadhak at one single time. Gurus merges with Param Guru and eternally multiply His subtle entity in all possible time and space and make him available to Sadhak in their hour of need or any guidance.  Guru blesses you always and Ram kripa showers when we become one with Guru in subtlest anubhuti.*

*Guru ko sang mano Ram ko sang pao hamesha. Gurumukhi ho key to dekho Guru kripa apney aap barseygi. Guru shishya key antarik sannidhyata sey hi Ram Kripa barasti hai aur hamarey janam mrityu ke maya jal sey mukti ka rasta prashast hot hai. Guru ko apney aatman mey dhundo...Ram key sannidhya pao. Hamarey mann key kan kan mey Ram basa hai cholo usey prapt karo Guru ke sannidhya sey.  RAAAAAUUUUM.*

## गुरूकृपा बरसाते हैं गुरू....

गुरू, परम गुरू राम की ही अभिव्यक्ति हैं । अपने परिनिर्वाण के पश्चात वे बहुत ही सूक्ष्म स्तर में रहते हैं और करोड़ों साधकों पर एक साथ कृपा करते हैं । गुरू परम गुरू में विलीन होकर अपनी सूक्ष्म दिव्य सत्ता को कई गुणा करके साधकों के समक्ष हर सम्भव समय व क्षेत्र में उनके विपत्तियों के समय या मार्गदर्शन देने के लिए उपस्थित रहते हैं । गुरू सदा कृपा बरसाते हैं, पर जब हम सबसे सुक्ष्म अनुभूति में गुरू के साथ एक हो जाते हैं और तब राम कृपा बरसती है ।

गुरू को संग मानो राम को संग पाओ हमेशा । गुरूमुखी होकर तो देखो गुरू कृपा अपने आप बरसेगी । गुरू शिष्य के सानिद्ध्यता से ही राम कृपा बरसती है और हमारे जन्म मृत्यु के माया जाल से मुक्ति का रास्ता प्रशस्त होता है । गुरू को अपने आत्मा में ढूँढो ... राम के सानिद्धय में पाओ ।

हमारे मन के कण कण में राम बसा है चलो उसे गुरू के सानिद्धय से प्राप्त करो । राममममममममममममम

*****

## *RAKSHA KAVACH RAAM NAAM*

*Shree Swamiji Maharaj Shree has asked all sadhaks to do all worldly duties as through even griha karma Ram Naam Sadhana is possible. Contemplating upon it Maharshi Swami Dr Vishwa*

*Mitterji Maharaj Shree asked us to shred lobh or craving for more. He said don't pour oil to your wants as once one is fulfilled another comes and the process is unending.*

*While realizing I find extraordinary appetite for more food. More money. More power. MORE ego. More sensual cravings. More relationships. More indulgences in world and its toxic impact at the level of Manas lead to SPIRITUAL DEVIATION.*

*So to beget sublimity we must get Saatvik thought and action. The purity of the self must be played up at high and negations are fought by RAAM NAAM. ANANT Raam Naam Jaap fights with negations of life and even evil forces. I recall in Jhabua a Sadhak found a beautiful lady approaching him at night while he was passing through some lonely spot. He had nothing but his mala in his hand and started doing huge Ram Naam jaap and found the lady vanished. Thus Raam Naam can save us from evil designs of others. SUCH IS GLORY OF RAM NAAM.*

## रक्षा कवच राम नाम

श्री स्वामी जी महाराजश्री ने सभी साधकों को अपने कर्तव्य कर्म निभाने को कहा और कहा गृह कर्मों द्वारा भी राम नाम साधना सम्भव है । इस पर चिंतन करते हुए महर्षि स्वामी डॉ विश्वामित्र जी महाराजश्री ने हमें लोभ व और ज़्यादा की लालसा के लिए का त्याग करने को कहा । उन्होंने कहा कि अपनी इच्छाओं पर और तेल न डालिए क्योंकि जब एक पूर्ण होगी तो दूसरी जग जाएगी और इस क्रिया का अंत नहीं ।

यह सब समझते हुए मैंने देखा कि ज़्यादा भोजन खाने की असाधारण भूख, ज़्यादा पैसा, ज़्यादा पद प्रतिष्ठा, ज़्यादा अहम्, ज़्यादा कामुक लालसाएँ, ज़्यादा संबंध, ज़्यादा संसार में हस्तक्षेप, तथा उसका मानस पर दूषित प्रभाव होने से आध्यात्मिकता से विमुखता हो जाती है । उदात भाव प्राप्त करने के लिए हमें मन व कर्म से सात्विक होना आवश्यक है । स्वयं की पवित्रता का ऊँचा स्तर रखकर , राम नाम जीवन की नकारात्मकता व दुष्ट शक्तियों से लड़ता है ।

मुझे स्मरण हो रहा है कि झाबुआ में एक साधक ने अपनी ओर एक बहुत सुंदर स्त्री को आते देखा, जब वह किसी अज्ञात सुनसान स्थान से जा रहा था । उसके हाथ में माला के सिवाय कुछ न था और उसने बहुत मात्रा में राम नाम जप करना आरम्भ कर दिया और देखा कि स्त्री लुप्त हो गई । राम नाम हमें दूसरों के दुष्ट इरादों से बचा सकता है । ऐसी है राम नाम की महिमा ।

*****

*Ram naam ek daivik tarang hai jo shrishti key saar hai... Anant simran mey Sarvashaktiman Ram virajatey hain. Apney sharir namak Ramalaye key kapaat kholiye aur Ramamaye hokey rahiye. Raaaaaauuum.*

राम नाम एक दैविक तरंग है जो सृष्टि का सार है ... अनंत सिमरन में सर्वशक्तिमान राम विराजते हैं ।अपने शरीर नामक रामलय के कपाट खोलिए और राममय होकर रहिए । राममममममममम

*****

*Maa shakti hi beejakshar Raam hai.*

माँ शक्ति ही बीजाक्षर राम है ।

*****

*Param Guru Ram ko apney palko mey beethakey simran kariye ek maha chaitanya bhav ke abha ko dekh payengey apney antar maan mey. RAAAUUUM*

परम गुरू राम को अपने पल्कों में बिठाकर सिमरन करिए ... एक महा चैतन्य भाव की आभा को देख पाएँगे अपने अंतर्मन में । राममममममममम

*****

## *SHREE RAMAYE NAMAHA*

*SHREE THE agyya Chakra of Shrishti*
*Hear the whisper of Ram in your Pran Shakti*
*Raam is acoustic brilliance which is eternal jyot*
*Ensures a journey for mukti.*

*Raam is eternal bliss receive it with complete surrender*
*Ajapa jaap is entity of Ram. He lovingly chants His own naam.*
*Maa the cosmic Mother is Raaum as well.*
*Aantarman or innerself is Ramalaya. Guru created it.*
*Yield to wisdom of Swamiji maharaj which is begotten through divine transmission.*
*Allow yourself a float in constant rememberance of Raam.*
*Eternity gets connected with your manas such is Ram naam aradhana*

*Nature or Prakriti Purusha manifests with Ram Naad*
*Attain Ramamaye Salvation at the feet of Guru and Param Guru*
*Mantrik power of Raam is cosmic prayer for healing all*
*He is Sarvashaktimaan and Param dayalu. Imbibe these attributes*
*At the LOTUS FEET OF RAAM MORTAL SOLUTION AND ETERNAL SALVATION RESTS. Realize HIM in youself be Ram and see Raam in all. Raaaaaaaum.*

***श्री रामाय नम:***

*श्री - सृष्टि का आज्ञा चक्र*

*अपनी प्राण शक्ति में  राम का धीमे से बोलना सुनिए*

*राम ध्वनि का तेज़ है जो एस दिव्य जोत है और मुक्ति का राह प्रशस्त करती है ।*

*राम दिव्य आनन्द है, उसे सम्पूर्ण समर्पण के साथ अपनाइए*

*अजपा जाप राम का गुण है । वे स्वयं ही अपना नाम उच्चारते हैं ।*

*माँ जो सनातन माता हैं, राम ही हैं ।*

*अन्तर्मन रामालय है।*

*वह गुरू की रचना है ।*

*स्वामी जी महाराजश्री के ज्ञान के आगे समर्पण कीजिएगा, क्योंकि वह दिव्य संचारण द्वारा प्राप्त किया जाता है ।*

*अपने आप को सतत राम सिमरन में तैरने की अनुमति दीजिएगा ।*

*दिव्यता आपके मानस के साथ संबंध स्थापित करती है, ऐसी राम नाम आराधना है ।*

*प्रकृति राम नाद से प्रकट होती है ।*

*राममय मुक्ति गुरू व परम गुरू के*

*चरणों में पाइएगा ।*

*राम की मांत्रिक शक्ति सब के आरोग्यता प्रदान करने की दिव्य प्रार्थना है ।*

*वे सर्वशक्तिमान परमेश्वर हैं व परम दयालु। उनके गुण अपनाइएगा ।*

*राम के श्री चरणों में नश्वर समाधान व अनश्वर मुक्ति रहती हैं । उन्हें अपने में अनुंभव कीजिए, स्वयं राम बनिए और सब में राम देखिए । राममममममममममम*

*****

*Dhwani Aradhana. Ram Naam Aradhana.*
*Categories of sound and manifestation of Naad aradhana in stages.*

*Life Force(PRAN)*
*Transitional Sound(Dhwani)*
*Primordial Sound(Naad)*
*Name of the lord at the center of Naad(Naad Brahma)*

*JOURNEY TO NAAD BRAHMA*

*Life force (pran) dwells at the center of Soul.*
*Ahat or Struck-- sound is created.*
*As pran acts on Mind and ignites fire in the naval*
*for the beginning of utterance or Vak*
*This becomes transitional sound or Dhwani*
*that encompasses Primordial Sound or Naad*
*that is Anahat or Unstruck sound.*
*Naad is also Mukti or salvation from worldly bondage.*
*The bindu of Naad is ESHTA RAM*
*that is Naad Brahma also.*

*Raaaauuuum Param Guru Raaaauuuuuuum*
*at thy feet for ever...*

*ध्वनि आराधना. राम नाम आराधना.*

*ध्वनि की श्रेणियाँ और नाद आराधना की विभिन्न स्तरों पर अभिव्यक्ति ।*

*जीवन शक्ति ( प्राण )*

*संक्रमणकालीन ध्वनि ( ध्वनि)*

*मौलिक ध्वनि ( नाद)*

*परमेश्वर का नाम नाद के मध्य में ( नाद ब्रह्म)*

*नाद ब्रह्म तक यात्रा*

*प्राण शक्ति आत्मा के मध्य में निवास करती है ।आहत.. ध्वनि की रचना होती है*

*जैसे प्राण मन में आता है और नाभि में अग्नि प्रज्वलित करके वाक् के उच्चारण का आरम्भ होता है ।*

*यह ध्वनि बनती है जो नाद को धर कर अनाहत् ध्वनि कहलाती है ।*

*नाद नश्वरता के बंधन से मुक्ति है ।*

*नाद का बिंदु ईष्ट राम हैं जो नाद ब्रह्म भी हैं ।*

*राममममममम परम गुरू राममममममम*

*सदा आपके श्री चरणों में.....*

*****

*When I see the flute of KRISHNA ... I hear the sound.*
*When I see Shree Adhistanji... I hear Raaaaauuum.*

*जब मैं कृष्ण की बाँसुरी देखता हूँ .... मुझे बाँसुरी सुनाई पड़ती है*

*जब मैं श्री अधिष्ठान जी देखता हूँ ...मुझे राममम सुनाई देते हैं*

*****

*Raaam Naaam DHWANI Snan...*
*Banaye Pavan maan aur mukta pran*
*Hey Raaaauuum avataran....*

*राम नाम ध्वनि स्नान...*

*बनाए पावन मन और मुक्त प्राण*

*हे राममममम अवतरण .....*

*****

*Vishesh ka shesh vinashkari hai ye maano*
*Ahankar ko tyago*
*Ram ko Pao*
*Shish jhukao*
*Prathana mey samao*
*Vishesh bunkey prarthana mat jatao*
*Raam key charandhuli mey apney ko pao*
*Shish jhukakey Raam bun jao*
*Sab mey Raam pa jao.*
*Param Guru Raaam Kripa karo kripa karo!*

*विशेष का शेष विनाशकारी है यह मानो*

*अहंकार को त्यागो*

*राम को पाओ*

*शीश झुकाओ*

*प्रार्थना में समाओ*

*विशेष बनकर प्रार्थना मत जताओ*

*राम की चरणधुलि में अपने को पाओ*

*शीश झुकाकर राम बन जाओ*

*सब में राम पा जाओ ।*

*परम गुरू राम कृपा करो कृपा करो!*

*******

*Ram Naam Shreshta dhwani puja hai.*
*Ram Naad Eshta hai. Ram Naam Path hai.*
*Raam Naad anant yagya sthal hai.*
*RAAAM NAAM SADHANA HAI .*
*RAM NAAAM SADHYA AND SADHAN HAI*
*RAM NAAM SADHAK KI AHUTI AUR MUKTI BHI.*
*RAAAAUUUUM.*

*राम नाम श्रेष्ठ ध्वनि पूजा है*

*राम नाद ईष्ट है ।*

*राम नाम पाठ है ।*

*राम नाद अनन्त यज्ञ स्थल है । राम नाम साधना है ।*

*राम नाम साध्य और साधन है ।*

*राम राम साधक की आहुति और मुक्ति भी ।*

*राम*

*******

*When someone says "you are doing grt job". I shudder with fear. I wonder whats the next acid test I have to encounter as Gods Test pattern continues in this ego boosters that comes from social grounds.*

*जब कोई कहता है " तुम बहुत अच्छा कर रहे हो" मैं बहुत भयभीत हो जाता हूँ । मैं विस्मय होकर सोचता हूँ कि कौन सा तेज़ाब रूपी ,देवों द्वारा रखे, परीक्षण का मुझे सामना करना होगा, इस अहम् के लिए, सामाजिक क्षेत्रों से इसे बड़त जो इतनी मिलती है ।*

***

*Aham ke hunkar ko tyagna hai*
*Maa ke charno mey khelna hai*
*Fir sey bachpan ke masumit ko pana hai*
*Ahankar ka visharjan hona hai.*

*अहम् के हुंकार को त्यागना है*

*माँ के चरणों में खेलना है*

*फिर से बचपन की मासूमियत को पाना है*

*अहंकार का विसर्जन होना है ।*

***

## *Even Anhat Naad HE Could hear.....*

*Shree Shree Swamiji Satyanandji Maharaj Shree could hear ANHAT NAAD Sound which cannot be comprehended by human ears. It's only few yogis who could reach the ultimate state of divinity. It is said very few ancient sages could hear the movement of celestial bodies and sa re ga ma was coined from there. Similarly in Shree AMRITVANI Swamiji Maharaj Shree mentioned about 'Anhat Taan' which is nothing but MUSIC OF THE SPHERE or sound of the planetary bodies and stars.*

*Such divine is our Sad Guru whom even Param Guru could not avoid and had to do avataran for Swamiji Maharajji's celestial diksha. Once In tens of thousand years such soul as Swamiji Maharajji takes avatar in this world. Being part of HIS family we need to aspire very high and do sadhana with deep bhava to be around the feet of Param Guru Ram. AAATMIK PRANAM SADGURU . RAAAAAAAAAAUUUUUUM at your feet for ever.*

## वे अनहत नाद भी सुन सकते थे ....

श्री श्री स्वामीजी सत्यानन्द जी महाराज श्री अनहत ध्वनि , जो मानवीय कर्णों से नहीं सुनी जा सकती , भी सुन सकते थे । यह कुछ ही योगियों द्वारा सम्भव है जो दिव्यता की पराकाष्ठा तक पहुँच सके । कहते हैं कि पुरातन काल के ऋषि ब्रह्माण्डीय पद्धार्थों की हलचल सुन सकते थे और सा, रे, ग , म की रचना भी वहींसे हुई । इसी तरह श्री स्वामी जी महाराजश्री ने श्री अमृतवाणी में ' अनहत तान' का उल्लेख किया है जो कि कुछ नहीं बल्कि संगीत का क्षेत्र है या तारों, नक्षत्रों व ग्रहों की ध्वनि ।

ऐसे दिव्य हैं हमारे सद्गुरू जिन्हें परम गुरू भी नहीं अनदेखा कर सकते थे और जिनके लिए उन्हें दिव्य दीक्षा प्रदान करने के लिए अवतरित होना पड़ा । दस सहस्त्रों वर्षों में ऐसी आत्मा इस संसार में अवतरित होती हैं । उनके परिवार के सदस्य होने पर हमें बहुत ऊँची महत्वकांक्षा रखनी चाहिए और बहुत गहन भाव से साधना करनी चाहिए ताकि हम परम गुरू राम के श्री चरणों के निकट रहें । आत्मिक प्रणाम सद्गुरू ।

सदा 'राम' के श्री चरणों में ।

****

*Mantrik Raaaum is naad bhakti, prem swarup, nirakar and saguna Raam--- the Supreme. If you realize this you are on the path of Ramamaye Chaitanya bhava. But have you surrendered yourself 100% with unbroken Shraddha and asstha? If not mend and start now for this celestial bhakti marga. RAAAUUUUM*

मांत्रिक राम- नाद भक्ति हैं, प्रेम स्वरूप हैं, निराकार व सगुण राम- सर्वशक्तिमान हैं । यदि आप यह अनुभव करते हैं तो आप राममय चैतन्य भाव के पथ पर हैं । पर क्या आपने १००% सम्पूर्ण समर्पण ,श्रद्धा व आस्था के साथ किया है? यदि नहीं तो सुधारिए और यह दिव्य भक्ति मार्ग पर अब आरूढ़ हो जाइए । "राम"

*****

*Mantrik Ram and social salutation of Raam naam must be distinguished.*

*Mantrik Ram is Naad Bhakti Aradhana.*

*Samajik or Salutation --- Raam is in search semblance of sacredness of relations amongst mortals!*
*Please distinguish these two utterances.*

*मांत्रिक राम और सामाजिक अभिनंदन राम नाम में भिन्नता लानी आवश्यक है ।*

*मांत्रिक राम नाद भक्ति आराधना है ।*

*सामाजिक अभिनंदन -- राम तो संबंधों में पवित्रता की समान खोज में है !*

*कृपया इन दोनों उच्चारणों को भिन्न समझिएगा ।*

***

*World has always been unkind in various proximity yet the Universe has been so kind to accommodate me every time human kind threw me out. DIVINITY IS ONLY TRUTH AND HALF TRUTH IS MORTALITY WITH VARIOUS ILLUSIVE HUES. LOVE AND LIVE FOR COSMOS WHO'S WISH ARE YOU!*

संसार किसी न किसी रूप में सदा ही निर्दयी रहा है पर जब भी किसी मानव जाति ने मुझे बाहर फेंका ,ब्रह्माण्ड ने मुझ पर करुणा की और सदा मुझे सहारा दिया । दिव्यता ही परम सत्य है और आधा सत्य तो माया के विभिन्न रंगों में रंगी नश्वरता है । प्रेम कीजिए और ब्रह्माण्ड के लिए जी यो जिनकी इच्छा शक्ती आप हो!

***

*Power within and foresight with inner insight can change our perception. Divinity answers to all riddles provided we wish to know.*

भीतर का शक्ति व दूर्दर्शिता हमारी विचार धारा को बदल सकता है । दिव्यता हर रहस्यों के उतर देती है यदि हम जानना चाहें तो!

***

*GURU IS DEEP WITHIN ALWAYS EAGER TO ANSWER. But do you really believe this to get the answer.*

गुरू भीतर गहरे में सदा उतर देने के लिए उत्सुक होते हैं । पर उतर पाने के लिए क्या आप इस पर विश्वास करते हैं?

***

*Do you know what is RAM NAAM CHARNAMRIT?*

*It's Divya Drishti*
*Its Divya Prakash*
*Its Divya Prem*
*Its Divya Chaitanya*

क्या आप जानते हैं कि राम नाम चरणामृत क्या हैं ?

दिव्य दृष्टि

दिव्य प्रकाश

दिव्य प्रेम

दिव्य चैतन्य

***

Ram Naam Jaap hai Bhav Jyoti swarup.

राम नाम जाप है भाव ज्योति स्वरूप ।

*****

*Ram Naam chintan hai prakash maye chaitanya.*

राम नाम चिंतन है प्रकाशमय चैतन्य ।

***

*Raam Naam gurumukhi Dhun hai guru kripa wa mangal gaan sanchar.*

*राम नाम गुरूमुखी धुन है गुरू कृपा व मंगल गान संचार ।*

***

*Ram Naam Prakashmaye Divya Drishti paripurnarup mey Ram Kripa hai.*

*राम नाम प्रकाशमय दिव्य दृष्टि परिपूर्णरूप में राम कृपा है ।*

***

Ram Naam mey hi Param Guru Ram Virajwy. RAAAAUUUUUUUM

राम नाम में ही परम गुरू राम विराजे I राम

***

***RAAM NAAM IS ETERNAL ENERGY.***

*Its pure uttered and unuttered energy field is Pran Shakti. Constant Ram Naam simran is being in divine connect. It makes us sattwik. It purifies and cleanses our deeds. It rejuvenates our body and mind. It cures and heals. Realize the purest energy flows in Ram Naam where Param Guru and Gurujans ride. RAAAAAM NAAAAM MAHA-AUSHADHI. Be in divine energy connect 24x7 and be in Ramamye ANANDAA....*

## राम नाम शाश्वत शक्ति है

प्राण शक्ति पवित्र उच्चारण व न उच्चारण किया हुआ शक्ति क्षेत्र है I सतत राम नाम सिमरन से दिव्यता से युक्त रहते हैं I यह हमें सात्विक बना देती है I वह हमारे कृत्यों को पवित्र व शुद्ध कर देती है I वह हमारी देह व मन को जीर्णोद्धार कर देती है I वह आरोग्य व नीरोग्यता प्रदान करती है I यह पवित्र शक्ति राम नाम में बहती है जहाँ परम गुरू व गुरूजन आरोहण करते हैं I राम नाम महाऔषधी I 24x7 इस दिव्य संयोजक में रहिए और राममय आनन्द में ...

***

*Ram Naam Shakti Aradhana hai. Divya Vidyut tarangon mey Maa virajti hai. RaaaaaMaaaaaa*

राम नाम शक्ति आराधना है I दिव्य विद्युत तरंगों में माँ विराजित है I रामा

***

*Nishtha, Aastha, Shraddha, yog sab hi Raaam Naam mey pao.*

*Log kehtey hain shraddha aur astha sey Eshta miltey hain. Sant kehtey Hain Raam ko pao aur sab kuch anayas mil jata hai. Ram Naam hi siddhi hai aur Param Guru Ram Sadhana apney aap karatey hain. Paramdayalu hai mere Ram. Raaauuum.*

निष्ठा , आस्था , श्रद्धा , योग सब ही राम नाम में पाओ I

लोग कहते हैं श्रद्धा और आस्था से ईष्ट मिलते हैं । संत कहते हैं राम को पाओ और सब कुछ अनायास मिल जाता है । राम नाम ही सिद्धी है और परम गुरू राम साधना अपने आप करते हैं । राम

*****

## *Shree NAAD TIRTHA*

*Shree Ram Sharanam key RAM DARBAR Ek NAAD TIRTHA HAI. Kharbo jaap naam gaan yanha gunjti hai Mano Param Guru vayu key tarah a feiliee huey hain. Aap apney hessey ka jaap entna keejeye ki aney walei peedi is Raam naad sey naha paye aur sadhana safal ho jaye. RAAM NAAD KO PUJIYEY anant ko chun lijiye.*

## श्री नाद तीर्थ

श्री राम शरणम् का राम दरबार एक नाद तीर्थ है। ख़रबों जाप नाम गान यहाँ गूँजते हैं , मानो परम गुरू वायु की तरह फैले हुए हैं । आप अपने हिस्से का जाप इतना कीजिएगा कि आने वाली पीढीं इस राम नाद से नहा पाए और साधना सफल हो जाए । राम नाद को पूजिए अनंत को चुन लीजिए

*******

## *JYOTISWARUP RAAAM*

*Raaam Naam is eternal light that lights up inner intelligence as it emits in varied hues at the third eye when one meditates with half open eyes and the person floats in space and light scripts the new enlightenment with Raam jyoti. Raaaaum.*

## ज्योतिस्वरूप राम

राम नाम दिव्य प्रकाश है जो भीतर की समझ को प्रकाशित कर हर रंग में विस्तृत कर देता है जब वह अधमीची आँखों से तीसरे नेत्र पर ध्यान लगाता है और फिर अंतरिक्ष में तैरता है और वह प्रकाश राम ज्योति के संग नई समझ की रचना करता है । राम

*******

*Can you recall how Maharishi Swami Dr. Vishwa Mitterji used to set the tune of meditation by Raaaaaaaaaaaauuuuum dhun which in eternal reality of RAAAM JYOTI. Be in this RAAAUM DHUN to be with Ram and internalize Ramamaye Ananda. Ram Dhun is eternal fire with blazing*

*light without smoke. With pure love utter Raaaaaaaaaaaaaaaaaum and see how your Jyoti swarup Ram loves you. Param Guru Ram is most dayalu. Be in His love and love all. Raaaaaauuum*

क्या आपको स्मरण है कि महर्षि स्वामी डॉ विश्वामित्र जी ध्यान की बैठक कैसे राम धुन से लगाते, जो कि राम ज्योति का शाश्वत यथार्थ है । इसी राम धुन में राम संग रहिए और रामय का आनन्द भीतर लीजिए । राम धुन शाश्वत अग्नि है चमकते हुए प्रकाश के भाँति पर बिना धुएँ के । पूर्ण प्रेम सहित राम उच्चारिए और देखिए कैसे आपके ज्योति स्वरूप राम आपसे प्रेम करते हैं । परम गुरू राम परम दयालु हैं । उनके प्रेम में रहिए और सबसे प्रेम करिए ।राम

*****

## *GLORY OF RAM NAAM*

*As Explained by Maharishi Swami Dr Vishwa Mitterji Maharaj Shree*

*Discover India wanted Maharishi Swami Dr. Vishwa Mitter Maharaj Ji to be interviewed on Power of Mantra. I took permission to go to Manali. There I learnt about Glory of Ram Naam. He taught me Matrik power of Ram Naam has cosmic potential. He confided Ram Naam even give fruits to small tree and has great influence on vegetation. He subtly told that Ram Naam dhun allow plants to feel ecstasy. He taught with deepest shraddha and utmost vyakulta if one takes Ram Naam that can even alter the impacts of destiny. Glory of Ram Naam creates a shield for sadhaks who are at receiving end at mortal level. RAAM Naam is mystic at cosmic level but not enigmatic as Raam Naam has cosmic thread that manifests. Ram Naam has huge value for the child in the womb as you may know ear is the first thing that develops. Raam Naam can reduce the impact of our past karma. While telling his voice rolled and could hear varied frequency of ram naam utterance that gave me many inexplicable insight of Ram Naam at very higher level. Just I want to share with all of you that Ram Naam are so divine so powerful human mind can't comprehend its DIVINE element OF CORE of CORE came to us as unimaginable gift from our loving Shree Shree Swamiji Satyanandji Mhaharaj Shree was reiterated by Maharshi as "Anmol Ratan". Please remember this. This is the most costly possession you have. One miracle by Maharishi I am sharing as a case study. In a road accident I had head injury. MRI revealed brain paranchyima(SIC) with CSF fluid herniated from frontal sinus. Later that become cyst and Dr. advised not to operate as it is in higher function zone. 1995 to 2000 all MRI report reflected this. Suddenly in 2003 there was no cyst or tumour found in the MRI. It was not found ever thererafter. I can vouch it was power of Ram Naam tooled by Maharishi which could do this as no science would ever answer this. So Ram Naam is not power but Param Guru Ram can do anything in this world. SUCH IS GLORY OF RAM NAAM.*

## **राम नाम की महिमा**

महर्षि स्वामी डॉ विश्वामित्र जी महाराजश्री द्वारा समझाई गई ...

डिस्कवर इंडिया महर्षि की इंटरव्यू मंत्र की शक्ति पर लेना चाहते थे I मैं अनुमति प्राप्त करके मनाली गया I वहाँ मैंने राम नाम की महिमा सीखी I उन्होंने मुझे सिखाया कि राम नाम की मांत्रिक शक्ति में दिव्य संभावना है I उन्होंने मुझे गुप्त रूप से बताया कि राम नाम छोटे पेड़ों को भी फल देता है और कहा कि उसका वनस्पति पर गहरा प्रभाव है I उन्होंने सूक्ष्म रूप से बताया कि राम धुन पौधों को भी रोमांच प्रदान करती है I उन्होंने सिखाया कि यदि गहरी श्रद्धा और व्याकुलता से यदि कोई राम नाम लेता है तो वह भाग्य का भी रूपांतरण कर देता है I राम नाम की महिमा साधकों के आस पास एक कवच की रचना कर देती है जो , नश्वर स्तर पर कमज़ोर हैं I राम नाम शाश्वत स्तर पर रहस्यमय है पर पहेली नहीं क्योंकि राम नाम के पास दिव्य धागा है जो अभिव्यक्त करता है I राम नाम का गर्भ में पल रहे शिशु पर बहुत मूल्यवान प्रभाव होता है क्योंकि कान ही वह पहला अंग है जो निर्मित होता है I राम नाम हमारे पिछले कर्मों के संस्कार बदल सकता है I यह सब वर्णन करते हुए उनकी आवाज़ घूमी और मैं कितनी ही विभिन्न स्तर की राम नाम की तरंग सुन सका और जो मुझे राम नाम की अंतर्दृष्टि से एक बहुत ही ऊँचे स्तर पर ले गई I मैं केवल आप सभी से यह बाँटना चाहता था कि राम नाम इतना दिव्य है इतना शक्तिशाली है कि मानवी मन इसकी दिव्य सत्ता नहीं भाँप सकता जो हमें मूल से भी मूल रूप में एक अकल्पनीय उपहार परम प्यारे श्री श्री स्वामीजी सत्यानंद जी महाराजश्री द्वारा दिया गया जिसे महर्षि ने अनमोल रत्न कह कर दोहराया I कृपया स्मरण रहे कि यह सबसे बहुमूल्य रत्न आपके पास है I

इस मामले में ,अध्ययन स्वरूप, एक चमत्कार महर्षि द्वारा मैं आपसे बाँटूँगा I एक सड़क दुर्घटना में मेरे सिर पर गहरी चोट आई I MRI ने बताया कि दिमाग़ से कोई तरल पदार्थ बाहर बह गया है I जो कि बाद में एक फोड़ा / ट्यूमर बन गया I और डॉक्टरों ने ऑपरेशन करने से मना कर दिया क्योंकि वह बहुत नाज़ुक जगह पर था I1995-2000 तक MRI की रिपोर्ट यही दर्शाती रहीं I पर २००३ में एकाएक कोई ट्यूमर नहीं मिला I और उसके पश्चात भी कभी नहीं I मैं यक़ीनन कह सकता हूँ कि यह राम नाम की शक्ति व महर्षि द्वारा इसे हटा दिया गया क्योंकि कोई विज्ञान इसका उतर नहीं दे सकता था I सो राम नाम केवल शक्ति नहीं है पर इस जगत में परम गुरू राम कुछ भी संभव कर सकते हैं I ऐसी है राम नाम की महिमा I

*****

## ***RAM NAAM SADHANA***

*I recall the day of Diksha Maharsishi Swami Dr Vishwa Mitterji Maharajji showed me cosmos in true real sense as Krishna had shown to Arjuna. The process was amazing and out of world experience and it was my cleansing too. When I came back to my realized self, as alone I was being baptised on Purnima day, I found he was standing smiling before me with blissfull smile*

*and huge light and told me "Hold this sthiti forever, its bliss and Sadhana of your atman must continue all alone".*

*Today when I analyse I realize that Ram is the deepest of deep Shabda. With the spirit of Bhav Dharana the Manas Upasana progresses and mainfestive realizations dawn in this process of Sadhana. Again sadhana is for your individual soul not for society or even relations. RAM NAAM SADHANA is atman merging with Paramatma. Ram Naad within creates blast of light that is wisdom or bhav consciousness. Discipline, norms of life and your behaviour outside initiates the journey within.*

*Maharishi told me while I was doing research on jhabua..."Ram Naam when internalized it stop aberrations like drinking or non vegetarianism as no body was asked to stop it stopped automatically such is glory of Ram."*

*It's Ram Naam Sadhana that mends human follies and elevates individual soul. Another point Maharishi always stated that respect girls and daughter-in-law and they should never be subject to any insult. If that happens whole sadhana goes to waste. Again he said no daughter or daughter-in-law must disrespect pita and mata. For all sewa to Parents facilitates higher sadhana. Thus he clarified in Ram Naam Sadhana the cardinal principals are atma suddhi and karma suddhi.*

*Let Ram Naam Sadhana be life itself. Pure thought and disciplined action or karma allows Manifestation of Ram naam sadhana most powerful and quick. DISCOVER MAA IN RAAM then bliss becomes quicker towards begetting chaitanya Ramamaye bhava.*

*Raaam Naaam Sadhak can achive any goal. Such is loving Param Guru Ram*

## राम नाम साधना

मुझे अपने दीक्षा के दिन का स्मरण आ रहा है जब महर्षि स्वामी डॉ विश्वामित्र जी महाराजजी ने मुझे उसी तरह ब्रह्माण्ड के यथार्थ रूप में दर्शन करवाए जैसे कृष्ण ने अर्जुन को करवाए थे । वह प्रक्रिया बहुत ही अद्भुत और इस संसार के पार , बहुत ही अनूठी अनुभूति थी और मेरा पवित्रीकरण भी । जब मैं वापिस अपनी चेतन अवस्था में आया , मुझे अकेले ही पूर्णिमा के दिन दीक्षा मिली थी , मैंने देखा वे खड़े मुस्कुरा रहे थे अपनी दिव्य मुस्कान के संग और अनंत प्रकाश के साथ और वे बोले " यह आनन्दमय स्तिथि सदा बनाए रखना । अपने आत्मा की साधना अकेले ही जारी रखनी है । " आज जब मैं इसका अवलोकन करता हूँ तो अनुभव होता है कि राम सबसे गहरे से भी गहरा शब्द है । भाव धारणा के भावों से मानस उपासना प्रगतिशील होती है और साधना के इस प्रक्रिया में प्रबुद्ध अभिव्यक्तियों की भोर होती है । साधना आपकी व्यक्तिगत आत्मा के लिए है न कि समाज व संबंधों के लिए । राम नाम साधना में आत्मा का परमात्मा में विलीन होना है । राम नाद भीतर प्रकाश के विस्फोट की रचना करता है जो कि ज्ञान या भाव चेतना है ।

नियम, जीवन के असूल और बाहर आपका व्यवहार भीतर की यात्रा आरम्भ करते हैं । जब मैं झाबुआ पर अनुसंधान कर रहा था महर्षि ने मुझे बताया .... " राम नाम जब भीतर बस जाता है तो वह मदिरा पान, माँसाहारी होना , ऐसी ग़लतियों को स्वयमेव समाप्त कर देता है , ऐसी राम नाम की महिमा है । यह राम नाम साधना है जो मानवीय ग़लतियों को सुधारती है और व्यक्तिगत आत्मा का उत्थान करती है । एक और तथ्य पर महार्षी ने सदा बल दिया कि कन्याओं / युवतियों व बहुओं को आदर सम्मान देना चाहिए और उनका कभी अपमान नहीं करना चाहिए । यदि यह होता है तो सारी साधना व्यर्थ हो जाती है । और दूसरी ओर किसी पुत्री व बहु को माता पिता का अपमान नहीं करना चाहिए । माँ बाप के लिए की गई सेवा उच्च साधना के शिखर की ओर बढ़ाती है । उन्होंने पुष्टीकरण किया कि राम नाम साधना में प्रमुख सिद्धांत आत्मा शुद्धि व कर्म शुद्धि हैं । राम नाम साधना को अपना जीवन बनाइए । पवित्र विचार और नियमित कर्म से राम नाम साधना की अभिव्यक्ति बहुत ही शीघ्र व शक्तिशाली ढंग से होती है ।माँ को राम में ढूँढिये तब राममय चैतन्य भाव से आनन्द प्राप्त होना शीघ्र सम्भव हो जाता है । राम नाम साधक कोई भी लक्ष्य साध सकता है । ऐसे प्यारे हैं परम गुरू राम ।

*****

*RAAM NAAM Sadhana ek antarkaran ki yatra hai.*
*Satya, Sattwik, Samman, Sanjyog, Samarpan, Shraddha, Swadhaya, Sayyam ....ye sarrey path hain sadhna ki Saryu ko prapt karney key liye. RAM RAM*

राम नाम साधना एक अंतकरण की यात्रा है ।

सत्य, सात्विक, सम्मान , संयोग, समर्पण, श्रद्धा,स्वाध्याय, संयम ... ये सारे पथ हैं साधना के सर्यू को प्राप्त करने के लिए । राम राम

*****

*Yamraj ko dekh ke ek ensan ne martey hue kaha "Suno meri antishti unchey payedan main karna logo sey alag aur uncha." Yamraj ney kaha" ab to THAM JAO... ab to Shant hona hai aur VISHESH Banney ki ladai yanha tak hi thi agey tumhara iccha nahi karma le jayenge.. taiyaar ho na?"*

यमराज को देखकर एक इंसान ने मरते हूए कहा" सुनो मेरी अंतेष्टी ऊँचे पाएदान में करना लोगों से अलग, और ऊँचा " यमराज ने कहा " अब तो थम जाओ ... अब तो शांत होना है और विशेष बनने की लड़ाई यहाँ तक ही थी आगे तुम्हारी इच्छा नहीं, कर्म ले जाएँगे ... तैयार हो न ?" !!

*****

## *SATSANG WITH PARAM NAAD*

*Raam Naam and Sadhak together get the celestial Sannidhya or a close associationship. Here Param Guru Raam provides glimpses of Naad Chaitanya to sadhak. Be in bhava chaitanya whenever you take the name of Ram there Param Guru reciprocates with eternal love. Its a musical jugalbandi and Spiritual Sannidhya for higher and highest sadhana. Bolo Raaaaaaum Pao Raaam anant raaaauuùm*

## परम नाद के संग सत्संग

राम नाम और साधक को एक साथ दिव्य सानिध्य प्राप्त होता है । यहाँ परम गुरू राम नाद चैतन्य की झांकियाँ साधक को दिखाते हैं । जब भी आप राम नाम लेते हैं तब भाव चैतन्य में रहिए तब वहाँ परम गुरू दिव्य प्रेम के साथ प्रतिदान करते है । यह संगीतमय जुगलबंदी है और उच्च व उच्चतम साधना के लिए आध्यात्मिक सानिध्य । बोलो राम पाओ राम अनंत राम

*****

*Mind your thought power because that is Power of Mind.*

अपनी विचार शक्ति को देखिए क्योंकि वहीं मानस की शक्ति है ।

*****

*THOUGHTSCAPE IS LIKE LANDSCAPE. Think clear to have a perfect THOUGHTSCAPE*

विचार क्षेत्र भूमि क्षेत्र की तरह है । साफ़ सोचिए ताकि उतम विचारक्षेत्र पा सकें ।

*****

*Ram Naam Sadhana ek virat nischay aur nishta key pratik hai. Raam ka naam apney aap mey purna Maha-aushadhi hai aur hamarey bhitar baithi bhay, vyatha, shok, adharya evam adharma ko dur kar sakti hai ek baaar nishta purak naam----- Raaaaaaaaauuùm sey. Ram bolo Ram.*

*Nishtha Shraddha evam purna samarpan hamey Param Guru Ram Key charan mey le jati hai. Raaaaaaaauuum ko mukti mano.*

राम नाम साधना एक विराट निश्चय और निष्ठा की प्रतीक है । राम का नाम अपने आप में पूर्ण महाऔषधी है और हमारे भीतर बैठे भय, व्यथा , शोक , अधार्य एवं अधर्म को दूर कर सकती है .. एक बार निष्ठा पूर्वक नाम .... राम से।राम बोलो राम ।निष्ठा , श्रद्धा एवं पूर्ण समर्पण हमें परम गुरू के चरण में ले जाते हैं । राम को मुक्ति मानो

*****

*Raam Naam has the eternal Bindu of Ram naad that only manifests from the center with beejakshar Ram.*

राम नाम के पास राम नाद का शाश्वत बिंदु है जिसकी अभिव्यक्ति भीतर के केंद्र से बीजाक्षर राम द्वारा ही हो सकती है ।

***********

## *Param SATYA Hai RAM.*

*RAM hi Sadhan, Sadhana evam Siddhi hai.*

*Aiye Samarpan, Shraddha, Sayyam sey RAM ji ko payen*
*Aur janma mrityu sey Mukti rupi Siddhi ko prapt karey. Raaaum.*

## राम परम सत्य है

राम ही साधन, साधना एवं सिद्धी है ।

आइए समर्पण, श्रद्धा, संयम से राम जी को पाएँ ।

और जन्म मृत्यु से मुक्ति रूपी सिद्धी को प्राप्त करें । राम
*****

*RAAM NAAM Sadhana ek antarkaran ki yatra hai.*
*Satya, Sattwik, Samman, Sanjyog, Samarpan, Shraddha, Swadhaya, Sayyam ....ye sarrey path hain sadhna ki Saryu ko prapt karney key liye. RAM RAM*

*राम नाम साधना एक अंतकरण की यात्रा है ।*

*सत्य, सात्विक, सम्मान , संयोग, समर्पण, श्रद्धा,स्वाध्याय, संयम... ये सारे पथ हैं साधना के सर्यू को प्राप्त करने के लिए । राम राम*

*****

*O lord what I have is for you.*
*What I wished to possess that you owned them*
*I spread your love as I possess that much only*

हे प्रभु जो भी मेरा है वह सर्वस्व आपके लिए है ।

जो मैं अपने लिए संचय करना चाहता था वह सब आपश्री का है

मैं आपका प्रेम विस्तृत करता हूँ क्योंकि मेरे पास केवल वही अपना है ।

****

*Chirakritagya Hey Raaam the Supreme Jyotiswarup Nirakar Raaauuum. An embodiment of eternal love and manifestations all over cosmos*

चिरकृतज्ञ हे राम परम ज्योतिस्वरूप निराकार राम । आप दिव्य प्रेम व समस्त ब्रह्माण्ड की अनुभूतियों के अवतार हैं ।

*****

### *At your Feet O Param Gurudev, O Ram*

*Hey Param Guru*
*Hey My Raaaam*
*I am indebted to you forever*
*You Gave me Sadguru*
*Who only installed you, O' Ram in me*
*So selfless have been our Gurujans*
*every moment of their life and beyond life*
*Are dedicated to Param Satya Raam.*
*Such divine Gurujan accepted me as shihya*
*knowing very well I am ayogya and tiny fallen being.*
*such guru kripa we enjoy O' mere Raam.*
*O' Raam your name balm my heart*
*when world hurt me ...such compassionate you are.*

*When I utter your name Fear and Pain fade away.*
*When my body responds with your name*
*tamas in me dies instantly*
*such a bliss you are O' Ram.*
*your name had shown me Viraat rup*
*such was power of Maharishi*
*who uttered Raaaauyam as Shabda Brahman*
*yet maharishi said its all Sadguru's 'blessings.*
*Such is your Power O' my Raam*
*I worship you as eternal Shakti Devi Maa*
*keep us at your feet Hey My Raaaaum*
*make us worth shishya of our Divine Gurujans*
*Hey Raaaum.*
*Without you our life is incomplete O' my Raam*
*keep us nearer to your feet ever as dust particle*
*Hey My Raaaaaaaaaauuuum.*

## आपश्री के श्री चरणों में प्रणाम गुरूदेव, ओ राम

*हे परम गुरू*

*हे मेरे राम*

*मैं सदा के लिए आपश्री का ऋणी हूँ*

*कि आपश्री ने मुझे सद्गुरू दिए*

*जिन्होंने मेरे अंतकर्ण में*

*आपश्री को स्थापित किया, ओ राम !*

*इतने निष्काम हमारे गुरूजन रहे हैं*

*अपने जीवन के हर क्षण व उसके पार भी केवल परम सत्य राम पर समर्पित रहे ।*

*ऐसे दिव्य गुरूजनों ने मुझे अपना शिष्य स्वीकार किया*

*यह जानते हुए कि मैं अयोग्य व छोटा सा गिरा हुआ मनुष्य हूँ ।*

*ऐसी गुरू कृपा का हम आनन्द उठाते हैं ओ मेरे राम !*

*ओ राम ! जब संसार मुझे वेदना पहुँचाता है तो आपश्री का नाम मेरे हृदय पर बाम का कार्य करता है .... ऐसे करूणानिधान हैं आप !*

*जब मैं आपश्री का नाम उच्चारता हूँ तो भय व पीडा धुंधले हो जाते हैं ।*

*जब मेरी देह आपश्री के नाम पर प्रतिक्रिया करती है तब मुझ में तमस का नाश उसी समय हो जाता है*

*ऐसे आनन्दमय हैं आप ओ राम ।*

*आपश्री के नाम ने मुझे आपके विराट रूप के दर्शन करवाए*

*ऐसी शक्ति थी महर्षि में*

*जो राओऽम को शब्द ब्रहम के रूप में उच्चारते*

*पर फिर भी महर्षि कहते कि यह सब सदगुरू की कृपा ही है ।*

*ऐसी शक्ति है आपकी ओ मेरे राम*

*मैं आपको दिव्य शक्ति देवी माँ के रूप में पूजता हूँ*

*अपने श्री चरणों में रखिएगा हे मेरे राम*

*हमें अपने दिव्य गुरूजनों का योग्य शिष्य बनाइए*

*बिना आपजी के हमारा जीवन अधूरा है ओ मेरे राम*

*अपने श्री चरणों की धूलि बनाकर अत्यधिक निकट रखिए हे मेरे राम ।*

*****

***Sampurna Samarpan to RAM NAAM SIMRAN.***

*Self- Test : Are we Constantly remembering RAM NAAM? If my answer is 30 percent then I am yet to reach the state of SAMARPAN or surrender and for complete surrender I should at least score 80 per cent alongside I must discharge my worldly duties. The sweet remembrance of Raaaaauuuum makes everything happen to HIS Tune. Such is loving Raaaaaaaaauuuum Naaaaam.*

## राम नाम सिमरन पर सम्पूर्ण समर्पण

स्वयं की परीक्षा- क्या हम राम नाम का सतत स्मरण कर रहे हैं ? यदि मेरा उत्तर ३०% है तो मुझे अभी समर्पण के स्तर पर पहुँचना है और सम्पूर्ण समर्पण के लिए मेरा उतर कम से कम ८०% होना चाहिए अपनी सांसारिक कर्तव्यों को निभाने के साथ -साथ I राम का मधुर स्मरण , सबकुछ उसकी धुन के अनुसार करवाता है I ऐसा प्यारा है राम नाम I

*****

## *ŔAM KRIPA RE-UNDERSTOOD AS MANAS YOG*

*Ram Naam Manas Yog when reaches its Zenith one particular stithi or situation emerges which is called RAM KRIPA which sounds Anananda but in reality its NIRGUNA ANANANDA mean its neither sadness neither happiness nor light-less-ness nor darkness. Its twilight zone where cosmos moves chanting Raam and you are just a particle on float with celestial bodies. Thus Ram kripa is not fulfilment of life and its mortal wishes rather merging with supreme by reducing self as nothing not even dust. So complete surrendered state is Ram Kripa and its misnomer that Ram Kripa is mortal fulfilment. Raam the eternal light when realized then the self is lost for good. RAAAAÀÀUUÙUUUM.*

## राम कृपा को मानस योग के संदर्भ में समझना

राम नाम मानस योग जब अपनी चर्मसीमा तक पहुँचता है तब एक ख़ास स्तिथि उभरती है जिसे राम कृपा कहते हैं जो आनन्द जैसी सुनने में लगती है किन्तु यथार्थ में निर्गुण आनन्द होती है , मतलब न दुख न सुख न अंधकार न प्रकाशरहित स्तिथि I वह साँझ के भाँति जहाँ राम धुन गाते हुए ब्रह्माण्ड चलता है और आप ब्रह्माण्डीय वस्तुओं के साथ केवल एक बहते हुए कण के समान होते हैं Iअत: राम कृपा जीवन व उसकी नश्वर इच्छाओं को परिपूर्ण करना नहीं अपितु परमात्मा में स्वयं को धूलि का कण तक भी नहीं अपितु शून्य बनाकर विलीन होना है I सम्पूर्ण समर्पित अवस्था राम कृपा है और यह एक मिथ्यानाम है कि राम कृपा नश्वरता की पूर्ति है I दिव्य प्रकाश राम जब प्रबुद्ध होते हैं तब सदा के लिए स्वयं लुप्त हो जाता है I

"राम"

****

*As TIME walks by*
*I was wondering about this TIME MONK*
*walking along, talking alone*
*dating varied spaces on time*
*till the day it will not Tick... anymore*
*As emancipation is beyond Time and Space.*

*जै*
*से समय गुज़र रहा है*
*मैं इस "समय सन्यासी" के बारे में सोच रहा था*
*जो साथ चल रहा है, अकेले बातें कर रहा है*
*समय के विभिन्न क्षेत्रों से साक्षात्कार कर रहा है*
*तब तक जब तक वह और नहीं बजेगा...*
*क्योंकि मुक्ति समय व क्षेत्र के पार है ।*

*****

*Wonderer of Timelessness never preach any philosophy only it echoes about ONE GOD and that is Arupa and Nirguna attributes*

*समयातीत के विचारक कभी दर्शनशास्त्र का प्रचार नहीं करते , वे केवल एक परमेश्वर की प्रतिध्वनि करते हैं जो अरूप और निर्गुण है*

*****

*Gurutattwa is subtlest realization of cosmic consciousness.*

*Sukshamatama anubhuti hamey Raamamaye bhav key antarkaran mey le jati hai. Raaaaaauuuum*

गुरूतत्व दिव्य चेतना की सबसे सूक्ष्म अनुभूति है ।

सूक्ष्मात्मा अनुभूति हमें राममय भाव के अंतःकरण में ले जाती है । राम

*****

### *GURU KRIPA AND GURU ALALY*

Guru Kripa allows Bhav Aradhana that unveils Ramamaye Bhav Chaitanya. There fountains eternal love and Ramalaye or self body Temple becomes anant akaram premalaye. Here Guru resides (gurualay) in his sukshma Rup or in his subtle entity. Be in this RAMAMAYE BHAVA TO EXPERIENCE GURU TATTWA. Gurualay is in your Manas and your Manas is in the Entity of Param Guru Ram. Raaaaaaaauuuum

### गुरू कृपा और गुरूआलय

गुरू कृपा भाव आराधना को अनुमति देती है ताकि वह राममय भाव चैतन्य का अनावरण कर सके। वहाँ दिव्य प्रेम का फ़व्वारा प्रस्फुटित होता है और रामालय या स्वयं की देह रूपी मंदिर अनंत अकारण प्रेमालय बन जाता है। गुरूआलय में गुरू अपने सूक्ष्म रूप मे विराजमान होते हैं। इस राममय भाव में रहकर गुरू तत्व को अनुभव करिए। गुरूआलय आपके मानस में है और आपका मानस परम गुरू राम की सत्ता है। "राम"

*****

*Neeldhara key tarang aaj bhi beh rahe hain*
*Magar aap nahi nihar rahey hain*
*un ensani chakshuon sey*
*magar har tarang mey aap hi ka naman*
*vandana ho rahi hai*
*Mano Aap Brahmaand key neeldhara ban key behey rahey hain es prithvi lok mey*

*नीलधारा के तरंग आज भी बह रहे हैं*
*मगर आप नहीं निहार रहे हैं*
*उन इंसानी चक्षुओं से*
*मगर हर तरंग में आप ही की नमन वंदना हो रही है*
*मानो आप ब्रह्माण्ड के नीलधारा बन कर बह रहे हैं इस पृथ्वी लोक में*

***

*Anant bhakti or eternal love for Raam is facilitated by Gomukh called SadGuru and Guru Maharaj jan. Raam Naam agar Ganga hai to Gomukh Guru Shree hain.*

अनंत भक्ति या राम के लिए दिव्य प्रेम सदगुरू और गुरूजन जिन्हें गोमुख कहते हैं वहीं से सुगम बनाई जाती है । राम नाम अगर गंगा है तो गोमुख गुरूश्री हैं

*****

*Mirror God in You. So that you can mirror God in all.*

परमेश्वर को अपने में प्रतिबिम्बित करिए । ताकि आप सब में परमेश्वर प्रतिबिम्बित कर सकते हैं ।
*****

*Gurutattwa Eshwar tattwa mey virajti hai. GURU eshwar ke pratibimba hain*

*गुरूतत्व ईश्वर तत्व में विराजित हैं । गुरू ईश्वर के प्रतिबिंब हैं ।*

*****

## *AATMIKK PRANAM HEY SHAKTI MAHARISHI*

*O' Maharishi Swami Dr. Vishwa Mitterji Maharaj Shree*
*You are the flute of Cosmos*
*That created Ram Naam as a divine sound for all.*
*Ram Bol Ram Bol --your lips sung*
*still mesmerises all.*
*Such divine acoustic you taught.*
*You took us to the core of silence*
*where even silent naught of silence*
*Got silenced in Maun Sadhana.*
*You words of discourse*
*Are divine wisdom for we mortals*
*as God speaks through you, yes even now.*
*Your drishti was of Maa.*
*Your healing prayer shakes divinity.*
*Even today Hey Maharishi.*
*your spiritual cure was so subtle*
*that when you had body then even*
*you never knew you were possesed by Maa my Raaum... I told you that you recall.*

*You never lived a life of yours*
*you claim nothing as your sadhana and deed*
*as you said its all of Swamiji Maharaj Shree*
*such a divine soul you remain O' my Maharishi.*
*You are Gurutattwa since ever*
*but people realized you after Nirvana.*
*Today you attained Parinirvana*
*As you merged with Creator*
*Yet you chose to serve millions as Angel in the sky*
*Guardian of Spiritual space*
*Called Raaaaaaaaum.*
*Your Maa Shakti Aradhana*
*Your Raaaaaaaam chaitanya bhav vistar*
*Are working today in leaps and bounce*
*As a divine flute you sing in eternity*
*I cry no more for our friendship and nostalgia*
*But for Viraha of Divinity*
*That I knew you who you were but could not say*
*I only say today you are Embodiment of Shakti*
*AVATAR of Avatars.*
*Pranam my sakha.*
*i am still your friend and as possessive as ever*
*but am at your feet as ever and forever.*
*Please bless all the millions of sadhaks*
*who miss you ...may not come to Neeldhara*
*as all are placed in distant places*
*but all are doing Manas Puja. Bless all*
*O' my Gurudev*
*O' my loving Maharishi*
*my tears at your feet are charanamrit for me today*
*hey Lord.*

## ***आत्मिक प्रणाम हे शक्ति महर्षि***

*ओ महर्षि स्वामी डॉ विश्वामित्र जी महाराजश्री*

*आप इस ब्रह्माण्ड की बाँसुरी हैं*

*जिसने दिव्य ध्वनि सभी के लिए राम नाम की रचना की ।*

*राम बोल राम बोल -- आपश्री के अधरों ने गाया*

*जो आज भी सभी को मुग्ध कर देते हैं*

*ऐसी दिव्य ध्वनि आपश्री ने सिखाई ।*

*आपश्री हमें मौन के मूल में ले गए*

*जहाँ मौन साधना में मौन भी शांत हो गया ।*

*आपश्री के प्रवचनों के शब्द हम संसारियों के लिए दिव्य ज्ञान हैं*

*क्योंकि परमेश्वर आपश्री में से बोलते हैं,*

*जी हाँ आज भी ।*

*आपश्री की दृष्टि माँ की दृष्टि थी*

*आपश्री की आरोग्यता की प्रार्थना*

*परमात्मदेव को भी हिला देती*

*आज भी हे महर्षि !*

*आपश्री का आध्यात्मिक उपचार इतना सूक्ष्म था*

*कि जब आपश्री देह में थे*

*आपश्री स्वयं नहीं जानते थे कि आप माँ ,*

*मेरे राम के वश में हैं ...*

*मैंने आपश्री से कहा था आपश्री को स्मरण है ।*

*आपश्री ने कभी अपने लिए जीवन नहीं जीया*

*क्योंकि आपश्री ने साधना तक भी अपनी नहीं मानी*

*सदा यही कहा कि सर्वस्व स्वामीजी महाराजश्री का है ।*

*आपश्री सदा से ही गुरूतत्व थे*

*पर संसार को तो आपश्री के निर्वाण के पश्चात ज्ञात हुआ ।*

*आज आपश्री का परिनिर्वाण दिवस है*

*आप सृष्टिकर्ता में विलीन हो गए*

*पर फिर भी आपश्री ने करोड़ों की सेवा एक आकाश*

*आध्यात्मिक क्षेत्र जिसे राम कहते हैं,*

*उनके देवदूत बनकर रहने का चयन किया ।*

*आपश्री की माँ शक्ति आराधना*

*आपश्री का राम चैतन्य भाव विस्तार*

*आज दिन दूनी रात चौगुना कार्य कर रहे हैं*

*शाश्वत्ता में दिव्य बाँसुरी आपश्री बजाते हैं*

*मैं आपश्री की मित्रता व पुरानी यादों में अब नहीं रोता*

*पर केवल दिव्यता के विरह में ही रोता हूँ*

*मुझे ज्ञात था आपश्री कौन हो पर कह नहीं सकता था*

*आज मैं कह सकता हूँ आप शक्तिस्वरूपा अवतारों के अवतार हो ।*

*प्रणाम मेरे सखा ।*

*मैं आज भी आपश्री का मित्र हूँ और स्वमिगत भाव के अतिश्य संग*

*पर मैं आपश्री के श्री चरणों में सदा सदा के लिए हूँ*

*कृपा उन करोड़ों साधकों को आशीर्वाद दीजिए*

*जो आपश्री की कमि महसूस कर रहे हैं ... नीलधारा न आ सकें*

*क्योंकि वे दूर दूर स्थित हैं*

*पर सभी मानस पूजा कर रहे हैं ।*

*सब पर कृपा कीजिए*

*ओ मेरे गुरूदेव*

*मेरे प्यारे महर्षि*

*मेरे अश्रु आपश्री के श्री चरणों पर आज मेरे लिए चरणामृत हैं , हे प्रभु ।*

****

*Bhakta key Bhakti mey Guru Hain aur Guru key Garima mey Eshta Ram Hain. Aiye peerotey hai ek bhakti ki aisi mala janha Guru aur Param Guru Ram virajey mano teeno lokon ke sabsey kimti beekakshar(Ra Au M) sey baney hamari Ram ki mala. Guru charno mey hamesha...Ramansha. Raaaaaaaum*

भक्त की भक्ति में गुरू हैं और गुरू की गरिमा में इष्ट राम हैं I आइए पिरोते हैं एक भक्ति की ऐसी माला जहाँ गुरू और परम गुरू विराजें मानो तीनों लोकों के सबसे क़ीमती बीजाक्षर ( रा ओ म ) से बने हमारी राम की माला I गुरूचरणों में हमेशा ... रामांशा . "राम"

***

*Ram Naam Jaap Shrestha Guru Sewa hai. ADHIK SEY ADHIK JAAP KIJIYE TILL GURU PURNIMA. Life badlegi maan mey shanti ayegi aur pareshani parasth hogi. GURUTATTWA KEY SUKSHMA ANUBHUTI PRAPT HOGI. RAAAAAM HI RAAAAAAM*

*राम नाम जाप श्रेष्ठ गुरू सेवा है ।*

*अधिक से अधिक जाप कीजिएगा गुरू पूर्णिमा तक।*

*जीवन बदलेगा, मन में शांति आएगी और परेशानियाँ परास्त होंगी ।*
*गुरूतत्व की सूक्ष्म अनुभूति प्राप्त होगी ।*
*राम ही राम*

***

*Maa ko vandana kariye Raam ji ko bhi payengey. AISI HAI GURU KRIPA. RaaauuuMMaaa.*

माँ को वंदना करिए , राम जी को भी पाएँगे । ऐसी है गुरू कृपा । राओऽममां

*****

## *Raam Naam Anant SHAKTI KOSH*

*Pursuit of life is tiring and taxing most of the times. Materialism needs all kind of shakti or energy to combat the demands of life. Similarly Spiritualism requires huge power of mind body and inner convictions to assemble the self to encounter divinity. Shree Shree Swamiji Satyanandji Maharajshree gave us Tarak Mantra Ram. Its mantrik path and divine destiny. But it is also the Energy vault of unparallel kind. With Complete Nishta and Shraddha even a small number of jaap one is CHARGED UP. Ram naam is eternal vault of energy that is divine urja which can empower all and help all to do Ram Naam Sadhana and discharge duties of life. As Mobile, just charge up the self for safe and secure Eternal journey. RAAAAAAAUUUUM is Shakti Kosh. Keep this eternal gift of Swamiji Maharaj Shree with self then materialism and spiritualism will not be devoid of Strength Power Confidence and zeal. Such is Divine Raaaaum.... the cosmic power of tri loka. RAAAUUUM.*

## राम नाम अनंत शक्ति कोश

ज़िन्दगी की भाग दौड़ थका देती है और ज़्यादातर तनाव ही रहता है । भौतिकता हर तरह की शक्ति का उपयोग चाहती है जीवन की ज़रूरतों को पूर्ण करने के लिए ।इसी तरह दिव्यता का सामना करने के लिए आध्यात्मिकता को भी मन,शरीर व भीतरी धारणा ,अपनी आत्मा को एकत्रित करने के लिए अनंत शक्ति की ज़रूरत होती है । श्री श्री स्वामीजी सत्यानंद जी महाराजश्री ने हमें तारक मंत्र राम दिया है । वह मांत्रिक पथ व दिव्य नियति है । पर वह अद्भुत तरह का शक्ति कोषाघर भी है ।पूर्ण निष्ठा व श्रद्धा से थोडा सा भी किया हुआ जप हममें आवेग भर देता है । राम राम दिव्य शक्ति कोष है , एक दिव्य ऊर्जा जो सभी को सशक्त कर सकती है और सभी को राम नाम साधना करने की प्रेरणा तथा कर्तव्य कर्म निभाने की शक्ति देती है । राम शक्ति कोष हैं । स्वामी जी महाराजश्री के इस दिव्य उपहार को आत्मसात करके रखिए और तब भौतिकता व आध्यात्मिकता शक्ति, ऊर्जा व आत्मविश्वास से वंचित नहीं होए गीं । ऐसे हैं दिव्य राम .... त्रिलोक की दिव्य शक्ति ।"राम”

***

*Antarmukhi Maun... Hey my Raaaaaaaauuuum.*

अंतर्मुखी मौन... हे मेरे राम

*******

*Bhakti Mahasagar flows within in deep silence and outside is irrelevant. Such is antarmukhi mann and maun*

भक्ति महासागर भीतर गहरे मौन में बहता है और बाहर सब असंगत है । ऐसा है अंतर्मुखी मन और मौन ।

*****

*Anant antar maan mey maun kabhi shor hota hai. Es shor ko band karo Hey Maa. DEEP DIKHAO jo alukik hai aur jis aag ka dhuan nai hota aur swayam prajjawalit hoti hai Hey Jyoti swarup Raaam. Ananant maun....*

अनंत अंतर्मन में मौन का भी शोर होता है । इस शोर को भी बंद करो हे माँ । दीप दिखाओ जो आलौकिक है और जिस आग का धुँआ ही नहीं होता और स्वयं प्रज्ज्वलित होती है । हे ज्योति स्वरूप राम । अनंत मौन

***

*In Maun, in the deep silence, even beyond our mind and body entity the journey is fearsome silence through the tunnel of unknown. Here Raam jyoti is the charriot of light....*

मौन में, गहरे मौन में हमारे मन व देह के पार अज्ञात की सुरंग में से यात्रा भय से भरपूर है, । यहाँ राम की ज्योति प्रकाश की रथ बनती है ....

*******

*Since childhood most of us assign few minutes to God for puja or aradhana. As if we give appointment to Eshwar those few minutes only if the days going good but in bad days you want to be with Eshwar as being most flexible to get mercy from present situation. Again when good days return then again giving me few minutes starts till the time when bad days return. To mend the folly of civilizational fault Shree Swamiji Maharaj Shree gave us mantra of RAM for constant remembrance or Simran. You know what He asked from us....Jeevan ko aradhana banana hai! Stop! think! Have you really made the life as embodiment of puja or Aradhana or*

*we only give or say allot few minutes to Raam as if we are accommodating Him and not that on His lap we are accommodated and so we are having solace in life.*

*Aaieye chaley jeevan ko aradhana banaye Ram Naam simran sey sath kabhi na chutey. Hey Raaaauuum*

बचपन से ज़्यादातर हम कुछ समय परमेश्वर के आराधन के लिए रखते हैं । यदि दिन अच्छे चल रहे हैं तो हम प्रभु को केवल उन्हीं कुछ मिनट के लिए अपौंइनमैंट देते हैं पर बुरे दिनों में परमेश्वर के संग ही रहना चाहते हैं ताकि वर्तमान समस्या से उसकी क्षमा मिल सके । यदि फिर से अच्छे दिन वापिस लौटें तो वही कुछ समय देने का सिलसिला चल पडता है जब तक बुरे दिन लौट कर न आएँ ।

सभ्यता की इस गलती को सुधारने के लिए श्री स्वामीजी महाराजश्री ने हमें राम का मंत्र सतत सिमरन करने के लिए दिया । आप जानते हैं उन्होंने हमसे क्या कहा... जीवन को आराधना बनाना है! रुकिए! सोचिए ! क्या आपने यथार्थ में जीवन को पूजा या आराधना की मूर्ति बनाया है या हम राम को केवल कुछ समय निर्धारित करके जैसे कि हम उन्हे समयोजित कर रहे हों और न कि उनकी गोद में हम समयोजित हैं तथा जीवन की शांति प्राप्त कर रहे हैं ।

आइए चलिए जीवन को राम नाम सिमरन के साथ आराधना बनाएँ ... कभी न छूटे । हे राम

*****

*Asakti for Ram and Virakti for mortal world was the State of Shree Swamiji Maharaj Shree. Towing the thought I realize that Virakti for World was not hatred but diminishing the want and desire of the world and turning towards eternal love where nothing else matters as there no fear haunts and a state of Nothingness stays. Again void dominates which is a float by default for emancipation.*

राम से आसक्ति और संसार से विरक्ति की स्थिति श्री स्वामीजी महाराजश्री की थी । इस विचार पर मनन करते हुए मैंने अनुभव किया कि संसार से विरक्ति घृणा का भाव नहीं था किन्तु संसारी इच्छाओं व लालसाओं का थमना और दिव्य प्रेम की ओर अंतर्मुखी होना जहाँ कुछ और माएने नहीं रखता क्योंकि वहाँ कोई भय नहीं मँडराता और शून्यता की अवस्था रहती है । फिर से शून्य का आधिपत्थ्य रहता है जो कि मुक्ति के लिए नाव स्वरूप है ।

***

*Maha karunamayi Maa Paramdayalu Raaauum. . Eternal love is Eternal compassion which holds the key for the freedom from birth and death. Karuna of Sadhak provides the path to connect with the Karuna of Raaam Compassion for all without discrimination can fetch eternal compassion of Maa. Be always loving and karunamaye so that Raaamamaye Karuna showers over us. RAAAAAAUUUUUM HI KARUNA HAI RAM HI PARAMDAYALU..*

महा करुणामयी माँ परमदयालु राम ..दिव्य प्रेम दिव्य करुणा है जो जन्म और मरण से मुक्ति की कुंजी है । साधक की करुणा राम की करूणा से संयुक्त करने का पथ प्रशस्त करता है , सभी के लिए , निरपेक्ष भाव से माँ की करुणा प्राप्त कर सकता है । सदा प्रेममय रहिए और करुणामय ताकि राममय करुणा हम पर बरसे । राम ही करुणा है राम ही परमदयालु ..

***

*Our Mind not ear should be able to hear Ram Naam emitting from all kind of noise be that noise of auto oŕ washing machine or in blow of wind or from our own body, muscles or organs. All are singing Ram Naam. This is the reality Ram Naam Sadhak experiences in deep contemplative simran. Even Atman constantly hears ahat and anhat naad dhwani of Ram Naam. Whole cosmos do the Ram Naam aradhana and it is up to us when we realize this universal truth. Be in Ramamamaye bhava to explore and find raam in every movement everywhere. Eternal Raam naad is in the air breathe it RAAAAAAAÀAUUUM.*

हमारे मन को न कि कानों को राम नाम ,जो हर तरह के शोर से उत्सर्जक हो रहा है , चाहे वह औटो का शोर हो या वाशिंग मशीन का शोर हो या फिर हवा का या फिर हमारी माँस पेशियों का शोर हो , सुनना है । सभी राम नाम ही गा रहे हैं । यह यथार्थता एक राम नाम साधक गहरे मननशील सिमरन में अनुभव करता है । आत्मा भी सतत आहत् व अनहद राम नाम की ध्वनि सुनता है । समस्त ब्रह्माण्ड राम नाम की आराधना करता है और यह हम पर है निर्भर है कि हम यह सार्वभौमिक सत्य अनुभव करें । राममय भाव में रहकर समन्वेषण करें और राम को हर गमनागम में पाएँ । दिव्य राम नाद हवा में है ... उनका स्वाँस लीजिए राममममममम

****

## *I SEE RAAM YET I CAN'T SHOW YOU.*

*I am wonderer*
*I search my Ram*
*I find Him not in frozen frames*

*Neither in the North East Eastha Kon*
*I see Him in space above the head*
*On the sky scape*
*I find Him shinning in words*
*I see him quite often*
*vibrating in Space*
*And I feel thats Ram Durbar*
*Am still out of Ramalaye and*
*yet to enter ram durbar.*
*I can't show rainbows of Shree Ram Sharanam*
*Hundreds of Ram Durbar in Space called Sky*
*but I bow million times*
*to the script in space*
*Studded with Glittering Raam.*
*How can I tell you before my eyes its there*
*But I can't show*
*But sure Guru kripa allows the vision beyond*
*Hey my loving Ram.*
*You must be wondering I am MAD*
*Yes I am INSANE for my Sakha Raaauuum.*

## *मैं राम देखता हूँ पर दिखा नहीं सकता*

*मैं एक अवधूत हूँ*

*अपने राम को खोजता हूँ*

*मुझे वे जमे हुए फ़्रेम में नहीं मिलते*

*न ही उतर पूर्व दिशा में जहाँ ईष्ट*

*को रखकर पूजते हैं*

*मैं उन्हें सिर के ऊपरी भाग में देखता हूँ*

*आकाश के क्षेत्र में*

*चमचमाते हुए शब्दों में*

*कई बार मुझे दिखते हैं*

*और मुझे लगता है वही राम दरबार है*

*मैं अभी भी बाहर हूँ अंदर जाना बाकि है*

*मैं श्री रामशरणम् के इंद्रधनुष नहीं दिखा सकता*

*कितने ही राम दरबार आकाश क्षेत्र में*

*पर मैं करोड़ों बार नतमस्तक होता हूँ*

*अंतरिक्ष में लिखा हुआ चमकता हुआ राम*

*जैसे मैं बता सकता हूँ वे मेरी आँखों के समक्ष है*

*पर मैं दिखा नहीं सकता*

*पर गुरू कृपा अनंत की दृष्टि प्रदान करते हैं*

*हे मेरे प्यारे राम ।*

*आपको लगता होगा कि मैं पागल हूँ*

*जी हाँ अपने सखा राम के लिए मैं हूँ ।*

*******

## *GOD AND GURUJANS DO HAVE AROMA*

*Once I asked a very personal question to Maharishi Swami Dr. Vishwa Mitter ji Maharaj Shree "Have you visited me yesterday night?" He asked me what time. I told him the Time. He smiled. Then I said "I smelled your aroma and sensed your presence". He very affirmatively smiled, so since then I knew the scent of Divine people which is left with subtle entity. Maharishi did confirm that Divinity moves out of body and visits anyone. After parnirvana Gurujans do visit all anytime anywhere. Supreme Raam our Param Guru meets Sadhaks all the time through many shakshtakars. Shree Shree Swamiji Satyanandji Maharaj Shree' s days of divine encounter with*

*Ram may be treated as most blessed conjunction of Time and Space as Param Guru is talking to you in your inner voice such is Guru Kripa. We bow million times to Swamiji Maharaj Shree to attain salvation. At the feet of Param Guru Raaaauuuuum*

## परमेश्वर व गुरूजन की अपनी सुगंध होती है

एक बार मैंने महार्षी स्वामी डॉ विश्वामित्र जी महाराजश्री से एक बहुत निजी प्रश्न पूछा " क्या आप कल मुझसे रात्री में मिलने आए थे ? " उन्होंने पूछा किस समय? मैंने समय बताया। वे मुस्कुराए । तब मैंने कहा "मुझे आपकी सुगंध महसूस हुई और आपके होने की अनुभूति " उन्होंने बहुत स्वीकृति पूर्वक मुस्कान दी और तब से मुझे दिव्य लोगों की सुगंध का पता लगने लगा जो सुक्ष्म सत्ता द्वारा छोड़ी जाती है । महर्षि ने पुष्टीकरण किया कि दिव्यता देह के बाहर विचरती है और किसी को भी मिलने जा सकती है । परिनिर्वाण के पश्चात गुरूजन सबसे मिलने आते हैं कहीं भी और कभी भी । सर्वशक्तिमान राम हमारे परम गुरू साधकों को हर समय विभिन्न साक्षात्कार द्वारा मिलते हैं । श्री श्री स्वामीजी सत्यानंद जी महाराजश्री का राम साक्षात्कार का दिव्य मिलन का दिवस भी बहुत ही कृपामय समय व क्षेत्र का दिव्य संयोजक मानना चाहिए क्योंकि परम गुरू भीतर से आपकी अंतरात्मा की आवाज़ में आपसे वार्तालाप करते हैं , ऐसी है गुरू कृपा । हम करोड़ों बार उनके मोक्ष के लिए स्वामी जी महाराजश्री को नमन करते हैं । परम गुरू राम के श्री चरणों में

***

## *ENCOUNTERING DIVINE SIGNATURE OF RAAM.*

*Divine encounter happens in extraordinary situations. Be that in Bhava Maye sthiti where you tend to forget what you are or where you are. In half closed eyes with medicative intoxication of RAM NAAM ANTAR YAGYA we feel Him. In the nectar called Ram Chaitanya one sees RAM in Viraat rupa of Rammaye enlightenment. Chintan samadhi of Ram Naam allows one to hear the whisper of sublime. Intensive Ram Naam Simran invokes a self talk with Divine Supreme. Ram Naam allows the Churning of Eternal Amrit which visions the light infinite. Ram Naam Chitta Samadhi provides AKARAN PYAR or Eternal LOVE of Divine that can make you hear the sound beyond cosmos where dancing Nupur tinkles in some loka. Divine revelations occur when you are most unprepared which is subtle shock of divine. Its not illusion or just a maya but divine revelations are definitive knowledge of Supreme and demystify the sadhak's sadhana. RAM NAAM AVATARN HAPPENS WITH GURU KRIPA... Its bliss and most powerful solace that melts our questioning mind and quest of soul. We are all part of HIM and further knowledge comes to the fore as we engage Him deeper than our soul content with complete surrender to my RAAAAAAAUUUUUM*

# राम के दिव्य हस्ताक्षर से भेंट

दिव्यता का आकस्मिक आमना सामना असाधारण परिस्थितियों में होता है । उस भावमय स्थिति में जहाँ आप भूल जाते हैं कि आप क्या हैं व कहाँ हैं । अर्धमूंद नेत्रों से राम नाम अंतर यज्ञ की ध्यानस्त मस्ती में हम परमेश्वर को महसूस करते हैं । राम चैतन्य रूपी मधु में हम राम को राममय प्रबुद्धता के विराट रूप में दर्शन करते हैं । राम नाम की चिंतन सामाधि उदात के घीमे स्वर सुनने की अनुमति देती है । प्रखर रूप से किया राम नाम सिमरन सर्वशक्तिमान से स्वयमेव वार्ता को जागृत करता है ।

राम नाम दिव्य अमृत का आलोड़न करता है जिससे अनन्त प्रकाश दृष्टिगोचर होते हैं । राम नाम चित समाधि परमेश्वर का अकारण प्रेम अर्थात दिव्य प्रेम प्रदान करता है जिससे आप ब्रह्माण्ड के पार किसी लोक में नृत्य करते हुए नुपुर की झनकार सुन सकते हैं । दिव्य अनुभूतियाँ जो कि दिव्यता का सूक्ष्म आहात होती हैं तब आती हैं जब आप बिल्कुल तैयार नहीं होते । यह कोई माया का खेल नहीं अपितु दिव्य अनुभूतियाँ परमेश्वर का ज्ञान होता है जो साधक की साधना का रहस्य खोलता है । राम नाम अवतरण गुरू कृपा से ही सम्भव है ... वह आनन्दस्वरूप है और अतिशक्तिशाली शांति जो हमारे प्रश्नकर्ता मानस व आत्मा की खोज को पिघला डालता है । हम परमेश्वर के अंशी हैं और ज्ञान का प्रवाह सामने तब आता है जब हम परमेश्वर मेरे राम पर सम्पूर्ण समर्पण के साथ आत्मा से भी गहरी सत्ता में संबंध रखते हैं ।

***

*Hey Raaam give me back the purest innocence of my childhood days when you were too close to me. I recall at two and half year age I walked out of my house alone to next door ground to attend satsang at night. The saint gave me a sweet in my tiny hand at the end and with smile I used to come back. I still recall the bhajan (not words but the tune) which touched me yet I was too small. It was divine innocence when I lived in you. Bless me with that innocence Hey Maa... my maaa my Nirakar Raaauuum.*

हे राम कृपया मुझे मेरी बचपन की पावन सरलता लौटा दीजिए जब आप मेरे बहुत निकट थे । मुझे स्मरण है कि ढाई वर्ष की आयु में रात के समय मैं अपने आप ही घर से बाहर पड़ोसी के घर सत्संग सुनने चला गया । संत ने मेरे छोटे से हाथ में मिष्ठान देते और मधुर मुस्कान के साथ मैं वापिस आ जाता । मुझे भजन आज भी स्मरण है ( शब्द नहीं पर धुन) जो मुझे छू गए पर मैं बहुत छोटा था । वह दिव्य सरलता ही थी जब मैं तुम में ही रहता था । मुझे उसी सरलता का आशीर्वाद दीजिए हे माँ .... मेरी माँ मेरे निराकार राममममम

***

*I felt there is Aarti going in deep within where inner self is crying in vyakul vytha and viraha and addressing "Maaaaa aur nai raha jata maa mujhey darshan dey Maa." Suddenly I realize and was shaken and wonder how deep within such aarti takes place! Then I realize deep within Nirakar Dhwani swarup Ram was installed by Guru. It must be a Lila of Guru. Being a dust particle I am not able to comprehend. May be Raaam Aarti is happening in various layers of cosmos I just heard a few bits and saw few glimpses. Maaha Shakti Maa remains an enigma. Heey Raaaaaauuum anant pranam to you million times.*

मुझे ऐसे लगा कि गहन भीतर आरती चल रही है जहाँ आत्मा व्याकुल व्यथा और विरह में होकर पुकार रही है" माँ और नहीं रहा जाता माँ मुझे दर्शन दे माँ " अचानक मुझे अनुभव हुआ और मुझे झटका सा लगा और विस्मय होकर सोचा कि कितनी गहरी ऐसी आरती चल रही होगी ! तब मैंने विचार किया कि गहन भीतर गुरू ने निराकार ध्वनि स्वरूप राम को प्रतिष्ठित किया है । यह गुरू की ही कोई लीला होगी । एक धूलि का कण होने के कारण मैं समझ नहीं पा रहा। हो सकता है राम आरती ब्रह्माण्ड के विभिन्न स्तरों पर हो रही हो जिसकी मैंने कुछ अंश व कुछ झांकियाँ ही देखीं । महा शक्ति माँ एक रहस्य ही हैं । हे माँ अनंत प्रणाम आपश्री को करोड़ों बार।

***

*Maa Shakti is rupa dharini with fire and She expresses the Raudra Bhav. This fire of eternity blazes and celestial lights are spotted. It is JYOTISWARUP NIRAKAR SHABDIK DHWANI AKAR RAAAAAAUMaa.*

माँ शक्ति अग्नि के संग रूप धारिणी हैं और रूद्र भाव अभिव्यक्त करती हैं । यह दिव्य अग्नि भभकती है और दिव्य लपटें दृष्टिगोचर होती हैं । यह ज्योतिस्वरूप निराकार शाब्दिक ध्वनि अकार राममाँ हैं ।

***

*Param Shakti Dhaam Shree Raam.*
*Ram Naam is Greatest Tirtha of the Cosmos.*

*परम शक्ति धाम श्री राम । राम नाम ब्रह्माण्ड का सर्वोच्च तीर्थ है ।*

*****

*Ram Naam is eternal lamp that lights up the Consciousness or Chaitanya bhava. It is realization and enlightenment felt through inner vision. Its Jyoti swarup Ram or epitome of cosmic universal intelligence. Milky White with blue tinge cosmic light is Raaaaaauuuum.*

राम नाम दिव्य दीपक है जो चैतन्य भाव को प्रकाशित करता है। भीतर की दृष्टि द्वारा प्रबुद्धता व अनुभूति महसूस की जाती है। वे ज्योति स्वरूप राम हैं या ब्रह्माण्ड की सार्वजनिक बुद्धिमत्ता के सार। दूधी श्वेत नीले रंग का लौकिक प्रकाश राम हैं।

*******

***FOUR STEPS TO MERGE WITH RAAM***

*Doing Sansarik duty with sattvik karma.*

*Surrendering self and realizing Ram in Everyone.*

*Diminishing Want, Desire and Wishes of world.*

*Realizing Maa as Ram and act with humbles prayer and service to all creatures and life forms. This is realizing activated Ram in the self minus the self ego.*

## राम में विलीन होने के लिए चार क़दम

सांसारिक कर्तव्यों को सात्विक कर्मों से करना

स्वयं का समर्पण और सब में राम अनुभव करना

इच्छाओं, लालसाओं व संसार की कामनाओं का न्यून होना

माँ को राम अनुभव करना और हर जीव व प्राणी के प्रति विनम्र प्रार्थना व सेवा करना
स्वयं के अहंकार को शून्य करके ऐसे जागरुक होना मानो जैसे राम को अनुभव करना।

*****

## *FOUR SADHANA PADDHATI FOR RAM NAAM UPASANA*

*Self is Ram Mandir. Guru Shree has installed Ram in the self so keeping it clean, pure, Sattvik is the first step.*

*Your Manas is Ram Darbar realize its power through Maun Sadhana.*

*Your Ram Naam Jaap must benefit the cosmos. Being aligned with Ram Naam Chintan, Manthan and Jaap makes you one with Ram. It's no illusion.*

*Constant Ram Naam Manas Yagya and secret unselfish prayer for others fulfil your Ram Naam Upasana.*

## राम नाम उपासना के लिए चार साधना पद्धति

आपकी आत्मा राम मंदिर है । गुरूश्री ने राम आत्मा में स्थापित किए हैं । इसे साफ़, पवित्र एवं सात्विक रखना पहला चरण है ।

आपका मानस राम दरबार है । इसकी शक्ति मौन साधना से अनुभव कीजिए ।

आपका राम नाम जाप ब्रह्माण्ड के लिए लाभदायक होना चाहिए। राम नाम चिंतन, मंथन और जाप आपको राम से एक कर देता है ।यह कोई माया नहीं है ।

सतत राम नाम मानस यज्ञ है और दूसरों के लिए गुप्त निस्वार्थ प्रार्थना आपकी राम नाम उपासना को परिपूर्ण करती है ।

*****

## *FOUR STEPS TO RAM NAAM SADHANA EVAM SIDDHI*

*Tri Sandhya (three times in a day) Shree Amritvani Paath*

*Sawa crore ka jaap sankalpa*

*Bhakti Prakash evam Pravachan Piyush ka gahan adhayan*

*SARVA SHAKTI MATEY... KI Sawa Caror ka Mantrilk Siddhi Jaap*

## राम नाम साधना एवं सिद्धी के लिए चार क़दम

त्रीसंद्धया श्री अमृतवाणी पाठ

सवा करोड़ संकल्प

भक्ति प्रकाश एवं प्रवचन पीयूष का गहन अध्ययन

सर्वश्किितमते परमात्मने श्री रामाय नम:

का सवा करोड़ का मांत्रिक सिद्धि जाप

*****

## *FOUR STEPS TO REALIZE RAAM*

Guru Charan mey Ashray;
Guru vachan-- the ultimate divine words;
GURU adesh palan
Sukshama Gurutattwa mey atut vishwas

## राम को अनुभव करने के चार क़दम

गुरू चरणों में आश्रय
गुरू वचन- सर्वोच्य दिव्य वचन
गुरू आदेश पालन
सूक्ष्म गुरूतत्व में अटूट विश्वास

****

## *FOUR STEPS FOR RAM NAAM BHAV ARADHANA.*

*Ram Naam Jaap;*
*Anant Ram Naam Simran;*
*Chintan evam Swadhya of Swamiji Maharajjis words*
*RAM Bhav Dhyan va antarmuki aradhana.*

## *राम नाम भाव आराधना के लिए चार क़दम*

राम नाम जाप

अनंत राम नाम सिमरन

स्वामीजी महाराजश्री के वचनों का चिंतन

एवं स्वाध्याय

राम भाव ध्यान व अंतर्मुखी आराधना

*****

***FOUR STEPS FOR RAM CHAITANYA***

Shraddha;
Astha;
Atut Vishwas aur
Sampurna Samarpan to RAAAUUUUM NAAM.

**राम चैतन्य के लिए चार क़दम**

राम नाम के प्रति

श्रद्धा

आस्था

अटूट विश्वास और

सम्पूर्ण समर्पण

*****

*Shree Shree Swamiji Maharaj Shree taught us when Sadhak shuns lure and maya and reaches egoless state then Sublime Divine Supreme Ram is realized who is Eternal light of the Cosmos. Realize this subtle reality of Jyotirmay Shree Ram.*

श्री श्री स्वामीजी महाराजश्री ने हमें सिखाया है कि जब साधक माया व प्रलोभन को दुतकारता है और अहंकार रहित स्तर पर पहूँचता है तब उदात दिव्य परमेश्वर राम अनुभव होते हैं जो ब्रह्माण्ड के शाश्वत प्रकाश हैं। यह सूक्ष्म वास्तविकता ज्योतिर्मय श्री राम की अनुभव कीजिए।

*****

*Through Chitta Samadhi Ram is realized.*

राम की अनुभूति चित समाधि से होती है

*****

*Ultimate eternal wisdom called RAM is not learnt through words and philosophy of the mortal world rather it is realized by atman through the process of Bhakti, Upasana and Chetana Chaitaya Bhav. This is eternal and Nectarine path of Realizing Ram that promises eternal solace to soul as one manifest towards merging with Raaaauuum.*

सर्वोच्य शाश्वत ज्ञान जिन्हें राम कहते हैं वह शब्दों या संसार के दर्शनशास्त्र द्वारा नहीं जाने जाते अपितु आत्मा द्वारा की गई , भक्ति, उपासना और चेतना चैतन्य भाव द्वारा अनुभव किए जाते हैं। जैसे हमारी राम में विलीन होने की अभिव्यक्ति होती है यह दिव्य व मधुमय राम को अनुभव करने का पथ , आत्मा को शाश्वत शांति पहुँचाने का आश्वासन देता है।

*****

*Raam Naam when realized then all the deeds of life get washed off as purest bhava elevates the self with the dawn of Ram Chaitanya.. its truth of all truths as Raam is eternal lover as He absorbs all our negations and embraces us as HIS own. SUCH IS OUR LOVING RAM.*

जब राम नाम अनुभव होते हैं तब जीवन के सब कृत्य धुल जाते हैं क्योंकि पावन से पावन भाव राम चैतन्य की भोर से आत्मा का उत्थान करता है .. यह सत्यों का सत्य है क्योंकि राम शाश्वत प्रेमी हैं और वे हमारी सारी नकारात्मकता अन्वेषण कर लेते हैं और हमें अपना बना कर हृदय लगा लेते हैं। ऐसे प्यारे हैं हमारे राम।

*****

*The Shrishti or Creation which is leela of Ram has all the sources of Bhava. These bhavas are propelled by Eternal Love or Prem that expands chitta sadhana and then Ramamaye Chaitanya bhava dawns. Be in His love only, rest are illusive and diverting Maya.*

सृष्टि, राम की लीला है, जो सब भावों का स्रोत है । ये भाव दिव्य प्रेम द्वारा प्रेरित होते हैं जो चित साधना को विस्तृत करते हैं जिससे राममय चैतन्य भाव की भोर होती है । उसके प्रेम में रहिए बाकि सब मोह व बहकावे की माया है ।

*****

*SEEK Raam with pure Shraddha and Bhakti. Can't we do this much for salvation?*

राम को पावन श्रद्धा व भक्ति से पाइए । क्या हम मुक्ति के लिए इतना नहीं कर सकते हैं ?

*****

*We only see rain falling but we don't see rain water evaporating to become cloud again. Similarly Prayers are subtle and goes to sky to wish others good and well. We only see blessing or Kripa pours in.*

हमें वर्षा होती दिखती है पर हमें वर्षा का पानी भाप बनकर बादल बनता हुआ नहीं दिखता । इसी तरह प्रार्थनाएं सूक्ष्म होती हैं और आकाश में जाती हैं दूसरों को आशीर्वाद देने हेतु । हम केवल कृपा बरसती ही देख सकते हैं ।

*****

*Anant prem sey Ramji ko bandho.... yeh subh anurag hai.*

अनंत प्रेम से रामजी को बाँधो.... यह शुभ अनुराग है ।

*****

*Prabhu Ram*
*Paripurna naam*
*Ram Naam gun dham*

प्रभु राम

परिपूर्ण नाम

राम नाम गुण धाम

*****

*Divine Love*
*Never been easy for anyone.*
*Its like walking on sword*
*A slight detachment or bout of maya causes fall.*
*Thus for eternal love for Raaam*
*we must take refuge in Him in His Name*
*and seek the Divine Darshan of Raaam*
*Within the illuminated Ram Naam.*
*The constant remembrance*
*As if penance must be practised for Ram Naam Upasana*
*The sattvik life and truthful living*
*Patterns the mind for Naam Aradhana.*
*Mortal masks blows off*
*purity and innocence come to the fore...*
*Then divine intonation rules the life*
*And none suffer a fall as a space in His lap*
*becomes secured.*
*Worldly pain fades*
*as Love is seen everywhere.*
*Love is felt for everyone*
*without any selfish bhav.*
*This is Divya Prem for Raam Naam*
*that heals all, cures all,*
*Sadhak becomes siddhi*
*Such is glory of Ram Naam*
*Raaauuuummm.*

*दिव्य प्रेम*

*किसी के लिए भी आसान नहीं रहा।*

*तलवार की तेज़ धार पर चलने के समान*

*हल्कि सी आसक्ति या माया का झोंका पतन कर सकता है*

*इसलिए राम से दिव्य प्रेम के लिए*

*राम नाम के प्रकाश के मध्यस्त हमें राम के दिव्य दर्शन की प्रार्थना करनी चाहिए ।*

*सतत स्मरण*

*जैसे कि प्रायश्चित की भाँति राम नाम उपासना हेतु अभ्यास करना चाहिए*

*सात्विक व सत्य जीवन शैली*

*नाम आराधना के लिए प्रतिरूप बनते हैं*

*संसारी मुखौटे उतर जाते हैं*

*और पवित्रता और सरलता सामने आ जाती है*

*और किसी का पतन नहीं होता क्योंकि उसकी गोद में स्थान सुरक्षित हो जाता है*

*संसारी पीडा धुँधली हो जाती है*

*सबके लिए प्रेम ही महसूस होता है*

*बिना किसी स्वार्थ भाव के*

*यह दिव्य प्रेम है राम नाम के लिए*

*जो सब को आरोग्य करता है, नीरोग करता है*

*साधक सिद्धी बन जाता है*

*ऐसी महिमा है राम नाम की*

*राममममममममम*

*****

*In deep silence my mind was visualizing Raam in Manas. It was so melodious in silence as if encountering sublime naam. So graceful is His presence in space...waiting to be realized in Maun.*

गहरे मौन में मेरा मन राम की कल्पना कर रहा था । वह मौन में इतना मधुर था जैसे कि उदात नाम से भेंट हो रही हो । अंतरिक्ष में उनकी उपस्थिति इतनी सुंदर है.... मौन में अनुभव होने का इंतज़ार कर रहे हैं ।

*****

*BEEJ AKSHAR RAAM was taught by Shree Shree Swamiji Maharaj Shree. Discovering the Cosmic Tree in this divine Seed is the goal of Ram Naam Sadhak. Whole riddle of cosmos resides in it in an awakened state or in in Ramamaye Chaitanya. Bridging this consciousness with self is possible with Ram Naam Bhav Aradhana.*

श्री श्री स्वामीजी महाराजश्री द्वारा बीजाक्षर राम सिखाया गया था ।इस दिव्य बीज में यह ब्रह्माण्डीय वृक्ष की खोज ही राम नाम साधक का लक्ष्य है । ब्रह्माण्ड का सम्पूर्ण रहस्य इस में जागृत अवस्था में या राममय चैतन्य में विराजमान है । चेतनता को आत्मा से जोड़ना राम नाम भाव आराधना द्वारा ही सम्भव है ।

*****

*Eternity exist in Raaaam.*
*Raam carries eternal love*

दिव्यता का राम में अस्तित्व है ।

राम में दिव्य प्रेम है ।

*****

*Spirit of love for spiritual selflessness gets fanned by Raaaum. Ram bridges. Ram heals. Raam is Maa. Surrender your ego to loving Raauum.*

राम द्वारा आध्यात्मिक निस्वार्थ भावना प्रेम के भाव द्वारा प्राप्त होती है । राम जोड़ता है. राम आरोग्यता प्रदान करता है । राम माँ है । प्यारे राम को अपना अहंकार समर्पित करिए ।

*********

*Universal conflict starts with*
*MINE and THINE.*
*Conflict resolution is everything is HIS.*

*What we have brought what we are going to take*
*with us! So let go the concept Me Mine Thy Thine...*

सार्वभौमिक संघर्ष मैं और तेरे से आरम्भ होता है ।
संघर्ष का समाधान है कि सबकुछ ' तेरा' है ।
हम क्या लाए थे जो साथ लेकर जाएँगे ! इसलिए मैं मेरा तू तेरा की धारणा छोड़ देते हैं ...

*****

*I wish to be Possessive! But what can I possess even after my body perishes? I don't need anything or anyone but Him and His Name as a possession beyond my body. That is my Raaaaaaaaaaaaaaaaauuuuuuuum.*
*Let my Atman Possess Ram.*
*LET I BE POSSESSED BY RAAAAUUUM.*

मैं वशीभूत होना चाहता हूँ ! पर मेरा है ही क्या जब मेरा शरीर समाप्त हो जाएगा? मुझे कुछ नहीं चाहिए न ही कोई चाहिए, अपनी देह के पार केवल 'वह' और उसके नाम पर अधिकार चाहिए । मेरी आत्मा का अधिकार होवे राम पर ।
कृपया मैं राममममममम के वश में ही होवूं ।

*****

## *ONLY RAM NAAM CAN CONVERT VASANA INTO UPASANA*

*My wish list is long my wish tree is tall*
*Fuelled by unending desires.*
*Some I try to suppress*
*some other springs up.*
*some desires gets fulfilled*
*some sleeping desires gets awakened.*
*I toss around my ego and my karma*
*I suffer in this world of Maya.*
*Then I recall Maharishi*
*Swami Dr Vishwa Mitterji Maharajji who said*
*this world of desire has no Sukh or solace to offer*
*but each desires give illusive satisfaction*
*and pain and suffering for sure.*
*He declared Ram Naam the Maha Mantra*

*can surely convert Vasana into Upasana*
*And with Ram The desires get shrinked*
*as we become closer to our Supreme Ram.*
*Today as if am told Vasana can't be killed*
*so Vasana for RAM and only RAM*
*can surely convert Vasana into Upasana*
*and the celestial Master key is Raam Naam.*
*Raaaaàauuum*

## *केवल राम ही वासना को उपासना में रूपांतरित कर सकता है*

*मेरी इच्छाओं की सूची लम्बी है*
*मेरी इच्छाओं का वृक्ष लम्बा*
*कुछ मैं दबा देता हूँ*
*कुछ उभर आती हैं ।*
*कुछ इच्छाएँ पूर्ण हो जाती हैं*
*कुछ सुप्त इच्छाएँ जागृत हो जाती हैं ।*
*मैं अपने अहम् व कर्मों में धकेला जाता हूँ*
*मैं इस माया के संसार में तड़पता हूँ ।*
*तब मुझे महर्षि स्वामी विश्वामित्र जी महाराज जी स्मरण आते हैं*
*जिन्होंने कहा कि इस इच्छाओं के संसार*
*में कोई सुख या शांति नहीं है पर*
*हर इच्छा एक मायावी संतुष्टी देती है*
*और साथ ही पीडा व तड़प !*
*उन्होंने उद्घोषणा की कि राम नाम महा मंत्र द्वारा*
*वासना को उपासना में रूपांतरित किया जा सकता है*
*और राम द्वारा इच्छाएँ न्यून बनती जाती हैं*
*जैसे हम परमेश्वर राम के निकट जाते रहते हैं ।*
*यदि आज मुझे बताया जाए कि वासनाओं का अंत नहीं हो सकता*
*तो राम और केवल राम के लिए वासना उपासना में बदल देगा*
*और दिव्य मुख्य कुंजी है राम नाम ।*

*राममममममममममममम*

*****

## *RAM NAAM SADHANA...Triveni Marg*

*BHAV Bhakti Aradhana.(Bhakti Marga)*

*GYAN sadhana through swadhay of Guru Rachna and Vachan and pravachan(Jiana or Gyan marg)*

*JAAP/Simran Upasana( Naam sadhaks Karma Marg)*

## *राम नाम साधना.... त्रिवेणी मार्ग*

*भाव भक्ति आराधना ( भक्ति मार्ग)*

*ज्ञान साधना गुरू रचनाओं व वचनों और प्रवचनों का स्वाध्याय ( ज्ञान मार्ग)*

*जाप/ सिमरन उपासना ( नाम साधक का कर्म मार्ग )*

*****

*I Me Myself Mine are the words that prick all. We Ours Ourselves can bridge the 'I'*

मैं , मेरा , मुझे, यह शब्द सभी को चुभते हैं । हम हमारा हमसे "मैं" पर सेतु बाँध सकते हैं ।

*****

*Importance always tries to become important so life becomes conflict. Undermining the craving to become Vishesh do help our life with solaced living.*

विशेषता... सदा विशेष बने रहना चाहती है जिससे जीवन संघर्षपूर्ण बन जाता है । यदि विशेष बनने की चाह को नकारा जाए तो हम शांतिमय जीवन व्यतीत कर सकते हैं ।

***

*I recall once Maharishi Swami Dr. Vishwa Mitterji Maharaj Shree after coming from ekant vaas amidst deep nature he recalled even birds stopped its sound as sadhana progressed. Such was the Sadhana state where even nature did its penance of Sadhana with Maharaj Shree so I call him as our revered Maharishi.*

मुझे स्मरण हो रहा है कि एक बार महर्षि स्वामी डॉ विश्वामित्र जी महाराजश्री गहन प्रकृति के मध्य जब एकांत वास लगाकर वापिस आए तो उन्हें स्मरण हुआ कि जैसे उनकी साधना में प्रगति हुई पक्षियों तक ने आवाज़ करना बंद कर दिया । ऐसी उनकी साधना का स्थिति थी कि प्रकृति भी महाराजश्री के साथ तप कर रही थी । तभी मैं उन्हें पूज्य महर्षि कहता हूँ ।

*****

## *Raam Naam Inner Journey*

*Shree Shree Swamiji Maharaj Shree emphasized on ANTARMUKHI YATRA through Simran and Jaap. It's bhav aradhana of self by self to the self where Nirakar Ram resides deep within. The Bhav Bhakti is coated with sublime love for Eshta and journeys within to find the core of eternal love which is pure divinity. The dynamic antarmukhi yatra heals the mind removes guilt then at physical plane one may feel as if one is shivering, shakes like earthquake and trembling of limbs and spine even jerks with serpentine upward sensational movement up the spine happens. Outer world shrinks and noise becomes distant one. Breathing changes. Then the noise of even the unuttered thought shrinks as one reaches an inner space which is neither dark or lighted rather twilight zone there mind experiences a thought blast which silences the mind and Manas floats in thoughtless state yes real thoughtless state of Sunnya... this is perhaps the sanctum or ramalaye. Here from the journey starts as wisdom of eternity floats around and bliss of Raaam prevails and tranquil inner self is seen which has no reflections of outer. This Sunnya Raaam sthan is micro cosmos of self where Raaam Naad perhaps will become light. Such divine is antarmukhi yatra. Loving Raaauum brings you back from trance as well. RAAAAUUUM ANANT PRANAM. AT THY FEET HEY GURUJANS.*

## राम नाम अंतर्मुखी यात्रा

श्री श्री स्वामी महाराज श्री ने सिमरन और जाप द्वारा अंतरमुखी यात्रा पर बल दिया । यह स्वयं की , स्वयं द्वारा तथा स्वयं के लिए की गई भाव आराधना है जो गहन भीतर ले जाती है जहाँ निराकार राम विराजते हैं। भाव भक्ति ईष्ट के उदात प्रेम से ओत प्रोत होती है और दिव्य प्रेम के मूल स्रोत जो कि पावन दिव्यता है उसको खोजने के लिए अंतर की यात्रा करती है । गतिशील अंतरयात्रा मन को आरोग्य करती है , अपराध

भावना मिटाती है । भौतिक स्तर पर ऐसा महसूस हो सकता है कि शरीर में कंपन हो रहा है , जैसे भूकंप आ रहा हो , अंगों का काँपना और रीड की हड्डी का सर्प की भाँति झटकना और ऊर्दधगामी होना । बाहरी जगत छोटा हो जाता है और शोर बहुत दूर महसूस होता है , स्वाँस बदल जाते हैं । विचारों का भी शोर कम हो जाता है जैसे भीतर के क्षेत्र में पहुँचते हैं जहाँ न प्रकाश होता है न अंधकार केवल साँझ की भाँति , वहाँ मन विचार का विस्फोट अनुभव करता है जो मन को शांत कर देता है और मानस विचार शून्य स्तर , जो यथार्थ की विचार शून्य स्तर में तैरता है ... यही रामालय है शायद । यहाँ से यात्रा आरम्भ होती है जैसे दिव्यता का ज्ञान बहता है और राम का आनन्द स्थापित होता है और शांत आत्मा भीतर दिखता है जिसका कोई भी प्रतिबिम्ब बाहर नहीं होता । यह शून्य राम स्थान आत्मा का सूक्ष्म ब्रह्माण्ड स्थान है जहाँ राम नाद शायद प्रकाश बन जाएगा । ऐसी दिव्य है अंतरमुखी यात्रा ।प्यारे राम आपको समाधि से वापिस भी लाएँगे । राम अनंत प्रणाम । आपके श्री चरणों में गुरूजन ।

***

*Never try to put Supreme divine in human logic. We are still sub zero in the context of divinity. We are shallow yet we boast...*

परम दिव्यता को कभी मानवी तर्क में न उतारिए । हम शून्य से भी नीचे के स्तर पर है दिव्यता के सामने । हम ओच्छे हैं पर फिर भी घमण्ड करते हैं .....

*****

*Raaum the Eternal supreme is matter of very sober internal realization vexed on trust and faith and not definitely of human made logics and man-made arguments.*

सर्वशक्तिमान राम एक बहुत गहन आंतरिक अनुभूति है जो विश्वास और भरोसे पर आरूढ है न कि मानव के बनाए तर्क वितर्क पर !!

*****

*Ram Naam siraf ek Jaap ya simran nahi balki ye brhamand ki gati swarup hai. Ye pran spandan hain Sarvashaktiman Raam ji ka.*

राम नाम सिर्फ एक जाप या सिमरन नहीं बल्कि यह ब्रह्माण्ड का गति स्वरूप है l यह प्राण स्पंदन है , सर्वश्क्तिमान राम जी का !

*****

*When we are hurt that means Maya is being knocked down and Raam's Lila is closing in. ITS DIVINE LOVE OF RAM. Most spiritual and innocent person do suffer as Ram wants His favourites to turn the mind inside or start antarmukhi yatra as Swamiji Maharaj Shree taught us. With every pain illusion is shattered and we are all closer to Ram by a step. So never feel mortally defeated when dark hours visit us as this only means anytime spiritual consciousness will dawn. SUCH IS LILA OF RAAM. SUCH IS THE DIVINE LOVE OF RAM. JUST HAVE COMPLETE FAITH IN MY RAAUUM.*

जब हमें क्षति पहूँचती है उसका तात्पर्य है कि माया को नीचे गेरा गया है और राम की लीला निकट है l यह राम का दिव्य प्रेम है l बहूत से आध्यात्मिक और मासूम मनुष्यों को क्षति पहूँचती ही है क्योंकि राम अपने प्यारों को अपना मन भीतर करके या अंतर्मुखी यात्रा आरम्भ करवाते हैं जैसा स्वामीजी महाराजश्री ने सिखाया था l हर पीडा के साथ माया टूटती है और हम सब राम के एक क़दम और निकट होते हैं l इसलिए जब अंधकारमय समय हमें दस्तक देता है कभी भी संसारी भाव से अपने को पराजित नहीं समझना क्योंकि इसके पश्चात कभी भी आध्यात्मिक चेतना का भोर हो सकता है l राम की ऐसी लीला है और राम का ऐसा दिव्य प्रेम है l बस मेरे राम में सम्पूर्ण विशवास रखियेगा

****

*Life be in Shree Ramsharanam*
*In complete refuge of Raaaaam.*
*Mind be in Ram Durbar always and forever.*
*Trust Him fully He rules all the Time and Space*
*He only takes us through ups and down of life*
*He Rescues us from dark hours of time*
*Provided we know how to surrender to Raam completely*
*Be in His Naam till we breath last*
*His lighted chariot would transport us to salvation*
*Mujhey Bharosa Merey Raauum*
*Hey my Loving Raaaauuum keep me at thy feet forever.*

*जीवन श्री रामशरणम् में हो*
*राम पर सम्पूर्ण समर्पित ।*
*मन सदा और सदा के लिए राम दरबार में हो ।*
*पूर्ण रूप से परमेश्वर पर भरोसा कीजिए वे ही समय व क्षेत्र के शासक हैं*
*वे हमारी अंधकारमय समय में रक्षा करते हैं*
*यदि हमें राम पर सम्पूर्ण रूप से समर्पण करना आता है*
*उनके नाम में अपनी आख़िरी स्वाँस तक रहिए*
*उनका प्रकाशित रथ हमें मुक्ति के द्वार तक ले जाएगा*
*मुझे भरोसा मेरे राम*
*हे मेरे प्यारे राम कृपया मुझे अपने श्री चरणों में सदा रखिएगा ।*

*****

*Raam is felt and touched by bhakti unmad ram naam sadhak. If u are alone. Huge silence around lift your both hands in space as chaitanya maaha prabhu postured. Then float your hands in air as if you are touching your Raam. Anant ram naam bhav when sound within inner silence... the vibration of air are felt as your loving raaaum is just around you so close as your breathe. Be in these love state for Raaaum for ever. Even he dances on your quevering eye lashes. Such dynamic is the presence of Raam. Extreme bhakti for Raam is must for us. Sadhana and divinity are eternal consciousness beyond the comprehension of mind. Try to reach Him with atmik prem bhava. Guru Kripa can make it happen. RAAM BOLO RAAAM BOLO RAAAM.*

राम नाम भक्ति उन्माद के साधक द्वारा राम महसूस व छुए जाते हैं । यदि आप अकेले हैं । और पूर्ण मौन है आपके आस पास तो अपने देनों हाथ चैतन्य महाप्रभु की तरह ऊपर उठाइए । और अपने हाथ हवा में लहराइए जैसे कि आप राम को छू रहे हों ।अनंत राम भाव जब भीतर ध्वनि
गहन मौन में ... हवा की कंपन महसूस होती है क्योंकि आपके प्यारे राम आपके आस पास ही हैं .. इतने क़रीब जैसे आप साँस ले रहे हैं। राम के लिए इस प्रेममयी अवस्था में सदा रहिए । वे आपकी काँपती हूई पलकों पर भी नृत्य करते हैं । ऐसी गतिशील उपस्थिति है राम की । राम के लिए गहन भक्ति हमारे लिए अति आवश्यक है । साधना और दिव्यता शाश्वत चेतना हैं मन के चिंतन के भी पार । आत्मिक प्रेम भाव के संग उन तक पहुँचने की कोशिश कीजिए । गुरू कृपा यह सम्भव बना सकती है । राम बोलो राम बोलो रामम

****

*Humankind always keeps on thinking. Why, what, When, where, how...and gets nowhere near the truth as relativity of truth and illusion stays. Ram Bhav is chittaaradhana it does not get confused about its rupa, guna. Shree Shree Swamiji Maharaj Shree gave a clear concept of Nirakar jyotiswarup sarvashaktiman Raaam. Pure bhava chitta with chintan on Raam only and its divine attributes becomes so focussed as thinking takes the back seat and bhava of atma comes to the fore for Bhav Chaitanya. Thinking stops with sudden blast of silence at some stage of Naam sadhana and we reach the state of Sunnya where only atman negotiates with cosmic Raam tattwa. Raaam is bhav chaitanya not a matter of chintan or thinking. Chintan is limited to realize the loving attributes of Ram. Complete shraddha and 100 percent surrender to Raaam leads to this consciousness of cosmic kind. Raaaum only Raaauum*

मानव जाति सदा सोचती रहती है । क्यों, क्या, कब, कहाँ , कैसे.. और कहीं भी सत्य के निकट नहीं पहूँचती क्योंकि माया और सत्य की सापेक्षता रहती ही है । राम भाव चित आराधना है वह रूप, गुण में भ्रमित नहीं होती . श्री श्री स्वामी जी महाराजश्री ने निराकार ज्योतिस्वरूप सर्वशक्तिमान राम का बहुत साफ़ विचार दिया है । केवल राम पर चिंतन , पावन भाव चित के संग और उनके दिव्य गुणों के साथ इतना केंद्रित हो जाता है कि विचार पीछे हो जाते हैं और आत्म भाव , भाव चैतन्य के लिए सामने आ जाता है । साधना के किसी स्तर पर , मौन के अचानक विस्फोट से सोचना बंद हो जाता है और हम शून्य के स्तर पर पहूँचते हैं जहाँ केवल आत्मा दिव्य राम तत्व के साथ बात चीत करता है । राम भाव चैतन्य है न कि सोचने व विचार के तत्व । चिंतन केवल राम के प्यारे गुणों तक ही सीमित है । राम पर सम्पूर्ण श्रद्धा और १०० % समर्पण इस तरह की दिव्य चेतनता तक लेकर जाता है । राम केवल राम

*****

*Ram Naam sarey Brhamand ka pran spandan hai.. ye atmik siddhi ka lakshan hai. Raaam ko avataran honey dijiye tab aap shrishti ko samhj payengey.*

राम नाम सारे ब्रह्माण्ड का प्राण स्पंदन है.. यह आत्मिक सिद्धी का लक्ष्ण है । राम को अवतरण होने दीजिए तब आप सृष्टि को समझ पाएँगे ।

*****

*Mind Thinks. Emotion propels the thinking in a focussed manner. With deep essence of love for Raam only Raam we do simran jaap and chintan then we get into the process of Bhav*

*Chaitanya. Here an awakened Ramamaye bhava travels through deep maun or silence to the core. Again within layer of silence one reaches a zone of blast of silence...which we refer a space as the sacred most space of cosmos which is referred as Aum Shanti..this is the turning point where audible shrinks and inaudible or anhat is heard. Its sunnya chaitanya or thoughtless arena where sense organ cease to play a role. Beyond mind exist an energy field of cosmic intelligence where universal consciousness float or ram chaitanya pervades and that is experienced by the soul. Here vital force of Gurutattwa in its subtlest process blesses and one becomes ramamaye with divya drishti. This Chaitanya or consciousness is the siddhi of Ram Bhav Aradhana. Cosmic illumination and intelligence of enlightened light waits to embrace all......*

मन सोचता है । भाव विचारों को केंद्रित करता है । राम और केवल राम के साथ गहन प्रेम, हम सिमरन जाप और चिंतन करते हैं और तब हम भाव चैतन्य में प्रवेश करते हैं । यहाँ जागृत राममय भाव गहरे मौन से निकलता है । मौन की एक और तह से निकलकर हम मौन के विस्फोटक क्षेत्र में पहूँचते हैं .. जिसे हम ओम् शांति का क्षेत्र कहते हैं .. यह एक ऐसा मोड़ है जहाँ आहत सिकुड़ जाती है और अनहद सुनाई देती है । यह शून्य चैतन्य क्षेत्र जहाँ इंद्रियाँ कार्य करना बंद कर देती हैं । मन के पार दिव्य बुद्धिमत्ता की ऊर्जा क्षेत्र का अस्तित्व होता है जहाँ समिष्टी चेतना बहती है या राम चैतन्य रहते हैं और यह आत्मा द्वारा अनुभव किया जाता है । यहाँ गुरूतत्व की प्रबल शक्ति, सूक्ष्तम भाव में ,आशीर्वाद देती है और हम दिव्य दृष्टि के साथ राममय हो जाते हैं । यह चैतन्यता राम भाव आराधना की सिद्धी है । दिव्यता का प्रकाश व बुद्धिमत्ता का प्रबुद्ध प्रकाश सबको आलिंगन करने के लिए आतुर है।

****

*Raam Naam ek anant prem dhara hai jismey 84 karore yoni key yatra sey mukti ke prabha behti hai. Raaamayey ananda vishnu pada govardhan.*

राम नाम एक अनंत प्रेम धारा है जिसमें ८४ करोड़ योनि की यात्रा से मुक्ति की प्रभा बहती है ।
राममय आनन्द विष्णु पद गोवर्धन

*****

*In this moment of brahma muhurt I try to recall the voice of Maharishi. I realize in his deep voice there was unfathomable intonation of love for Raaaauuum. The utterance was sweetest. There was sure an echo of divine responsiveness when in trance he charged the sadhak mandali by uttering Ram Bol Ram Ram Bolo Ram....there all used to get glimpses of divine. His love for Raam Naam was so solid that each utterance of His name was clearly heard. This spashta uccharan or clear phonetic utterance converts Raam into mahamantra.*

*I also recall in his prayer for raam there was deep innocent emotion or vyakulata of a child as if praying to Maa. In his utterance I saw the echo of pain called Viraha for Raam. The dynamic intonation of voice modulation while uttering Ram, Maharishi Swami Dr. Vishwa Mitterji taught the lessons of Ram Naam chaitanya as I try to worship his too loving utterance of Love in the shabda RAAAUUUM.*

*Unkey raam dhwani mey mujhey vaikuntha dikhta hai aaj bhi. Hey Raaauum.*

ब्रह्म मुहूर्त के इस पल में मैं महर्षि की आवाज़ स्मरण करने की कोशिश कर रहा हूँ । मैं अनुभव कर रहा हूँ कि उनकी गहरी आवाज़ में राम के लिए अवरणनीय प्रेम भाव था । उच्चारण अति मधुरतम । अवश्य ही दिव्य प्राभव्यता की प्रतिध्वनि होती होगी जब समाधि में वे साधक मंडली को राम बोल राम राम बोलो राम ..से उत्तेजित करते और सभी को दिव्यता की झलकें मिलतीं । राम नाम के लिए उनका प्रेम इतना अटल था कि परमेश्वर के नाम का हर उच्चारण बहुत साफ़ सुनाई पडता था । यह स्पष्ट उच्चारण राम को महामंत्र में रूपांत्रित कर देता ।

मुझे यह भी स्मरण हो रहा है कि राम के लिए प्रार्थना करते समय उनमें गहरी सरलता का भाव या व्याकुलता होती जैसे कि वे माँ के लिए प्रार्थना कर रहे हों । उनके उच्चारण में मैंने पीडा की प्रतिध्वनि देखी जिसे हम राम के लिए विरह कहते हैं । जब वे राम उच्चारते, उच्चारण के गतिशील उताव चढ़ाव से डॉ विश्वामित्र जी ने राम नाम चैतन्य के पाठ पढ़ाए.. उनके अति प्यारे प्रेम के उच्चारण राम शब्द में मैं उपासना करने की कोशिश कर रहा हूँ ।

उनकी राम ध्वनि में मुझे आज भी वैकुण्ठ दिखता है। हे राम।

***

*Ram bolo, ram bolo, bhajo ram naam*
*Ram hi Maha Mantra, Raam hi Param Dham.*
*Ram Bhajo Ram Bhajo Raam key hi naam*
*Gao Raam, Japo Ram ,Simro Ram Naam*
*Prarthana hai Ram, jeevan hai Ram*
*Chitta chaitanya hai ram, mukti hai Raam Naam*
*Bolo ram, Bolo Ram, Bhajo Ram Naam*

*राम बोलो राम बोलो भजो राम राम*
*राम ही महा मंत्र , राम ही परम धाम*
*राम भजो राम भजो राम के ही नाम*
*गाओ राम , जपो राम, सिमरो राम नाम*

*प्रार्थना है राम, जीवन है राम*
*चित चैतन्य है राम, मुक्ति है राम*
*बोलो राम बोलो राम भजो राम नाम*

*******

*Ram Naam itself is Gitashree. Think you are Arjun and Krishna is Shree Shree Swamiji Satyanandji Maharaj Shree who is talking through Shree Amritvani. Because Shree Amritvani is divine gift of Param Guru Ram to Swamiji Maharaj Shree. All your-our questions are answered by Amritvani which is Gitashree for Ram Naam sadhak. Realizing this allows spiritual elevation be in the Wisdom of Amritvani while negotiating life because its divine text in context and content. RAAAAUUUM*

राम नाम स्वयं गीताश्री हैं । सोचिए कि आप अर्जुन हैं और कृष्ण श्री श्री स्वामीजी सत्यानंद जी महाराजश्री हैं, जो आपसे श्री अमृतवाणी द्वारा वार्तालाप कर रहे हैं । क्योंकि श्री अमृतवाणी परम गुरू राम द्वारा श्री स्वामीजी महाराजश्री को दिव्य उपहार के रूप में भेंट की गई । आपके सभी प्रश्नों का समाधान अमृतवाणी द्वारा किया गया है जो कि राम नाम साधक के लिए गीताश्री हैं ।यह अनुभव करना आध्यात्मिक उत्थान के अनुमति देता है । अमृतवाणी के ज्ञान में रहिए जब जीवन के जूझ रहे हों क्योंकि वह प्रसंग व सामग्री में दिव्य है । राममममम

*****

*Andhrrey mey sabsey jada roshni hoti hai siraf hamri buddhi use dekh ney nai deti. Atman ko roshni ka andaz hai jo hamarey maan ko nai hai.*

अंधेरे में सबसे ज़्यादा रौशनी होती है सिर्फ हमारी बुद्धि उसे देखने नहीं देती । आत्मा को रौशनी का अंदाज है जो हमारे मन को नहीं है ।

*****

*RAM NAAM aradhana aapko NISCHIT, SURAKSHIT, SAMARPIT banati hai aur aap--- Raam Param Guru Raam key charnomey apney ko patey hain. Koi bhi avastha aap ko vichalit nai karti. SUCH IS THE GLORY OF RAM NAAM.*

राम नाम आराधना आपको निश्चित, सुरक्षित, समर्पित बनाती है और आप -- राम परम गुरू राम के चरणों में अपने को पाते हैं । कोई भी अवस्था आपको विचलित नहीं करती । ऐसी है राम नाम की महिमा।

*****

*Ram is Maha Maya jagat janani. She cares and nurtures all. She pampers and enforce discipline. We are her child no matter how aged we become. She awaits a sincere call to run upto us at anytime. Raam is my My maa and I cry for her relentlessly. She rushes and held me hard such loving Maa is My Nirakar Naad Brhama Maa. She is Prakriti that only provides salvation. SO LOVING IS MY raaaaauMAA.*

राम जगत जननी महा माया हैं । वे ध्यान रखती हैं और सभी का पोषण करती हैं ।वे सबसे लाड़ करती हैं तथा अनुशासन में रखती हैं । हम उसके बच्चे हैं चाहे कितनी भी हमारी उम्र हो जाए । वे हमारी सच्ची पुकार का इंतज़ार करती है ताकि वह हम तक दौड़ कर आ सके । राम मेरी माँ है और मैं उसके लिए निरंतर रोता हूँ । वे दौड़कर आती हैं और मुझे ज़ोर से पकड़ लेती हैं , ऐसी प्यारी मेरी निराकार ब्रह्म माँ है । वे प्रकृति हैं जो केवल मुक्ति प्रदान करती हैं । ऐसा प्यारी मेरी राम माँ हैं ।

***

## *Awakening Ramamaye Consciousness*

*Rama bhava chaitanya gets awakened within as we isolate our Manas from mortal wishes and try to revisit the installation of iconless Raam in our micro cosmos i.e.body by our Guru on our diksha day. Sadguru Swamiji Maharaj Shree did that spiritual wonder. Remember that sublime acoustic that passed through us was divine voice Raaam. Try to go back in time line and hear the sound within... who knows you may cover the missing links created over the years and feel the awakening within as you rediscover the eshwar prem Raaaaaum. Ramamaye consciousness is not distant dream.Look He is waiting for us such is our loving Raaam BE IN CHAITANYA BHAVA WITH HALF CLOSED EYES AS OUR ATMAN RESOUNDS RAAAAUUUM.*

## राममय चेतना को जागृत करना

राम भाव चेतना हमारे भीतर तब जागृत होती है जब हम अपने मानस को संसारी इच्छाओं से पृथक करते है और फिर से अपने दीक्षा दिवस का संस्मरण करते हैं जब हमारे गुरू ने निराकार राम को हमारी देह जो कि सूक्ष्म ब्रह्माण्ड है उसमें स्थापित किया था । सद्गुरू स्वामीजी महाराजश्री ने यह अध्यात्मिक अद्भुत कार्य किया । स्मरण कीजिए वह दिव्य ध्वनि जो हम तक पहुँची थी .. वह राम की ही दिव्य ध्वनि थी । कोशिश

कीजिए कि उस दिन का स्मरण कर सकें और सुनिए वह ध्वनि भीतर ... क्या पता कि वर्षों से जो रिक्त कड़ियाँ हैं वे मिल जाएँ और वह जागृति आप भीतर महसूस करें जैसे जैसे आप ईश्वर प्रेम फिर से प्राप्त करते हैं । राममय चेतना कोई दूर का स्वप्न नहीं है । देखिए कि वे हमारा इंतज़ार कर रहे हैं । ऐसे हैं प्यारे राम । सामाधिस्त नेत्रों से चैतन्य भाव में रहिए जब हमारा आत्मा राममममममममम की प्रतिध्वनि करता है ।

*******

*Naadeshwar Raam antarikshmey jyoti bankey Atma ko gati deti hai aur janma mrityu sey mukti. Ram naam Param Guru ki kripa hai jo sharir mey naad aur atman mey jyotiswarup bunkey hamary apney andar samaletey hain, Aapar Guru Kripa hai Raaam naam*

नादेश्वर राम अंतरिक्ष में ज्योति बनकर आत्मा को गति देता है और जन्म मृत्यु से मुक्ति । राम नाम परम गुरू की कृपा है जो शरीर में नाद और आत्मा में ज्योतिस्वरूप बनकर हमें अपने अंदर समा लेते हैं , अपार गुरू कृपा है राम नाम ।

*******

*Raam naam mey anant prem haiy aur anant prem mey jag key liye prarthana hai aur har prarthana mey anand bhav hai janha Param Guru Ram birajtey hain. Ram Naam baikuntha hai chetnamay maan mey. Raaaaaum.*

राम नाम में अनंत प्रेम है और अनंत प्रेम में जग के लिए प्रार्थना है और हर प्रार्थना में आनन्द भाव है जहाँ परम गुरू विराजते है । राम नाम वैकुण्ठ है चैतन्यमय मन में । राममम

***

*Anant Ram Naam Chirantan prem bhava hamey Gurutattwa ki sannidya pradan karti hai. PARAM guru Raam anant prem hai aur es shristi key palak. Raam naam mey beelin hona hai ye hi laksha hai Ram naam sadhak key . Raam naam ek sampurna sadhana aur siddhi hai.*

अनन्त राम नाम चिरंतन प्रेम भाव हमें गुरूतत्व का सानिध्य प्रदान करता है । परम गुरू राम अनंत प्रेम है और इस सृष्टि के पालक । राम नाम में विलीन होना है यह ही लक्ष्य है राम नाम साधक का । राम नाम एक सम्पूर्ण साधना और सिद्धी है ।

******

*Please feel the eternal vibration of Gupta Navaratri now. RAAMAMAYE MAA IS MANIFESTING in SPACE OF ALL THE TIME LINE. Be in Bliss as you do anant Ram Naam Simran. Sacred Geometry is within your Manas.*

कृपया गुप्त नवरात्री की दिव्य कंपन को अब महसूस करिए। राममय माँ अंतरिक्ष में अभिव्यक्त हो रही हैं , हर समय रेखा में । आनन्द में रहिए अनंत राम नाम सिमरन करते। पावन रेखांगणित आपके मानस में ही है।

****

*Please feel the eternal Vibration of Gupta Navaratri virat ramamayw maa manifests now. Be in anant Ram Simran mode to be with one with Maa.*

कृपया गुप्त नवरात्री व्रत की दिव्य कंपन को महसूस करें जैसे राममय माँ अब अभिव्यक्त होंगी । अनंत राम सिमरन भाव में रहिए माँ से एक्य प्राप्त करने के लिए ।

*********

## *TOWARDS 24x7 RAM NAAM SIMRAN*

*Shree Shree Swamiji Satyanandji Maharaj Shree asked all Ram Naam Sadhak to do constant Simran of Ram Naam no matter whatever they are doing. But then why we suffer from Disconnect of Simran?*

*Lets relook at Simran. I ask myself three questions.Have you submitted to Guru vachan and agya completely. Have you realized in the Mahamantra Raam the cosmos resides. Have you completely surrendered everything to Ram.*

*These three questions are to be answered within. Now we move to next.*

*Constant Remembrance of Raam Naam must reach a state where we utter Ram Ram automatically as default. For this we need to delve deep into huge jaap mode and this empattern our mind with Raam Raam and then realize every part of our body is doing ajapa jaap of Raam Naam. Then all the sound we hear we also find Raam Naam echoing behind the sound be that mechanical or natural soundThis is also the state of Ajapa jaap samadhi.*

*Similarly whatever we do or think Ram Naam goes on in our Manas. Its like whatever professional personal deed you do it has one singular background canvas which is unending raam naam. Its like the background music of a song; a back drop of a stage event where we lecture or perform. An artist prepares the blank canvas before she or he starts doing the creative*

*strokes of colour. Similarly when we do constant ram naam then we prepare the canvas of our Manas. This Raam naam simran works as auto corrections and even works as pre-warning before we do any karma.Ram Naam Simran is possible 24 x7 provided we have completely surrendered to Raaam. Its innermost connect. Your heart beats on Ram Naam and your mind can do any thinking, your limbs can do any act. Similarly Raam Naam Simran goes on in our inner manas or back of mind as auto-function of atman in touch with Supreme Raauum. Simran of Ram Naam is samadhi in itself. Raaaamm remain connected within*

## *२४x७ राम नाम सिमरन की ओर*

श्री श्री स्वामीजी सत्यानन्द जी महाराज ने सभी राम नाम साधकों को सतत सिमरन करने को कहा , चाहे कुछ भी वह कर रहे हों । पर फिर भी हम सिमरन के टूटने के शिकार क्यों हो जाते हैं ?

आइए फिर से सिमरन को देखते हैं ? मैं अपने आप से तीन प्रश्न करता हूँ -

क्या तुमने गुरु आज्ञा और गुरु वचनों पर पूर्ण रूप से समर्पण किया है क्या तुमने यह अनुभव किया है कि राम नाम महामंत्र में सारा ब्रह्माण्ड विराजमान है ? ? क्या तुमने राम पर सम्पूर्ण समर्पण किया है? इन तीन प्रश्नों के उतर भीतर करने हैं । अब हम आगे बढ़ते हैं ।सतत राम नाम सिमरन ऐसे स्तर पर पहुँचना चाहिए जब हम स्वत ही राम राम लेते जा रहे हैं । इसके लिए हमें अनंत जाप करने की आवश्यकता है और यह हमारे मन को राम राम से ओत प्रोत कर देता है और तब हम यह अनुभव करते हैं कि हमारी देह का हर अंग राम नाम का अजपा जाप कर रहा है ।

तब हर ध्वनि से हमें ऐसे ही महसूस होता है कि राम नाम की ही प्रतिध्वनि हो रही है चाहे वह तकनीकि हो या प्राकृतिक । यह अजपा जाप समाधि का स्तर भी है । इसी तरह जो भी हम करें या सोचें राम नाम हमारे मानस में चलता है । यह ऐसे जैसे कोई व्यवसाइक कृत्य आप कर रहे हैं और उसका एक ही परिपोक्ष कैनवस हो जो है अंतहीन राम नाम ।यह ऐसे जैसे किसी गीत का परिप्रेक्ष्य संगीत ; स्टेज की भूमिका जब किसी ने प्रवचन या अभिनय करना होता है । एक कलाकार ख़ाली कैनवस पर क्रियात्मक रंग भरने से पहले उसे तैयार करता है । इसी तरह जब हम सतत राम नाम करते हैं तब हम अपने मन का कैनवस तैयार करते हैं । यह राम नाम सिमरन स्व सुधार का कार्य करता है और किसी कर्म करने ये पहले एक पूर्व चेतावनी की तरह कार्य भी करता है । सतत राम राम सिमरन 24x7 तब सम्भव है यदि हमने पूर्ण रूप से राम को समर्पित कर दिया है । यह सबसे भीतर का संयोजक है । आपका हृदय राम नाम जपता है और आपका मन कोई भी चिंतन कर सकता है , और आपके अंग कोई कार्य भी कर सकते हैं । इसी तरह राम नाम सिमरन हमारे

मानस या मन के पिछले भाग में आत्मा के स्वत:कार्य के भाँति परमेश्वर से जुड़ा हुआ चलता है। राम नाम का सिमरन अपने में एक समाधि ही है। राम भीतर ही जुड़े रहते हैं।

***

*When we talk too much we embrace Maya that makes us suffer.Keep few hours as NO TALK hour it will empower your Raam Naad aradhana. Raam Naam aradhana is maun yatra. Search Nirakar Jyotiswarup Ram in complete silence and beyond mortal maya, quest and wishes.*

जब हम बहुत बोलते हैं हम माया को आलिंगन कर लेते हैं जिसके कारण हम फिर भुगतते हैं। कुछ घण्टे रखिएगा ' बिना बात चीत के' वह आपकी राम नाम आराधना को सशक्त कर देगा। राम नाम आराधना मौन यात्रा है। निराकार ज्योतिस्वरूप राम को सम्पूर्ण मौन में तथा नश्वर माया व कामनाओं व प्रश्नों के पार खोजिए।

****

*Even relations with divine are to be earned. Shraddha, Samman evam Sannidhya sey sampark bunti hai.*

दिव्यता के साथ सम्बंध भी मेहनत से बनते हैं। श्रद्धा, सम्मान एवं सानिध्य से सम्पर्क बुन्ती है।

*****

*Samaskar mey aham nai sweekar karney ka kshamta hoti hai.*

संस्कार में अहम् नहीं स्वीकार करने की क्षमता होती है।

***

*Chintan Mey Ram basaye*
*Simran mey Raam Naam Rasaye*
*Dhyan mey Ramjyoti Jagaye*
*Jaap mey Raam Naad payen*
*Ram naam janma mrityu ka bhuk mitaye*
*Bhitar hi bhitar Ananant ka puja karwaye*
*Anat kaal mey Ram Dham Paye*
*Param Guru Raam mukti Dilaye*
*Har maan mey Raaaum key Diya Jalaye*
*Diva ratri Ram hi Ram Chaye.*

*चिंतन में राम बसाए*

*सिमरन में राम नाम रसाए*
*ध्यान में राम ज्योति जगाए*
*जाप में राम नाद पाए*
*राम नाम जन्म मृत्यु की भूख मिटाए*
*भीतर ही भीतर अनंत की पूजा करवाए*
*अंत काल में राम धाम पाए*
*परम गुरू राम मुक्ति दिलाए*
*हर मन में राम का दीया जलाए*
*दीवा रात्री राम ही राम छाए*

*******

*Ram Devalaye or Temple within you.*
*Raam is Eshta or Deity is within you.*
*Raam Naam Purohit or Sadhak in you.*
*Raam Naam Mahamantra you invoke by your jaap*
*Raam Naam Aradhana is done by you.*
*Raam naam Naad stuti rebounds in you.*
*Raam Naam prayer is your sadhana.*
*Ram naam prayer or bandana by you O sadhak.*
*Raam Naam sankalpa is your Shraddha O sadhak*
*Raam Naam arti O Sadhak by your Amritvani recitation*
*Ram Naam Pravachan piyush you recite O Sadhak*
*Ram Naam Ramayeni is your samagan Hey Sadhak*
*Raam gyan you read in Gita Shree O sadhak*
*Raam Naam Bhakti Prakash lights up your Sadhana*
*Param Guru Raaam Showers Guru Kripa on sadhak*
*SadGuru Shree Swamiji Satayandji Maharaj Shree*
*Param Gyani Param Pujya Shree Premji Maharaj Shree*
*Maharishi Swami Dr Vishwa Mitterji Maharaj Shree*
*All Ram's attributes resides in you as Guru Kripa*
*Shree Raaam Sharanam and Ram Durbar are in you*
*Such is Raaamamaye Bhava and Sadhana for*
*Ram Naam Sadhak.*

*Andar bhi Ram Bahar Bhi Ram*
*Tum ho Ram aur sab hai Raum*
*Sarvya vyspi Raaaaaaauuum anant Raaaauuum*

*राम देवालय या मंदिर आपके भीतर है*
*राम ईष्ट आपके भीतर हैं ।*
*राम नाम पुरोहित या साधक आपके भीतर है ।*
*राम नाम महामंत्र को आप अपने जाप से जागृत करते हैं ।*
*राम नाम आराधना आप द्वारा की जाती है।*
*राम नाम नाद स्तुति आप में गूँजती है ।*
*राम नाम प्रार्थना आपकी साधना है ।*
*ओ साधक राम नाम वंदना आप द्वारा की जाती है ।*
*ओ साधक राम नाम संकल्प आपकी श्रद्धा है ।*
*आपका अमृतवाणी का गाना राम नाम की आरती है ।*
*ओ साधक राम नाम प्रवचन पीयूष आप उच्चारते हैं ।*
*हे साधक राम नाम रामायण आपका समागण है ।*
*ओ साधक राम ज्ञान आप गीताश्री में पढ़ते हैं ।*
*राम वाम भक्ति प्रकाश आपकी साधना को प्रकाशित करता है ।*
*साधक पर परम गुरू राम कृपा बरसाते हैं ।*
*सद्गुरू श्री स्वामी जी सत्यानंद जी महाराजश्री*
*परम ज्ञानी परम पूज्य श्री प्रेम जी महाराजश्री*
*महर्षि स्वामी डॉ विश्वामित्र जी महाराजश्री*
*राम के सभी गुण आप में गुरू कृपा के रूप में विराजित है*
*श्री राम शरणम व राम दरबार आप में है*
*राम नाम साधक का ऐसा है राममय भाव और साधना*

*अंदर भी राम और बाहर भी राम*
*तुम हो राम और सब हैं राम*
*सर्वव्यापी राम अनंत राममम*
*******

*For sadhana Gyan, Dharma, Kaal and Karma remain Guru centric*

साधना के लिए ज्ञान, धर्म, काल और कर्म गुरू के केंद्रित रहते हैं ।

*****

*Raam Naam and Gurutattwa are two celestial content. Internalize them to energize Sadhana.*

राम नाम और गुरूतत्व २ दिव्य विषय हैं । साधना को सशक्त करने के लिए उनको अंतर्मुख कीजिए अपनी।

*****

*Guru kripa is Siddhi for Ram naam Sadhak. Because gurukripa showers when sadhak follows the directions of Guru. Guru Agya be your Agya chakra. RAAAAUM*

राम राम साधक के लिए गुरू कृपा सिद्धी है । गुरू कृपा बरसती है जब साधक गुरूजनों के निर्देश मानता है । गुरू आज्ञा को अपना आज्ञा चक्र बनाइए । राममममम

*****

*Highly intensive Raam Naam jaap of several lakh springs unity with universal mind yet it has its own challenges as Maaun Tunnel is scary. The loner in mortal cage meaning body gets in the Grip of void. Here being in Gurutattwa makes you grounded. PARAM GURU RAM AND GURUJANS STAND BY YOUR SADHANA. Such loving is your eshta.Raaam Naam is your eternal sakha and with His name overcome Viraha.*

लाखों का गहन व तीव्र जाप सार्वभौमिक मन से एक्य प्राप्त करवाता है पर इसकी अपनी चुनौतियाँ हैं । मौन का गलिआरा भयभीत कर देता है । देह शून्यता में ग्रस्त हो जाती है । पर यहाँ क्योंकि हम गुरूतत्व में होते हैं तो वह हमें सम्भाले रखती है ।परम गुरू राम और गुरूजन हमारे साथ साधना में सदा साथ होते हैं । ऐसे प्यारे हैं आपके ईष्ट । राम नाम आपके अनंत के सखा हैं और उसके नाम से विरह को पार किया जा सकता है ।

*****

*Float in Gurutattwa as HIS contemplation. Divinity then flowers within.*

गुरूतत्व में उनका चिंतन बन कर बहिए। दिव्यता भीतर प्रस्फुटित होगी ।

*****

*Ram Naam Sadhana is all about praying but asking nothing for self.*

राम नाम साधना पूर्ण रूप से प्रार्थनामयी है पर स्वयं के लिए कुछ नहीं माँगना

*****

*Be a PRAYER of Guru's Manas and do your service secretly.*

गुरू के मानस की प्रार्थना बन जाइए और अपनी सेवा गुप्त रूप से करिए ।

*****

*Param guru Raam is Maha Mantra; Param Guru is Upasak and Upasana. Ram is Sadhana and Siddhi. Ramamaye Guru is divine Gurutattwa which is realized with Chaitanya bhava. Guru in Raauum and Param Guru Ram in Guru such is the divine chemistry .Become conscious of this divine reality then Raam Naam sadhana will be on fast track.*

परम गुरू राम महामंत्र हैं ; परम गुरू ही उपासक व उपासना हैं । राम ही साधना व सिद्धी है । राममय गुरू दिव्य गुरूतत्व हैं जो चैत्नय भाव द्वारा अनुभव होते हैं । राम में गुरू व गुरू में परम गुरू राम .. ऐसा दिव्य रसायन है । इस दिव्य यथार्थ के प्रति सजग हो जाइए तब राम नाम साधना बहुत तेज़ गति से चलेगी ।

*****

*Antarmukhi hokey Ram Naam Japiye*
*Gurumukhi hokey Ram Dhyan kariye*
*Ram Naam sey Prabhu Ram ko paiyee.*

*अंतरमुखी होकर राम नाम जपिए*
*गुरूमुखी होकर राम ध्यान करिए*
*राम नाम से प्रभु राम को पाइए*

*****

## ***PARAM PUJYA PREMJI MAHARAJ SHREE***

*Hey Gurudev*
*You are the symbol of peace or Param Shanti.*
*As your name you are embodiment of eternal Prem*
*You cobbled all sadhak in your divine mala*
*Such graceful you remain.*

*You are the Karma of Saguna Raam*
*Yet you journey through anhat to Nirguna swarup.*
*Hey Gurudev you teach attachment to Raaam*
*Show the parh of mortal detachment*
*Yet you rescue all from mortal riddles of life*
*Such is your grace Hey Premji Maharaj Shree.*
*Whenever I see your face my mind turns to Maun*
*Such is your presence Hey Gurudev.*
*You reach out to all at dark hours of life*
*You are just a call away*
*So secured we are as we navigate through Raam Naam.*
*Hey Prabhu you are divine prayer*
*None of your wishes remain unattended*
*So divine is your prayer*
*Such loving and caring Gurudev you remain.*
*You provide mercy to Paapi*
*You pardon them for their deeds*
*And you Prabhu absorb their pain in your body*
*Now even in your mukta atman.*
*At your feet we cry and seek your blessings*
*Pardon us, pardon us*
*Kripa karo, kripa karo*
*So that each of us can become Sadhak as you dreamt*
*You are anant prem*
*Let all swim in your prem bhava*
*To get Raamatattwa.*
*At your feet ever*
*Hey Param Pujya Premji Maharaj Shree*
*Koti koti pranam*
*Raaaaauuum*

## ***परम पूज्य प्रेम जी महाराजश्री***

*हे गुरूदेव*

*आप परम शांति के प्रतीक हैं*

*अपने नाम स्वरूप आप दिव्य प्रेम के अवतार हैं*

*आपश्री ने हर साधक को अपनी दिव्य माला में पिरो लिया*

*ऐसे सुशोभित हैं आप ।*

*आप सगुण राम के कर्म हैं*

*पर फिर भी आप अनहद से निर्गुण स्वरूप तक यात्रा करते हैं*

*हे गुरूदेव आप राम से आसक्ति सिखाते हैं*

*संसारी अनासक्ति का मार्ग दिखाते हैं*

*पर फिर भी संसारी जीवन की पहेलियों से सभी की रक्षा करते हैं*

*ऐसे आपश्री की शोभा है हे प्रेम जी महाराजश्री ।*

*जब भी मैं आपश्री के चेहरे के दर्शन करता हूँ मेरा मन मौन में चला जाता है*

*ऐसी आपश्री की उपस्थिति है हे गुरूदेव!*

*आप सभी तक पहुँचते हैं उनके अंधकारमय समय में*

*आप केवल एक पुकार की ही दूरी पर हैं*

*हम कितने सुरक्षित हैं जैसे हम राम नाम में चलते हैं ।*

*हे प्रभु आप दिव्य प्रार्थना हैं*

*आपश्री की प्रार्थनाएं कभी भी अलभ्य नहीं हुई*

*ऐसी दिव्य आपश्री की प्रार्थनाएं हैं*

*ऐसे प्रिय व कृपालु गुरूदेव आप सदा हैं ।*

*आप पापियों को क्षमा प्रदान करते*

*और आप उनके कृत्य भी क्षमा करते*

*और प्रभु आज भी आप मुक्त आत्मा में उनकी पीड़ाएँ अपने में अवशोषित करते हैं ।*

*आपके श्री चरणों में हम रोते हैं और आपके आशीर्वाद की प्रार्थना करते हैं*

*कि क्षमा कीजिए, क्षमा कीजिए*

*कृपा कीजिए, कृपा कीजिए*

*ताकि हम ऐसे साधक बनें जैसे आपने स्वप्न देखें*

*आप अनन्त प्रेम हैं*

*कृपया सभी रामतत्व पाने के लिए*

*आपके प्रेम भाव में तैरें*

*हे परम पूज्य प्रेम जी महाराज श्री*

*कोटि कोटि प्रणाम*

*राममममममममम*

*****

*Nothing is mine, all HIS....happens when your RAM takes over your Manas and your surrender to HIM is complete. This is the first halt in Raam Naam Sadhana. The ego must shrink to extreme. Even claiming my love for Ram is sublime and incomparable at aradhana level is also huge Ego. Ahankar ko meetana naam aradhana ka pehla padao hai. Raaaum mey MAIY or I ko veelin hone dijiye.*

मेरा कुछ नहीं सब उसका है ... यह तब सम्भव होता है जब राम आपके मानस पर आधिपत्थ्य कर लेते हैं और आपका समर्पण उनके प्रति सम्पूर्ण है । यह राम नाम साधना में पहला पड़ाव है ।
अहम् का पूर्ण रूप से मिट जाना आवश्यक है । यह भी जताना कि मेरा प्रेम राम के लिए उदात है और आराधना के स्तर पर अद्भुत है बहुत बड़ा अहंकार है ।
अहंकार को मिटाना राम नाम आराधना का पहला पड़ाव है । राम में मैं को विलीन होने दीजिए ।

*******

*Spirit of Spiritualism is to be ONE with Supreme nirakar Raaaum. Think and Act as if Raaum is working within you then nothing can go wrong and none can be hurt by your words and deeds. BUT REMEMBER RAAUM DOES NOT LIKE ANY MANIPULATIVE MASK WE WEAR. If your real and pure innocence is at play then you are SURELY MERGING WITH PARAM PARMESHWAR. Drop your Masks and realize Raam within and no need to show the world your ramamaye chaitanya bhakti.*

परम निराकार राम से एकाकार होना आध्यात्म की भावना है । सोचिए और अपने कर्म ऐसे करिए कि राम आप के भीतर सब कार्य कर रहे हैं तब कुछ भी आपसे गलत नहीं हो सकता और कोई भी आपके शब्दों व कृत्यों से दुखी नहीं हो सकता। पर ध्यान रखिए कि राम को चालाकी के मुखौटे जो हम पहनते हैं वह पसंद नहीं। यदि आपमें यथार्थ व पवित्र सरलता है तब आप निश्चित ही परम परमेश्वर में विलीन हो रहे हैं। अपने मुखौटे उतारिए और राम को भीतर अनुभव कीजिए और दुनिया को अपनी राममय चैतन्य भक्ति दिखाने की कोई आवश्यकता नहीं है ।

*****

*Eternally as Akashvani Param Guru Ram Himself asked Swamiji Maharaj Shree "Ram Bhaj Ram Bhaj". It was celestial diksha on Guru Purnima and Shree Swamiji Maharaj Shree's antaratman was inked with divine Raam Naam. Ram naam itself is the divine key of this Naam Chaitanya or celestial consciousness. Resounding Raam Naan to deep eternal ajapa jaap are elements of dhwani yagya. Such is the divine gift of our Sadguru Shree Swamiji Maharaj Shree to millions of Ram Naam sadhak. Koti koti pramam to Param Guru and Gurujan on this most auspicious day of Gurupurnima. RAAAAAAAAAAAUUUUUUUMMMMAAA.*

शाश्वतता से जैसे आकाशवाणी परम गुरू राम ने स्वयं स्वामी जी महाराज श्री को " राम भज राम भज " कहा। यह गुरू पूर्णिमा पर दिव्य दीक्षा थी और श्री स्वामी जी महाराजश्री का अंतर्आत्मन दिव्य राम नाम के साथ जोड दिया गया था। राम नाम , नाम चैतण्य या दिव्य चेतना की दिव्य कुंजी है। ध्वनि यज्ञ के तत्व राम नाम की गूँज से लेकर गहरे दिव्य अजपा जाप हैं । अपने करोड़ों राम नाम साधकों के लिए हमारे श्री सद्गुरू स्वामीजी महाराजश्री का ऐसा दिव्य उपहार है। परम गुरू और गुरूजन को गुरूपूर्णिमा के इस अति माँगलिक दिवस पर कोटि कोटि प्रणाम।

****

*Shukshmatama gurutattwa is in Raam Stuti. Raam Naam itself a passage to have dialogue with gurutattwa. Such is the grace of Param Guru and Gurujans. Celebration of Gurutattwa during Guru purnima is most subtle within Hiranya Garbha or Golden Egg of Cosmos which is Naaad Brahmand and can be reached through RAAM NAAM STUTI. Be in bliss of anant Raaam naad.*

राम स्तुति में सूक्ष्म गुरूतत्व विराजमान है। गुरूतत्व से वार्तालाप करने के लिए राम नाम स्वयं एक मार्ग है। परम गुरू और गुरूजनों की ऐसी कृपा है। गुरू पूर्णिमा के दौरान गुरूतत्व का उत्सव ब्रह्माण्ड के हिरण्य गर्भ में जो कि नाद ब्रह्माण्ड का सबसे सूक्षम उत्सव है और यह राम नाम स्तुति द्वारा पहुँचा जा सकता है। अनन्त राम नाद में आनन्दित रहिए।

****

*On this Auspicious occasion of Guru Purnima Maharishi Swami Dr. Vishwa Mitterji Maharaj Shree declared that this mangalik day is not only an important punctuation of Relation with Guru but the adhyatmik relation with all. He meant a Sadhak must culture an atmik relation with all and build the spiritual relation beyond body or name and relations. He meant Father, Mother, wife/husband children are all relations and they are linked with body and duties. One should do duties but beyond it all are atman and one has to build atmik relations. Adhyatmik elevations come with development of non attachment. Whatever happens life must go on UNATTACHED and narrated a small story. A child was to born in a family a Lady Doctor was called and she intervened and facilitated a smooth birth of a child. Parents were very happy as they were blessed with a son after ten years. Child and mother was to stay for couple of days in nursing home. But after two days sadly the newborn baby expired. Worst grim shrouded all as it was most tragic and sad. Two days back they were celebrating the birth of boy and today alas all are sinking in sorrow. Lady Doctor came and told she tried her best but could not save the child. But now they meed to vacate the bed as some other patient would occupy this. Maharishi meant that the lady doctor did all her duties from the labour pain to delivery etc but she is UNATTACHED. This non attachment is important in spiritual relation. Adhyatmik person has karuna, love and compassion but not selectively rather these attributes are applied for all. Here atman and adhayatmik cruises with love for all unlike a non adhyatmik person will have love for selected few.*

*While stressing Adhayatmik relation and atmik culturing Maharishi reminded that one should not earn debt or become Rini. He said Swamiji Maharaj Shree was sensitive and never wanted to be indebted to anyone. In one of His sadhak's house Swamiji used to visit and had food. One day he said they don't think a sadhu comes and go away after food. And said whenever he would come he will give pravachan for atmik elevation .And he said he never wanted to be rini in life. Then Maharishi explained that this life we have got to pay off debt. One should be very cautious about this and all sadhak must exhaust ones karma and free from any debt so that one get mukti from life once for all. Adhayatmik unnati is the core of this auspicious day was declared by Maharishi as he asked all to do Naam Jaap Ram Naam Dhyan and taap. Raaaaaaauuum.*

*Lets all we submerge in Raaam Naaam and between each of us and with guru we must develop Adhyatmik Relation.*

गुरू पूर्णिमा के माँगलिक पर्व पर महर्षि स्वामी डॉ विश्वामित्र जी ने कहा कि यह माँगलिक दिवस केवल गुरू के साथ ही महत्वपूर्ण विराम नहीं है अपितु सभी के साथ अध्यात्मिक संबंध है । उनका तात्पर्य था कि एक साधक को आत्मिक संबंध सभी के साथ विकसित करना चाहिए और आत्मिक संबंध देह व नाम व संबंधों के पार बनाना चाहिए । मतलब कि पिता,माता, पति/पत्नि , बच्चे सभी संबंध देह व कर्मों के साथ हैं । हमें कर्तव्य निभाने चाहिए पर इनके पार तो सभी आत्मा ही हैं और हमें आत्मिक संबंध बनाने हैं । अध्यात्मिक उत्थान अनासक्ति से संभव होता है । जो भी जीवन में होता है हमें अनासक्त रहना चाहिए और उन्होंने एक लघु कथा सुनाई ।एक परिवार में एक शिशु का जन्म हुआ । महिला डॉ बुलाई गई और वे शिशु के जन्म में सहायक रहीं । माता पिता बहुत प्रसन्न थे कि उनके घर दस वर्ष पश्चात एक पुत्र का जन्म हुआ था । बच्चा व माँ कुछ देर नर्सिंग होम में रुके । पर दो दिन के बाद बच्चे की मृत्यु हो गई । सभी तरफ़ शोक सागर फैल गया । महिला डॉ आई और बोलीं कि उन्होंने अपनी पूरी कोशिश की पर बच्चे को न बचा सकीं । अब उन्हें वह जगह ख़ाली करनी होगी क्योंकि किसी और मरीज़ ने आना है । महर्षि का तात्पर्य था कि डॉ ने अपने सभी कर्तव्य निभाए शिशु के जन्म तक पर वह आसक्त नहीं है । यह अनासक्ति आध्यात्मिक संबंधों में आवश्यक है ।आध्यात्मिक इंसान के पास करुणा, प्रेम व दया है पर किसी ख़ास के लिए नहीं बल्कि सभी के लिए एक साथ यह गुण लागू होंगे । यहाँ आत्मा और अध्यात्मिक व्यक्ति से सभी के लिए प्रेम निस्सरता है ।

आध्यात्मिक संबंध व आत्मिकता पर बल देते हुए महर्षि ने स्मरण करवाया कि हमें ऋणि नहीं होना है । उन्होंने कहा कि स्वामीजी महाराजश्री बहुत संवेदनशील थे और किसी के प्रति ऋणि नहीं होना चाहते थे । किसी साधक के वे जब जाते और भोजन करके जाते थे । और जब भी वे आते थे वे आत्मिक उत्थान का प्रवचन देकर आते । और कहते कि वे जीवन में कभी किसी के प्रति ऋणि नहीं होना चाहते । तब महर्षि ने समझाया कि इस जीवन में हमें ऋण उतारना है । हमें इसके बारे में बहुत सजग रहना है और सभी कर्मों को चुका कर और हर ऋण से मुक्त होना है ताकि हमें इसी जन्म में मुक्ति मिल सके । आध्यात्मिक उन्नति इस माँगलिक दिवस का मूल है ऐसा महर्षि ने कहा और सभी को नाम जाप राम नाम ध्यान और तप करना चाहिए । राममममममम. चलिए हम सब राम नाम में डूब जाएँ और आपस में तथा गुरू के संग अध्यात्मिक संबंध बनाएँ ।

***************